वर्ष 26 | भादवा-आसोज | अक्टूबर-2021 | अंक 10 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन
आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
मूल्य 10/- रुपये
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

शाश्वत नवपद ओलीजी विशेषांक

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक
डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन
सम्पादकीय कार्यालय
डॉ.सुभाष जैन
46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com
इन्दौर कार्यालय
प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"
1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

कौन क्या देता है ?

✻ इतिहास चतुराई देता है। ✻ कविता मृदुता एवं वाणी-विदग्धाता देती है। ✻ गणित- सूक्ष्मता देती है। ✻ विज्ञान- गहनता देता है। ✻ नीतिशास्त्र- वीरता देता है। ✻ तर्कशास्त्र- वत्तुत्त्व देता है। (धर्म सब कुछ देता है।)

दिव्य आर्शीवाददाता
प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.
मार्गदर्शक एवं प्रेरक
प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन
अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

सरीहमाहु नाव त्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ।
संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरंति महेसिणो॥

शरीर को नाव कहा गया है और जीव को नाविका। यह संसार समुद्र है, जिसे महर्षिजन शरीररुपी नौका द्वारा तैर जाते हैं। **- उत्तरा. सूत्र, 23/73**

पाथेय

हे मधुर माँ तुम हमारे बीच उपस्थित हो, तुमने अपने सक्रिय सहयोग का हमें दिया आश्वासन। और अपने कार्य तंत्र के रुप में हमें कर लिया है स्वीकार। तुमने इस भौतिक जगत और उस परम आचिन्त्य के बीच सद्वस्तु हमें बनाया है अपना कार्यवाहक माध्यम, अपना यंत्र और इस सच्चाई का कराया है बोध, कि जो महान संकल्प शक्ति इस धरा पर होना चाहती है अभिव्यक्त वह परम कुशलता एवं सामन्जस्य के साथ हमारे द्वारा संसिद्ध करेगी अपना नियम। हे माँ ! प्रारंभ में जो अवस्थाएं प्रतीत होती थी अति दुस्तर, कठिन यहां तक असंभव, वे अब हो गई है सहज एवं सुसाध्य। क्योंकि तुम्हारी उपस्थिति यह दिलाती है विश्वास, कि यह जड़ भौतिक जगत् प्रभु के संकल्प को, नव नव रुपों मे संसिद्ध करने के लिए है कटिबद्ध और स्वयं को अधिकाधिक बना रहा है कुशल एवं तत्पर। हे माँ ! हम अपूर्व आनन्द भावना से तुमसे अभिन्न होकर, तुम्हारा करते है स्वागत, अभिनंदन एवं आराधन।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-26 भादवा-आसोज अक्टूबर 2021 अंक-10

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- आयंबिल तप : सर्व विघ्न नाशक -(सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन 5

4- धर्म की शरण ही सबसे उत्तम है- प.पू.साध्वी डॉ. सुभाषाजी म.सा. 6
चार शरणों का चार कषायों को टालने के लिये संदेश

5- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्री अरुणविजयजी म.सा., जिन्दगी 7-8
नयों की अपेक्षा से प्रभु दर्शन-पू.आ.श्री विजयकलापूर्ण सूरीजी म.

6- जब महामंत्र रक्षक बनता है, सर्व विपत्ति हर जिन नाम मंत्र 9-11

7- जैनों का मोनोपाली तपोत्सव : नवपद ओली आराधना 12

8- मैं इलाची पुत्र -पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म. असली पारस 13-14

9- विराट विश्व विज्ञान, पांडित्य विरुद्ध आध्यात्मिकता, ऐसे बना संत ? 15-16

10-पहली नजर में गुरुवर्या को जीवन अर्पित कर साध्वी दमिताश्री नाम पाया- 17-18
डॉ. सुभाष जैन, सरलता

11-पूज्य साध्वीवर्या श्री दमिताश्रीजी म.सा. जीवन झलक 19

12-आओ एक नयी दुनिया बसाए- ललित गर्ग, जिनकल्प 20-21

13-सागर की आन मालवा की शान पूज्य श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा : जीवन झलक 22

14-गरिमामय व्यक्तित्व के धनी पूज्य साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. 23-24
ध्यान के लिये आठ अंग

15-जादू चमत्कारों के प्रदर्शन की आवश्यकता क्यों, उपदेश 25-26

16-नवपद ओली जैन समाज के त्यौहार की उपयोगी जानकारियां 27-29

17-वर्गपहेली- 317 - जयंतीलाल जैन 30

18-ज्ञान गंगोत्री- 317 - आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. 31

19-शासन-समाचार 32-41

20-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि 42
नियुक्त करना है

संपादकीय

आयंबिल तप : सर्व विघ्न नाशक

__मानवीय__ चेष्टाओं की प्रकृति उन्मुक्त और स्वच्छंद होती है परन्तु कभी-कभी वो उपद्रवी और उश्रंखला हो जाती है यदि आप सभ्यता, संस्कृति और धर्म को जीवित रखना चाहते है, अक्षुण्ण बनाये रखना चाहते है तो मानव को अपने व्यवहार आचार विचार और चरित्र में सम्यकत्व का बोध रखना होगा मनुष्य की दृष्टि, ज्ञान और आचरण न्याययुक्त होना मानव की सच्ची पहचान करवाता है। यदि हमारा दर्शन, हमारा बोध और हमारा चरित्र अनैतिक है मिथ्या है तो यह संस्कृति धर्म और संस्कार को नष्ट करनेवाला बनेगा। समुचित एवं उत्तम आचार-विचार, आहार-व्यवहार जैसी सम्यक कृतियां ही सभ्यता के पुष्प की धार्मिक और सांस्कृतिक सुगंध है। बदलती जीवनशैली का प्रभाव हमारे लिये अधिक समस्या पैदा करनेवाला बना है। यह बात भी सही है कि हमें अपनी जड़ों से जुड़ेरहने के साथ-साथ लोक व्यवहारी आधुनिकी-करण को भी नकारना नहीं चाहिये परन्तु धर्म पथ के राहगीरों के लिये परम्पराओं की प्राचीन पगडंडियां आज भी अपरिहार्य है। परम तीर्थंकर परमात्मा श्री प्रभुवीर के द्वारा जिन आज्ञाओं का विधान किया गया है उसे स्वीकार करने से ही जीवन के समाधान मिलेंगे, यह भी निश्चित है आत्म-संतोष के साथ व्यवहारिक जीवन में सफलता और साथ में स्वस्थ शरीर पाने का अचुक माध्यम जिन शासन में तप को बतलाया गया है। 12 प्रकार के तपों में भी अगर कोई श्रेष्ठतम तप है जो वह आयंबिल तप है। इसके पुण्य प्रभाव का वर्णन अनेक कथानकों के साथ जिन शासन के शास्त्रों में पन्ने भरे हुए है इसी तप का महत्वपूर्ण विधान शाश्वत नवपद ओली आराधना बतलाया गया है जो वर्ष में दो बार करनी होती है अरे। एक बार करके तो देखिए। आप स्वयं जीवन में हुए परिवर्तन को अनुभव करेंगे। __जैन धर्म बदला लेनेवाला नहीं जीवन में बदलाव लाने वाला धर्म है।__ तप इसका अमोध साधन है। हम सब जानते है जो तपता नहीं वह पकता नहीं है। सोना भी तपने के बाद ही निखरता है, रोटी भी पकने के बाद ही स्वादिष्टलगती है ऐसे ही आत्मा भी जब तक नहीं तपेगी वह परमात्म मार्ग पर आगे नहीं बढ़ सकेगी, संसार में जितने भी महापुरुष हुए है, उनके जीवन को देखो कितनी तपस्या करने के बाद जीवन निखरा है, अरे संसारी बात कहें तो भी एक डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, वैज्ञानिक, प्रबंधक सबको देखो कितनी मेहनत, साधना, तपस्या की होगी तब वे इस मुकाम पर पहुंचे है। इसी प्रकार आत्मा को भी तपाना पड़ता है। लोग कहते है कि -जैन धर्म में जब देखो तब तप की ही बात, शरीर सुखाने की बात बोली जाती है, नहीं ऐसी बात नहीं जैन धर्म तो सिद्धांतों पर चलनेवाला धर्म है और तप उसका एक अंग है, आत्मा में परमात्मा देखनेवाला सम्यक दृष्टि होता है जिनदर्शन के अनुसार आत्मा को शुद्धात्मा बनाने के लिये स्वयं को तपस्या की भट्टी में झौकना पड़ता है। परमात्मा प्रभुवीर के अनुसार मात्र भोजन को छोड़ना ही तपस्या नहीं है, मन को संयम में रखकर आत्म साधना करना तपस्या है। शरीर को सुखाने से कुछ नहीं होगा अपने कर्मो को सुखाने का प्रयास ही अच्छी तपस्या है। लोगों को दिखाने के लिये तप नहीं करना है, आत्म संयम जगाने के लिये तप होना चाहिये।

एक बार चर्चा के दौरान किसी ने प्रश्न किया था कि- हम यह सुनते आ रहे है कि आत्मा अलग है और शरीर अलग है तो फिर हम आत्मा को तपाने के लिये इस शरीर को क्यों कष्ट दें ? उत्तर प्राप्त हुआ -जब आप दूध गर्म करते हो तो तपेली में डालकर आग पर रखते हो तो बतलाओ पहले दूध गर्म हुआ कि तपेली ? जैसे बिना तपेली गर्म हुए दूध गर्म नहीं हो सकता, वैसे ही बिना शरीर की तपस्या के आत्मा भी नहीं तप सकती है। जब तक जिन्दगी है तब तक आत्मा और शरीर का संबंध तो रहेगा ही। दूध में घी किसी को नहीं दिखता है और जिसको दिख जाता है वह उस घी को प्राप्त कर लेता है, दूध से भी घी प्राप्त करने के लिये मथना पड़ता है ऐसे ही आत्मा को परमात्मा पथ पर आगे ले जाने के लिये मथना और तपना पड़ता जब आत्मा मथते-मथते एक बार परमात्म स्वरुप को पा लेती है तो वह जन्म-मरण के फेरे से मुक्त हो जाती है।

आहार संज्ञा को रोकने का काम तप करता है। इच्छाओं पर कंट्रोल करना ही सबसे बड़ा तप है फिर चाहे वह इच्छा संसारी हो या अन्य कोई। भोगों में व्यक्ति कभी भी तृप्त नहीं होता है, भोगों की इच्छा तो निरंतर बनी रहती है, एक इच्छा पूरी नहीं हुई कि दूसरी सामने आ जाती है यह मन कभी भरता नहीं है, मन की पूर्ति करने के लिये कब तक भोगोगे ? सारा जीवन ऐसे ही निकल जायेगा। हमारे सामने दो ही रास्ते है एक है इच्छा पूर्ति का और दूसरा है इच्छा के निरोध का। मार्ग बदलकर देखने का हमारे सामने अच्छा अवसर आ रहा है, शाश्वती आसोज नवपद ओली आराधना करे एक बार बदलाव लाकर देखें जीवन की अनेक समस्या के समाधान आपको सामने दिखने लगेंगे। समर्पण में ही समाधान है। इसलिये सदैव मन वचन और कर्म से शुभ प्रवृत्ति ही करना चाहिये। जीवन में शांति तो साधना से ही मिलेगी। मन को मांजते रहिये। अनासक्त भाव को जीवन में पैदा कीजिए धर्म-अपरिग्रह निःस्पृता, अनासक्ति और वैराग्य के गुणों से ही जीवित है।

आयंबिल आराधना का वैज्ञानिक महत्व भी है, जैन जगत में जब नवपद ओली आराधना होती है, उसी समय अन्य धर्म में भी नव दिवसीय आराधना होती है जैसे नवरात्री। इस समय की गई तपाराधना मन के साथ शरीर को स्वस्थ रखने का भी काम करती है। मन शुद्ध बनायेंगे तो तन की शुद्धि भी हो जायेगी। जहां विज्ञान सब प्रकार के विफल हो जाता है वहीं से अध्यात्म धर्म आरंभ होता है।

इस सत्य और तथ्य को हम समझे तप आत्म उत्थान का प्रथम चरण है। तप को साधना बनाने के लिये नियमित और निरंतर अभ्यास आवश्य है, तप से ही मुक्ति के द्वार खुलते है, तीर्थंकर परमात्मा को भी तप के बगैर नहीं चलता है, तप कर्मो की निर्जरा का सर्वोत्तम साधन है। देह की आसक्ति का जीवन नहीं देहातीत जीवन जीने का प्रयास करें हम को तप को किसी भी रुप में चाहे छोटे रुप में नवकारसी के रुप स्वीकार कर आगे बढ़े क्योंकि आत्म साधना के लिये तप ही अंतिम और एक मात्र जतन है। इसी मंगल भाव के साथ !

✻ डॉ. सुभाष जैन

धर्म की शरण ही सबसे उत्तम है

* प.पू.साध्वी डॉ.सुभाषाजी म.सा.

संसार में 4 ही शरण है जो शाश्वत है। अरिहंत, सिद्ध, साधु और धर्म। बाकी सब बेगाना हो सकती है लेकिन ये सदा कल्याणकारी है, मोक्षकारी है। इन चारों शरणों में धर्म को शरण सबसे बैस्ट (उत्तम) है। इसका कारण है कि धर्म की शरण से ही अरिहंत व सिद्ध परमात्मा हो पाए। उसी धर्म के सहारे साधु-साध्वी अपना भव सुधार रहे है। इसी धर्म से कोई भी व्यक्ति अपना वर्तमान व भविष्य को मंगलमय कर सकता है। जो अच्छा रास्ता दिखाता है, सम्प्रदायवाद से दूर रखता है, खुद को देखने का मार्ग प्रशस्त करता है, सम्यक ज्ञानी बनाता है, ऊँच-नीच के भेद को मिटाता है, उसी का नाम ही तो धर्म है। धर्म यूनिवर्सल है, जिसे कोई भी, कभी भी, कहीं भी उपयोग कर सकता है। धर्म का फल है- शांति। धर्म में ही यह ताकत है कि वह हिंसक को भी अहिंसक, क्रोधी को भी सहनशील, पापी को भी पुण्यात्मा, भोगी को योगी, मानव को महामानव बना सकता है। संसार में जितने भी महापुरुष हुए, वे सब धर्म को स्वयं अंगीकार करने पर ही हो पाए। आप भी धर्म को अपनाकर स्वयं का और दूसरों का कल्याण कर सकते हैं। ऐसा करना भी चाहिये क्योंकि मानव जीवन का उद्देश्य ही धर्म को अपनाना है।

जब तक दूसरों की तरफ ध्यान है, तब तक अशांति है। कुछ देर के लिये ही यदि आप सम्प्रदायवाद से हट गए, जाति कुल को भूला दिया और स्वयं की आत्मा की अनुभूति कर ली, फिर भटकाव नहीं होगा। शनैः शनैः के अभ्यास व पुरुषार्थ से एक दिन धर्म का मर्म अनुभव में आ जाएगा। वही फिर धर्मात्मा बन सकता है। संसार में बड़े से बड़ा पद मिलना कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन धर्मात्मा बनना बहुत बड़ी उपलब्धि है। संसार के पदों से भव नहीं सुधरेगा लेकिन एक धर्मात्मा आगे जन्म-मरण तक से मुक्ति पा सकता है। वह क्या कर रहा है, इस पर अपनी एनर्जी को नष्ट नहीं करना बल्कि मैं क्या कर रहा हूं, इस पर अधिक गोर करने की जरुरत है। जिसने स्वयं को देखने का पराक्रम किया है, वही तो अपने दोष, गलतियां और मिथ्यात्व को मिटा पाएगा। क्या सही है और क्या गलत, इसका निष्कर्ष तभी हो सकेगा, जब खुद अपनी तरफ हमारी दृष्टि होगी। सम्यक पथ फिर स्वयं ही मयस्सर हो जाएगा। धर्म की शरण का यही तो मतलब है।

जिसने अपने जीवन में ''खंती'' की आराधना करना शुरु कर दिया, वह फिर घर-परिवार में रहते हुए भी जीवन का सच्चा आनंद हांसिल कर लेगा। ''खंती'' के मात्र 3 गुण है- शांति, क्षमा व सहनशीलता। जब धर्म अपने संग होता है फिर ये गुण बड़ी सहजता से जीवन के अभिन्न अंग बन जाते है। यदि ऐसा अभी तक नहीं है तो पहले धर्म को समझना आवश्यक है। बिना ''खंती'' के धर्म-कर्म, क्रिया-कांडो का कोई मतलब नहीं है। जब तक आचरण व व्यवहार में ''खंती'' नहीं है, तब तक समझ लेना हमारा अब तक किया हुआ धर्म-कर्म जीरो है। जब आप यह जानते हैं कि एक चींटी भी शांति व सुख चाहती है, एक संयासी भी शांति चाहता है, आप भी शांति चाहते है, फिर दूसरे को अशांत कर आपको शांति कैसे मिलेगी ? अशांति की मूल वजह अक्सर यह होती है कि व्यक्ति दूसरे को बदलना चाहता है। पति चाहता है कि बीबी मेरे अनुसार चले पत्नी चाहती है पति मेरे अनुरुप रहे। सास चाहती है बहु मेरा कहना माने और बहु सोचती है सास मेरे अनुसार रहे। यानी बाप-बेटे, ननंद-भोजाई, भाई-बहन में ऐसी ही तकरार चलती आई है, चल रही है लेकिन जो धर्मात्मा होता है वह दूसरे को नहीं खुद को सुधारता है। किसी की गलती पर भी क्षमा-माफ कर देता है। सहन करता है। जिसने अपने को बदल लिया, दृष्टि चेन्ज कर ली, वहीं शांति के फूल खिल जाते हैं। पूरा परिवार महक उठता है। धर्म की शरण का यही तो उपवन है जो घर, परिवार, समाज व राष्ट्र को खुशहाल बना सकता है।

चारित्र के बिना इस जीवन का कोई महत्व नहीं है। अच्छी भावना से ही धर्म की बुनियाद सुदृढ़ हो पाती है।

चार शरणों का चार कषायों को टालने के लिए संदेश

अरिहंत- क्रोध त्याग कर क्षमाशील बनो। देखो, मैंने अपने जीवन में शत्रुओं के प्रति भी क्रोध नहीं किया। सिद्ध- मान त्याग कर नम्र बनें। छोटों को भी बहुमान भाव से देखों। मैं निगोद के जीव को भी अपना स्वधर्मी बन्धु मानता हूं। साधु- माया छोड़कर सरल बनें। सरल होता है वही साधु बनता है और उसकी ही शुद्धि होती है। धर्म- लोभ त्याग कर संतोषी बनें। मैं ही परलोक में चलनेवाला वास्तविक धन हूं। मुझे जो अपनायेगा वह संतोषी बनेगा।

पाप की सजा भारी...!

*प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

सुख की सच्ची व्याख्याः-

सर्व स्ववशमेव सुखं, सर्व परवशमेव दुःखम्।
एतदुक्त समासेन, लक्षणं सुख-दुःखयोः ॥

पू. हरिभद्रसूरि म. सुख-दुःख की व्याख्या संक्षेप में बताते हुए कहते हैं कि- जो आत्मा के स्वाधीन हो, स्ववश हो वही सब कुछ सुख है, उसी में सुख है और जो परवश-पराधीन है वह दुःख है। स्व=से आत्मा और पर से=आत्मेत्तर-स्वेतर=शरीर मन, वचन, इन्द्रियां और बाह्य वस्तु और व्यक्ति। यदि हमारा सुख उनके आधीन है, उनके जरिए मिलता है, तो वह परवश, पराधीन ही हुआ। बिना पंखे के चलता ही नहीं है। गादी-तकीया न हो तो नींद ही न आए, एयरकंडीशनर न हो तो चैन ही न पड़े.... गाड़ी, फ्रीज, टीवी, आदि ये सब हो तो मजा आए, तो ही हम सुखी, अन्यथा दुःखी यह सब परवश, पराधीन है अतः दुःख ही है। दुःख रुप है। अतः आत्मवश-स्वाधीन सुख की प्राप्ति कीजिए। चाहे कोई भी साधना न हो तो भी बिना तकलीफ के वैसी ही मजा आए ऐसी अवस्था निर्माण करनी चाहिये। यही तीर्थंकर भगवंतों का शाश्वत सिद्धांत है। इसलिए तीर्थंकरों का धर्म शाश्वत है, शासन शाश्वत है। अर्थ से स्वरुप से अनादि-अनन्त शाश्वत स्वरुप है। यह अपरिर्वन शील है। अतः ब्राह्य पराधीन परवश सुखों के चक्कर में न फंसते हुए उस गलत मार्ग को छोड़कर वास्तविक सच्चे स्वाधीन-स्ववश-आत्मिक सुख की खोज करो। इसी दिशा में प्रयास करो-प्रगति करो। इसी में भला है। इसी दिशा में आगे सच्चिदानन्द परमानन्द सुख की प्राप्ति होगी।

यह पापस्थान छोड़ने जैसा क्यों है ?

बात सही है और विवादास्पद है। जबकि संसारी जीवों को यह प्रिय है, रतिभाव से सुख की प्राप्ति जीवों ने मानी है तो फिर यह पापस्थान छोड़ने जैसा क्यों है ? यह प्रश्न उठना सहज है। फिर भी थोड़ा सोचिए ! और गहराई में जाकर गौर से सोचिए। अंतरात्मा से यह प्रश्न दुहरा दुहरा कर पूछिए.... एक बार प्रयोग करके तो देखिए। क्या अन्दर बैठा आतमराम कुछ जवाब देता है कि नहीं ? परीक्षा तो कीजिए। मैं दृढ़ विश्वास के साथ कहता हूं कि.... अंतर से बातें करने वाले आंतरखोजी-आंतर्दृष्टा को अवश्य मार्ग मिलता है। आत्मा अन्दर से आवाज देती है। अतः रति-अरति तो क्या है ? 18 ही पापों के लिए आप पूछ लीजिए। आत्मा जरुर जवाब देगी। आपकी अरजी खारीज तो नहीं होगी और आप यदि यह आदत बना लो कि अंतरात्मा की आवाज के अनुसार ही प्रत्येक कार्य करना है, तो आप अच्छे-बुरे प्रत्येक कार्यो के लिए पहले से ही अंतरात्मा को पूछकर उसकी सलाह लेकर ही काम कीजिए। आपको वास्तव में सच्ची सलाह मिलेगी। क्योंकि फीस नहीं लेनेवाला सच्चा श्रेष्ठ सलाहकार तो अन्दर ही बैठा है। वह कभी आपसे विश्वासघात नहीं करेगा। बाहरी दुनिया के मतलबी सलाहकार संभव है उल्टी सलाह भी देंगे। अतः पाप या पुण्य दोनों की प्रवृत्ति अच्छे-बूरे सभी काम शान्त चित्त से एकान्त में बैठकर अंतरात्मा से पूछकर ही करें। करो या मत मरो.... यह सलाह जरुर मिलेगी और इसी प्रक्रिया की पुनः पुनः प्रवृत्ति से आप आन्तदृष्टा बन सकोगे। एक दिन अनाहत नाद का श्रवण करते जाओगे।

अब बात है रति-अरति के पाप के विषयों की क्या यह पाप स्थान छोड़ने जैसा है कि नहीं ? इसके गुण-दोषों का भी विचार किया जाय। रति-अरति के सेवन में गुण तो क्षणिक तृप्ति का होगा परन्तु दोष ज्यादा है। रति-अरति दोनों ही चिन्ताकारक है। अन्तर सिर्फ इतना है कि-रति की चिन्ता प्रिय-इष्ट अनुकूल पदार्थ की प्राप्ति के विषय में है, तो अरति की चिन्ता अनिष्ट-अप्रिय, प्रतिकूल पदार्थों की निवृत्ति विषयक है। आखिर एक बात तो स्पष्ट ही है कि दोनों एक ही आर्तध्यान के वृक्ष की दो शाखा है। यह मिल जाय तो अच्छा है और मिले हुए में आसक्ति-रति-आनन्द-मजा मानता है। अरति वाला यह टल जाय तो अच्छा है। अनिष्ट न मिले तो अच्छा है। इस तरह दोनों एक ही वृक्ष के फल है। सिर्फ शाखा-डाली अलग-अलग है। रति-अरति ये दोनों वास्तव में राग-द्वेष की ही मन्द मात्रा है। ठंडी शुरुआत है। यहीं से राग-द्वेष के बीज पनपते है और सही देखा जाय तो राग के बीज से रति के अंकुर फूटते है और द्वेष के बीज से अरति के अंकुर फूटते है अर्थात आज जैसे छोटे दो देशों के संघर्ष के पीछे महासत्ताएं तैनात खाड़ी है वैसे ही रति-अरति के छोटे से पाप के पीछे राग-द्वेष का महा हिमालय, मोहनीय कर्म की महासत्ता तैनात खाड़ी है। अतः येन केन उपायेन भी रति-अरति के पाप से बचना ही चाहिये !

रति-अरति से बचने के उपायः-

जेह अरति रति नवि गणे जी, सुख-दुःख होय समान।
ते पामे जस संपदाजी, बाधे जग तस वान ॥

जो मनुष्य रति-अरति को महत्व नहीं देता है, उन्हें नगण्य समझता है, नहीं गिनता है और सुख-दुःख को समान समझने का सम भाव रखता है वह भाग्यशाली यशो संपदा को प्राप्त करता है। यहां जस-(यशो) पद से पू.यशोविजयजी उपाध्याय कहते है कि- वह बड़भागी यश पाएगा। जगत भर में उसकी यश कीर्ति विस्तरेगी। अतः सम भाव-समता ही इस पाप-स्थान से बचने की एक मात्र रामबाण औषध है। रति-अरति जन्य सुख-दुःख की परिस्थिति में मन को अच्छी तरह तत्वज्ञान से समझा-बुझाकर समभाव में स्थिर करते हुए कहना है कि- हे मन ! ''सुख में लीन मत बन, और दुःख में दीन मत बन।'' हम सभी यही उपदेश हमारे मन को देते रहे- कि जब भी जितना भी सुख आ जाए फिर भी तू उसमें लीन मत बनना, तल्लीन-आसक्त, मत बनना और वैसे ही यदि कितना ही दुःख आ जाए तो हिम्मत हार के दुःख में दीन मत बनना। क्योंकि ये वास्तविक सुख-दुःख नहीं है। ये भी पौद्‌गलिक भाव है। कर्म जन्य है। तेरा वास्तविक सच्चा सुख तो अलग ही है। सुख चाहिए तो पहले वह सुख दूसरों को देते जाओ। किसी को सुखी बनाकर सुखी बनने की हल्की अधम वृत्ति मत रखो। क्योंकि कर्म सत्ता के घर में उल्टा न्याय नहीं है, न अंधेर ही है। आप जैसा देओगे वैसा ही पाओगे। अतः यदि आप सुख चाहते हो तो पहले किसी को सुख ही दीजिए। दुःख मत दीजिए। यह जीवन मंत्र बना लो !

अतः सुख-दुःख के निमित्त कारणीभूत पदार्थो की अनित्यता क्षणिकता का विचार करके समभाव प्रगट करना। कमठ के उपसर्ग और धरणेन्द्र को भक्ति दोनों ही प्रसंग एक साथ होते रहे फिर भी पार्श्वनाथ प्रभु तो समताभाव में तुल्य मनोवृत्ति में ही स्थिर रहे। उसी तरह स्थिरता का भाव लाकर हम सभी रति-अरति के क्षुद्र पाप से बचकर समचित्त से शाश्वत सुख को प्राप्त करे यही अन्तरेच्छा...!

नयों की अपेक्षा से प्रभु दर्शन

पू.आ.श्री विजयकलापूर्णसूरीजी म.

नैगम नय- मन, वचन, काया की चंचलता पूर्वक सिर्फ आपकी आंखों ने प्रभु प्रतिमा देखी ? तो भी मैं कहूंगा कि आपने प्रभु-दर्शन किये।

संग्रह नय- यदि आपको समस्त जीव सिद्ध भगवंतों के स्वधर्मी बन्धु प्रतीत हों तो ही मैं सच्चे दर्शन मानूंगा।

व्यवहार नय- आशातना-रहित, वन्दन-नमस्कार सहित यदि आप प्रभु की मुद्रा देखेंगे, तो ही मैं दर्शन मानूंगा।

ऋजुसूत्र नय- स्थिरता एवं उपयोगपूर्वक किये गये दर्शन को ही मैं ''दर्शन'' के रूप में मान्य करता हूं।

शब्द नय- प्रभु के अनन्त ऐश्वर्य को देखकर अपनी आत्मा-संपत्ति प्रकट करने की इच्छा हुई हो तो ही मैं सच्चे ''दर्शन'' मानूंगा।

समभिरुढ़ नय- आप केवलज्ञानी बनने पर ही सच्चे ''दर्शन'' कर सकेंगे- मैं यह मानता हूं।

एवंभूत नय- आप सिद्ध परमात्मा बनने पर ही वास्तविक ''दर्शन'' कर सकेंगे, ऐसी मेरी मान्यता है।

जिन्दगी- *जिन्दगी सागर की भांति है। सागर में कभी ज्वार तो कभी भाटा ! कभी लहरों के वेग के कारण सागर-जल-तरंगें उछलने लगती है तो कभी सागर एकदम शान्त और गंभीर हो पड़ता है। हमारी जिन्दगी भी सागर की तरह ही है। इनमें भी कभी चढ़ाव तो कभी उतार आते ही रहते हैं। कभी अनुकूलताएं तो कभी प्रतिकूलताएं, कभी सुख तो कभी दुःख, कभी संपति का पार नहीं तो कभी विपत्तियों की सीमा नहीं, कभी जंगल तो कभी मंगल, कभी लाखों सलाम करने वाले मिलते हैं तो कभी कोई सामने देखनेवाला भी नहीं होता। ऐसी विचित्रताओं और विविधताओं से उफनती जिन्दगी में जो अपने चित्त को समतोल रख कर प्रसन्न रह सकता है। वहीं व्यक्ति जीवन के वास्तविक आनन्द को पा सकता है।*

सुख-दुःख, अनुकूलता-प्रतिकुलता आदि सब कुछ कर्माधिन है, किन्तु जब मनुष्य अपने कर्म के विचार को भूल कर निमित्त को प्रधान बना देती है, तब उसकी जिन्दगी आर्तध्यान की आग में झुलसने लगती है।

यदि बचाना है अपनी जिन्दगी को आर्तध्यान की आग से तो हम दुःख के हर प्रसंग में ''निमित्त'' को गौण कर ''कर्म'' को मुख्य बनाना सीखें।

✽ आ. रत्नसेन विजय

जब महामंत्र रक्षक बनता है

गतांक से आगे...!

सरदार के सारे प्रयत्न निष्फल गये। उसके सारे प्रयत्नों के बावजूद भी विराट अविचल रहा। विराट पुनः विचारों की दुनिया में खो गया। जब महामंत्र रक्षक बनता है तो उत्तुंग खड़े विपत्तियों के पहाड़ भी हिलने लगते है और उन पर्वतों में विराट चिर पड़ जाती है। क्या महामंत्र मेरा रक्षक नहीं है ? जब महामंत्र मेरे पास मौजूद है तो किसकी ताकत है कि मेरा बाल भी बांका हो सके ? जगत के विराट तख्त पर ऐसी कोई वस्तु की उपस्थिति नहीं है, जो इस मंत्र-सम्राट से टक्कर ले सके ? तो यदि मैं इस महामंत्र को रक्षक बनाकर और नवकार का अभेद्य कवच धारणकर यहां से किसी भी प्रकार से भाग जाऊं तो, क्या मेरा यह कार्य सफल नहीं होगा?

''जरुर कामयाब होगा, विराट !'' विराट के अंतर से एक विराट प्रतिध्वनि बाहर आयी और विराट की अंतर गुफा में वह प्रतिध्वनि गूंजने लगी। इस प्रतिध्वनि से विराट ने नया उत्साह, नयी उमंग व जवांमर्दी पायी। विराट का दिल किसी भी प्रकार से पल्ली छोड़ने के लिये कटिबद्ध बना और अंत में विराट कृतानिश्चयी बना कि आज तो अवश्य ही इस पल्ली को ठेकर लगाकर निकलना ही है एवं जाना है तय की गयी सिद्धाचल की राह पर।

विराट की विचारमाला रुक गयी। वह किसी भी तरह से पल्ली में से छूटकर सोरठ के अलबेले ''दादा'' को मिलन के लिये कृतनिश्चयी बन गया। विराट को श्रद्धा थी कि उसके महाभारत कार्य को पूर्ण करने में मंत्राधिराज अवश्य सहायता करेंगे। उसे एतबार था कि महामंत्र उसे ऐसा पीठबल देगा कि विघ्नों के विराट वाराधि को विंधाकर भी वह अपनी मंजिल अवश्य हासिल करेगा। विराट में आज शौर्य का प्रादुर्भाव हुआ था। उसमें आज एक ऐसी जवांमर्दी, उमंग व जोशने जन्म लिया था जिसके त्रिवेणी संगम से विराट एक नये इतिहास का सर्जन कर सकता था।

आकाश के महासागर में सफर करती हुई सूर्य रुपी नौका सागर के किनारे आ रही थी। सूर्य किरणें अस्ताचल की तैयारी में थी और आकाश के आंगन में संध्या अपने रंगों को बिखेर रही थी।

बैठा हुआ विराट पलायन करने की योजना बना रहा था। इस अंधेरी पल्ली में आकर आज उसे तीन दिन बीत गये थे, इन तीन दिनों में विराट ने पल्ली की समस्त कार्यवाही का निरीक्षण कर लिया था। सरदार कैसे बाहर जाता है ? बाहर जाते समय वह किस तरीके से द्वार खोलता है ? एवं किस समय बाहर जाता हैं ? इन सभी बातों की जानकारी विराट ने बराबर ले ली थी। इन सभी जानकारियों के आधार पर ही वह अपनी योजना का आयोजन कर रहा था।

पल्ली के सभी लोग निद्रा देवी की गोद में सो जाने की तैयारी कर रहे थे। विराट भी अपनी शैया में सो गया, उसने अपनी योजना का अमल मध्यरात्रि में करने का निश्चय किया। महामंत्र का स्मरण करता हुआ विराट समय बिताने लगा।

मध्यरात्रि प्रारंभ हुई और खड़ा हो गया। आसपास नजर डाली तो सब सुनसान था। पूरी पल्ली भर निद्रा में थी। सरदार भी गहरी नींद में सो रहा था।

विराट ने मन ही मन विचार किया कि अवसर बहुत ही सुंदर मिला है। मेरे मार्ग में रुकावट कर सके, ऐसा अब कोई नहीं है। वह उठा और द्वार की तरफ आगे बढ़ा। उसके मन में पुनः एक बार पीछे हटने का विचार आंदोलित हो गया ! कहीं मैं साहस तो नहीं कर रहा ? मेरी इस योजना में यदि असफल हो गया तो इसका आखिरी अंजाम मौत के सिवाय क्या हो सकता है ?

विराट के शरीर में एक भय की कंपन आ गयी। किन्तु फिर वह जवांमर्द बन गया, उसका मन मर्द बन गया। जब महामंत्र रक्षक बनता है तो आफत का कोहरा विलीन हो जाता है और आनंद का सूर्य प्रकाशित हो उठता है। विराट ने महामंत्र का स्मरण किया। श्रीआदिनाथ दादा को दिल में विराजमान किये गये एवं कंटक भरी राहों में आगे बढ़ा !

विराट सरदार के पास आकर खड़ा हो गया। उसने सावधानी पूर्वक सरदार का कोट पहन लिया और वह सरदार से वेश में सज्ज हो गया। सरदार के तकिये के नीचे से एक छोटी लकड़ी भी खूब सावधानी से विराट ने खींच ली एवं पल्ली के द्वार की और कदम उठाये। विराट जब द्वार के आगे आकर खड़ा हुआ, तब मध्यरात्रि बराबर जम गयी थी।

श्रद्धेय सच्चा हो, श्रद्धा सच्ची हो एवं साधना भी सच्ची हो, तो श्रद्धेय, श्रद्धा एवं साधना की त्रिवेणी में खड़ा साधक सिद्धि के सर्वोच्च शिखरों को अवश्य पार कर लेता है। विराट

भी ऐसी ही त्रिवेणी में खड़ा था, श्रद्धेय महामंत्र था, महामंत्र के प्रति उसकी श्रद्धा अविचल थी एवं उसकी महामंत्र की साधना भी अविरत थी।

पल्ली में आकर तीन-तीन दिन बीत चुके थे। विराट तीसरे दिन कृतनिश्चयी बना था कि किसी भी प्रकार से पल्ली को ठोकर मारकर गिरिराज की राह अपनानी है। विराट तीसरे दिन की मध्यरात्रि में उठा। उसने सरदार जैसा रुप धारण किया और द्वार की ओर आगे बढ़ा। विराट ने महामंत्र का स्मरण किया और द्वार खट-खटाया। पल्ली का द्वार खुल गया। विराट बाहर निकला, तब पल्ली के द्वारपाल विराट को सलाम कर रहे थे। जब महामंत्र रक्षक बनता है, तब कैसी भी कठिन योजना पार पड़ जाती है, सरदार का रुप बनाकर बाहर निकले विराट की योजना भी पार पड़ गयी। विराट बाहर निकल गया। द्वारपाल को शंका भी नहीं आयी, उसने भी विराट को सरदार समझकर सलाम किया और उसकी राह निष्कंटक बनी।

पल्ली को ठुकराकर विराट एक खुले मैदान में आ खड़ा हुआ। चारों तरफ जैसे अंधकार का प्रलय वर्षा हो रही थी। उस काले अंधकार को चिरते थोड़ा-थोड़ा आकाशी प्रकाश विराट को राह बता रहा था। उसके दिल में मंत्राधिराज श्री नवकार का जाप चालू था। उस जप में से बहती बेहद शक्ति के सहारे विराट वह विरान पंथ काट रहा था।

विरान जंगल ! काली मध्यरात्रि ! हिंसक पशुओं के आक्रमण का भय ! अनजानी राह ! एवं स्वयं अकेला ! इस कल्पना से विराट में डर का दावानल प्रकट होता लेकिन वह दावानल पुनः बुझ जाता क्यों कि वह विचार करता कि भले ही मैं असहाय हूं, कोई साथ-संगाथ नहीं है, फिर भी जब महामंत्र मेरी रक्षा कर रहा है, फिर मुझे भय कैसा ?

विराट विशेष निर्भय बनकर आगे सोचता था कि भले ही मेरे आगे कोई राह नहीं, पगडंडी नहीं या कोई विरान रास्ता भी नहीं, फिर भी एक फरिश्ता मुझे अंगुली पकड़कर चला रहा है। महामंत्र मेरे आगे तेज किरणें प्रसार रहा है। अंधेरी रात एवं विपत्तियों के मझादरिये में भी दादा श्री आदिश्वर ध्रुवतारक बनकर मेरी जहाज चला रहे है, फिर डर या भय कैसा ?

मध्यरात्रि लगभग बीत रही थी। विराट भी दौड़-दौड़कर थक गया था। उसके कदम कोई विश्रामस्थान की खोज में थे। नैत्र भी अब थोड़े आराम की झंखना कर रहे थे। कदम आगे बढ़ने के लिये मना कर रहे थे, लेकिन आगे बढ़े बिना कोई सहारा नहीं था। टीले के आसपास धीरे-धीरे चलते हुए विराट अब जंगल में गया था। पथ अभी भी बहुत लंबा था। मंजिल तो अभी भी सुदूर धरती पर खड़ी थी, फिर भी प्रवास को अब रोके बिना चलना संभव नहीं था। विराट ने चारों तरफ नजर घूमायी, किन्तु आसपास कहीं कोई विश्राम स्थान मिलने की स्थिति नहीं लगी। उसने दूर-सुदूर नजर डाली तो एक छोटी सी देहरी जैसा कुछ आंखों के सामने दिखने लगा।

मजबूर बने मन को मनाकर विराट ने प्रवास जारी रखा। उसका मन चलते-चलते भी इसी विचारों में मग्न रहता कि महामंत्र के आगे कौन सी वस्तु असंभव है ? महामंत्र में छुपी विराट शक्ति का उर्ध्वीकरण होता है, तब मुसीबतों के पहाड़ भी हिल जाते है और साधक को जाने के लिये रास्ता दे देते हैं ? मेरे जीवन में बनी यह रोमांचक घटना भी क्या इस बात की साक्षी नहीं है ? कहां वह अंधकारमय पल्ली एवं कहां लुटेरों की गिरफ्त में पकड़ा हुआ मैं, क्या उस गहरे अंधकार में से उजियारे में आना संभव था ? क्या उस मृत्यु की भयानक नागचूड़ को तोड़कर स्वतंत्र होना स्वप्न में भी संभव था ? नहीं, लेकिन वह सब संभव होता है, स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकें वह भी साकार होकर खड़ा हो जाता है, जब महामंत्र रक्षक बनता है !

विराट के कान में घंटी का मधुर नाद सुनायी दिया, वह खड़ा रह गया। उसने देखा कि वह देहरी के बिल्कुल नजदीक आ पहुंचा है। घटादार वृक्ष की छाया में एक देरी थी। चार-पांच सीढ़ियां चढ़ने के बाद एक चबुतरा आता था, उसके बाद चार-पांच सीढ़ियों पर द्वार आता था। वैसे देहरी छोटी थी। विराट के तन-मन अब विराम की चाहना कर रहे थे। उसने देहरी में थोड़ा आराम करने का विचार किया। विराट सीढ़ियां चढ़कर चबूतरें पर आराम करने बैठ गया। देहरी के चारों तरफ का वातावरण खुशनुमा था। मंद-मंद बहना पवन विराट को आनंदित कर रहा था। विराट का मन इस स्थान को छोड़कर आगे बढ़ने की इच्छा नहीं कर रहा था, फिर भी आगे बढ़े बिना कोई सहारा नहीं था।

विराट को ख्याल में था कि मंजिल अभी बहुत दूर है, वह खड़ा हो गया। उसने चारों तरफ विहंगावलोकन किया तो उसकी नजर दूर-सुदूर आ रहे सिपाही पर पड़ी। विराट के रोम-रोम में एक कंपन व्याप्त हो गई। उसके तन-बदन पर भय व्याप्त हो गया और विचार करने लगा ''क्या मैं फिर

पकड़ा जाऊंगा ? क्या उस अंधकारमय पल्ली का आतिथ्य और भी मेरे सिर पर लिखा है ? क्या मंत्राधिराज अभी और मेरी कसौटी करेगा ? क्या किस्मत अभी भी मेरा साथ नहीं देगी ? नहीं-नहीं इस सिपाही की क्या ताकत है कि मुझे गिरफ्तार कर सके ? जब मंत्राधिराज मेरे रक्षक है, तब किसकी ताकत है कि मुझ पर सितम गुजार सके ?

विराट ने देखा कि अभी सिपाही काफी दूर था जिससे वहां से तेज गति से भागने लगा। इस विरान भूमि से अनजान व मात्र पन्द्रह वर्ष का विराट कहां और वनजंगल के रास्ते को रात-दिन जानने वाला वह मजबूत सिपाही कहां। विराट तेजगति से दौड़ना जारी था। एक ही श्वास में वह दौड़े जा रहा था, लेकिन एक बलवान की नजर में चढ़ा वह बालक कहां तक टिक सकता था ?

खड़े रहो ! सिपाही ने आवाज दी। विराट ने पीछे देखा तो सिपाही लगभग पास में आ गया था, अब खड़े रहे बिना चल भी नहीं सकता था। विराट खड़ा रह गया, किन्तु उसके अंतर में महामंत्र के प्रति भावना थी, हृदय में श्रद्धा थी और दिल में विश्वास था। विराट निर्भय बनकर खड़ा था। उसके तन-बदन पर भय की पतली रेखा भी अंकित नहीं थी। उसके होठों पर अजपाजप था मंत्र-सम्राट का ! उसके दिल में प्यारी छबि थी अलबेले आदिनाथ की !

सिपाही ने सरदार की आज्ञा विराट को बतायी कि कुछ भी हो, आकाश-पाताल एक करके भी तुम्हें गिरफ्तार करने की सरदार की आज्ञा है।

सिपाही ने विराट को कई प्रकार से समझाया कि विराट ! यदि तू सरदार का आज्ञांकित बनकर रहेगा, तो तुझे पल्ली में किसी भी प्रकार का दुःख नहीं होगा। सरदार स्वयं अपना अखूट खजाना व पल्ली का सार्वभौमत्व तुझे सौंपने की इच्छा रखते हैं। किन्तु सिपाही की यह आरजु कामयाब नहीं हुई। विराट सिपाही को समझाने लगा।

''तुम मुझे गिरफ्तार करके ले जाओगे, इसमें तुम्हारा क्या फायदा है ? मेरे तन-बदन की तरफ तो देखो, अभी मैं बालक हूं। अभी मैं अविकसित गुलाब हूं। तुम मुझे पकड़कर ले जाओगे तो मेरे देखे हुए रंगीन स्वप्न बिखर जायेंगे, मेरे अरमानों का आलम नेस्तनाबूद हो जायेगा। नहीं चाहिये मुझे वो अखुट खजाना, नहीं चाहिये मुझे सार्वभौमत्व ! मुझे चाहिये- सिर्फ आजादी, महामूल्यवान आदिनाथ व प्राण प्यारा महामंत्र नवकार !'' विराट इतना बोलकर रुक गया, उसके शब्दों में खुमारी थी, आजादी की भीख मांगनेवाली आजीजी नहीं थी। सिपाही विराट की खुमारी देखकर स्तब्ध बन गया, वह सोचने लगा कि क्या इस छोटे बालक में इतनी खुमारी, ऐसे जवांमर्दी व ऐसा जोश हो सकता है ? क्या ऐसे बोलक को गिरफ्तार कर सरदार के समक्ष हाजिर करने में मुझे पाप नहीं लगेगा। तो फिर क्यों मैं यह महापाप कर मानवता को कलंकित करुं ? जाने दो, गिरफ्तार नहीं करना है इस बालक को। सरदार को कह दूंगा कि आसपास की धरती के कण-कण में विराट को ढूंढ लिया, लेकिन विराट नहीं मिला। सिपाही ने ध्यान से देखा, तो विराट के मुख पर कोई मंत्र-जाप चल रहा था। सिपाही ने कहा-''तू तेरे तय किये गये मार्ग पर आगे बढ़। विराट, मैं पल्ली में वापस लौटकर कह दूंगा कि मेरी शोध सफल नहीं हुई। इतना कहकर सिपाही वापस लौट गया।

विराट के उर में आनंद की उर्मियाँ उछलने लगी। उसके मुख से एक नाद उठा कि जब महामंत्र रक्षक बनता है, तब विश्व में कोई भी तत्व किसी भी समय कुछ भी अनहोनी नहीं कर सकता है। विराट की मंजिल अब दूर नहीं थी। वह थोड़ा चला, इतने में तो ''सोनगढ़'' के सिग्नल दिखायी दिये। सोनगढ़ के प्लेट फार्म पर जब विराट ने पांव रखा तो उस समय पालीताना जाने वाली ट्रेन उसकी राह देखती हुई खड़ी थी। विराट ने उस ट्रेन में अपना आसन जमाया, तब उसके अंतर के कोने-कोने से होकर वायुमंडल में फैल रहा एक ऐसा अंतर्नाद महामंत्र के अप्रतिम सामर्थ्य के गीत गाता अनंत में विलीन होता था कि किसी भी प्रकार की अंधेरी खाई में गिरे महामंत्र के साधक को सीढ़ि मिलती है और वह गुमराह अपनी मंजिल पाता है, जब महामंत्र रक्षक बनता है।

सर्वविपत्ति हर जिन नाम मंत्र

हे त्रिभुवनभानु ! हे सर्वातिशायी सुंदर गुण निधि ! अनादिकाल से चार गति रुप संसार में परिभ्रमण करते मैंने अनंतकाल गवां दिया ! मेरा ख्याल है कि आपका पवित्र नाम मेरे कानों तक कभी नहीं आया, सर्व विपत्ति हर आपका नाम मंत्र सुननेवालों को विपक्षी रुपी भयंकर नागिन कभी पास में आ सकती है क्या ? नहीं ! नहीं !

*** पं. श्री गुणसुंदरविजयजी गणी**

जैनों का मोनोपाली तपोत्सव : नवपद ओली आराधना

आसो सुद सातम से जैन महोत्सव नवपद ओली का प्रारंभ हो रहा है। जैन समुदाय में प्रत्येक वर्ष दो बार नवपद ओली का महोत्सव मनाया जाता है जो 9 दिन तक रहता है। पहला नवपद ओली चैत्र माह (मार्च-अप्रेल) के शुक्ल पक्ष के दौरान आता है और दूसरा नवपद ओली अश्विन महीने (सितंबर-अक्टूबर) के शुक्ल पक्ष में आता है। यह दोनों महीनों में शुक्ला सप्तमी और पूर्णिमा के बीच होता है। नवपद आली नवरात्रि के त्यौहार के आसपास शुरु होती है। अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, सम्यक दर्शन सम्यक चरित्र और सम्यक तप जैसे 9 सर्वोच्च पदों को नमन करने के लिये जैन समाज के लोग 9 दिनों तक आयंबिल तप का पालन करते हैं। आयंबिल एक प्रकार का उपवास है, जिसमें भक्त केवल एक बार उबला हुआ अनाज खा सकते हैं। यहां भोजन बिना नमक या चीनी या तेल-मसालों के तथा सरल होना चाहिये।

महत्व:- लगभग वर्ष ग्यारह लाख पूर्व 20 में तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रत स्वामी के समय राजा श्रीपाल कुज रोग से पीड़ित था। उसका विवाह मयणा सुंदरी से हुआ था, जो राजा को अन्य 700 कुष्ठरोगियों के साथ कुष्ठरोग से निदान के लिये मुनिचंद्र नाम के एक संत के पास ले गई। मुनिचंद्र ने उन्हें सिद्धचक्र महापूजा (9 दिनों की अवधि के लिये विशेष रुप के उपवास ओली के साथ) करने का निर्देश दिया। नवपद को सिद्धचक्र भी कहा जाता है। सिद्धचक्र एक यंत्र है जिसमें 9 सर्वोच्च पदों की स्थिति लक्षित है। जीने दो समूहों में वर्गीकृत किया जाता हैः-

1- पंच परमेष्ठी (अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु)

2- धर्मतत्व (सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र, सम्यक तप)

पहले 5 पदों को पंच परमेष्ठी के रुप में जाना जाता है और शेष 4 पदों को धर्म तत्व के रुप में माना जाता है। अंतिम 4 पद या धर्म तत्व महान गुण है, जो अनुसरण करने पर मुक्ति के मार्ग पर अग्रसित करते है।

नवपद को सिद्धचक्र भी कहा जाता है। यहां एक यंत्र है जिसमें सिद्ध चक्र को शीर्ष पर रखा गया है। अरिहंत केंद्र में और आचार्य, अरिहंत के दाएं और स्थित है। उपाध्याय के नीचे की ओर अरिहंत के बाएं और साधु को रखा गया है। सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र और सम्यक तक चारों कोने में ऊपरी दांए कोने से शुरु होकर फिर दक्षिणावर्त (घड़ी के अनुसार) चलते हैं।

उत्सव और अनुष्ठान :-

नवपद ओली चित्र व अश्विनी सुदी सप्तमी से प्रारंभ होकर चित्र में अश्विनं सुदी पूर्णिमा तक मनाई जाती है। नवपद ओली तप त्यौहारों को संसदीय स्थाई माना जाता है जिसका मतलब है कि नवपद ओली त्यौहार सभी समय में विद्यमान है अर्थात अतीत, वर्तमान और भविष्य। इन दिनों के दौरान नवपद की प्रतिदिन पूजा की जाती है। 9 दिन के प्रत्येक दिन त्यौहार सिद्धचक्र के 9 पदों के लिये समर्पित है। इन 9 दिनों के दौरान भक्तों को आयंबिल तप का पालन करते हैं, वे दिन में एक बार खाना खाते है, भोजन सरल तथा बिना मसाले, दूध, दही, घी, तेल, हरी/कच्ची सब्जियां, जड़, फलों और चीनी के केवल उबला हुआ अनाज ही होता है।

नवपद का विज्ञान:-

पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है, और दिन और रात की अवधि लगातार वर्ष भर बदलती रहती है परन्तु मार्च-अप्रेल और सितंबर, अक्टूबर के दौरान दिन और रात की अवधि लगभग बराबर होती है। यह नवपद ओली के दिन है, इन दिनों में प्रकृति संतुलन में होती है। इन दिनों में न तो अधिक गर्मी होती है ना तो अधिक ठंडक। यह मध्यम ऋतु है जो ब्रह्मांड की सर्वोच्च शक्तियों की पूजा करने के लिये बिल्कुल उपयुक्त है।

आयंबिल तप करने के लाभ:-

नवपद ओली गर्मियों की शुरुआत और सर्दियों की अंत में आती है इस प्रकार अश्विन में नवपद ओली सर्दियों की शुरुआत और गर्मियों के अंत में आती है, दोनों मौसम हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिये महत्वपूर्ण है। भक्ति और नवपद प्रार्थना हमें मानसिक रुप से स्वस्थ रखाती है जबकि आयंबिल उपवास और अन्य तपस्या हमें रोगों से लड़ने के लिये उत्साहित करती है और हमें शारीरिक रुप से स्वस्थ रखती है।

**** शरीर का रोग एक भव में तकलीफ देगा परन्तु मन का रोग भव-भव में तकलीफ देगा।***

मैं इलाची पुत्र

✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

कहा जाता है कि कीर्तन से जीवन बदल जाता है, लेकिन मेरे जीवन में इससे उलटा हुआ, कीर्तन का शीर्षासन हो गया ! ''कीर्तन'' का शीर्षासन हो गया। ''कीर्तन'' को उल्टाओ- ''नर्तकी'' होगा। हां.... मैं नर्तकी के दर्शन से बदल गया, मेरे खानदान को भूलकर उल्टे रास्ते पर चढ़ गया। प्रभु-कीर्तन करके आत्म-कल्याण करनेवाले बहुत से संतों के बारे में सुना होगा परन्तु नर्तकी में पागल बनकर मेरे जैसे बहुत कम सुने होंगे !

नर्तकी से कीर्तन की तरफ मैं कैसे फिरा यह भी जानने जैसा है। मेरे एलावर्धन गांव में आई हुई नट-मंडली की एक नर्तकी मेरी आंखों में ऐसी बस गई कि कुछ पूछो ही मत ! आंख में कनी में घुस जाये तो फिर भी निकल सकती है, लेकिन कन्या घुस जाये तो निकलनी मुश्किल ! आंख में कनी घुस जाने पर तो आदमी बंद आंखों से अंधा बन जाता है परन्तु कन्या के घुसने पर तो खुल्ली आंखों से अंधा हो जाता है। अपनी खानदानी, प्रतिष्ठा वगैरह कुछ भी उसे दिखाई नहीं देती। मैं भी आंख होने पर भी अंधा हो गया था।

मैंने तो दृढ़ संकल्प कर दिया- ''शादी करनी तो इसी कन्या के साथ ! इसके अलावा दूसरी सभी स्त्रीयां मेरे लिये माँ-बहन !''

उस नर्तकी को देखते ही मेरे हृदय के तार झनझना उठे। मुझे ऐसा लगा कि इसे मैं कभी से पहचानता हूं, इसका सर्जन मेरे लिये ही हुआ है ! यदि यह है तो सब कुछ हैं।

मैं उस कन्या में पूरे विश्व के दर्शन कर रहा था। उसके प्रथम दर्शन से ही मैं अभिभूत हो गया था और अपने आप को भूल गया था। जिस दर्शन में हृदय का समावेश होता है, वहां से बुद्धि हट जाती है। इसलिये ही हम कहते हैं कि ''यह प्रेम में पड़ा है !'' प्रेम में पड़ना यानि दिमाग में से हृदय में पड़ना। दिमाग के पास तर्क होता है, कारण होते हैं। हृदय के पास तर्क या कारण कुछ भी नहीं होते, मात्र प्रेम होता है। इसलिये ही प्रेम में कोई ''कारण'' नहीं होता। ''कारण''होता है वहां प्रेम नहीं होता, सिर्फ स्वार्थ होता है। प्रेम करने से नहीं होता, वह हो जाता है। प्रेमी को कोई पूछे- '' तू क्यों प्रेम करता है ?'' इसके पास कोई जवाब नहीं होता। ''क्यों ? क्या लाभ ? किस लिए ?'' ये सभी भाषा बुद्धि की है, हृदय के पास ऐसी भाषा ही नहीं है। इसकी दुनिया ही अलग है। मुझे भी बहुत पूछते थे- ''ऐसी नर्तकी के पीछे क्यों पागल हुआ है ? इससे भी सुन्दर दूसरी बहुत सारी कन्याएं हैं।'' लेकिन ऐसे प्रश्नों का मेरे पास कोई जवाब नहीं था जिसमें कोई कारण नहीं होता ऐसा ही प्रेम सच्चा होता है, जन्मांतर के ऋणानुबंधवाला होता है।

उस नर्तकी के पीछे मैं फना होने के लिये तैयार हो गया था। पिताजी ने मुझे बहुत समझाया लेकिन मैं एक का दो नहीं हुआ। मेरे प्रेम की सच्ची कसौटी तभी हुई जब नर्तकी के पिता ने स्पष्ट कह दिया- ''हम तो नट के अलावा दूसरे किसी के साथ हमारी पुत्री ब्याहने वाले नहीं हैं।'' क्षणभर तो मैं हतप्रभ हो गया, क्या यह नर्तकी मेरे हाथ में नहीं आयेगी ? लेकिन दूसरी ही क्षण मेरे मन-गगन में विचार की बिजली चमक उठी यदि मैं नट बन जाऊं तो ! भले मैं जन्म से नट नहीं हूं, किन्तु कर्म से तो नट बन सकता हूं न ? फिर तो नर्तकी मुझे मिलेगी न ?

मैंने अपने विचार उस नट के सामने पेश किये तब उसने ठंडे कलेजे से कह दिया- आपकी बहुत ही इच्छा हो तो आ जाओ हमारे साथ। लेकिन याद रखना कि आपको नाट्यकला में प्रवीण होना पड़ेगा। गांव-गांव भटकना पड़ेगा। सर्दी-धूप ठंडी-गरमी इत्यादि कष्ट सहन करने पड़ेंगे। जीव सड़ासड़ के खेल खेलकर हमारी कला में एकदम पारंगत बनना पड़ेगा और महत्व की बात.... ऐसी कला से जब तुम किसी कला के मर्मज्ञ राजा को खुश करोगे और वह यदि अढलक धन देगा तो हम नर्तकी की आपके साथ शादी करेंगे।

अन्त में एक महत्व की बात सुन लो- बांस या रस्सी पर नाचते-नाचते अगर तुम गिर पड़े और तुम्हारे हाथ पैर टूट जाये, तुम अपंग बन जाओ तो भी हम नहीं ब्याहेंगे। ये सभी बिन्दु ध्यान में रखकर आना हो तो आओ।

मैं यह सभी कड़ी शर्तें पालने के लिये तैयार हो गया ! ऐसे करते करते मर जाऊंगा, फना हो जाऊंगा, लेकिन नर्तकी को लिये बिना चैन नहीं लूंगा- मेरे हृदय का दृढ़ पुकार था। नर्तकी को प्राप्त करते मृत्यु आ जाये तो मंजूर है, किन्तु बिना नर्तकी का जीवन मंजूर नहीं- यह मेरे रोम-रोम में से फूटती आवाज थी। बोलो, मेरे में और दीपक की ज्योति में जलकर

मर ने के लिये तैयार हो जानेवाले पतंगिये में कुछ फर्क है ? सचमुच ही आज मैं नर्तकी की प्रेम-ज्योति में जलकर मरने के लिये तैयार हो गया था।

मेरा उत्साह देखकर नटने मुझे साथ ले लिया। देखते-देखते मैं नटों की कला में कुशल हो गया। जब आप किसी वस्तु की या किसी विद्या की प्राप्ति के लिये अपना संपूर्ण अस्तित्व के साथ जुट जाओ तब शायद ही उसकी प्राप्ति में संदेह रह सकता है। कोई वस्तु नहीं मिले तो समझना कि अभी हम पूरी ताकत लगाकर नहीं कूदे हैं।

वर्षो निकलते मैं एकदम कला-निष्णात बना। वह निष्णातता प्राप्त करते-करते मुझे बहुत ही सहन करना पड़ा था ठंडी-गरमी, भूख-प्यास, मान-अपमान सब कुछ ! कला की सिद्धि, बिना साधना नहीं मिलती। लेकिन अभी तक उस सिद्धि पर किसी राजा की महोर छाप लगी नहीं थी। किसी राजा की महोर छाप और कृपा अत्यंत जरुरी थे। इसके लिये हम किसी कला मर्मज्ञ राजा की तलाश करते थे। आखिर हमारी नजर बेन्नातट के राजा पर ठहरी। उसे प्रसन्न करने के लिये मैंने बीड़ा उठाया।

राजमहल के विशाल प्रांगण में मेरा खेल शुरु हुआ। लोग तो चींटियों की तरह उमड़ पड़े थे। राजा स्वयं जहां प्रेक्षक हो वहां प्रजा क्यों बाकी रहेगी ? आज मैं भी उत्साहित था। पूरे दिल से मैं मेरी कला बताने लगा। मेरी प्रेयसी नीचे ढोल बजा रही थी और मैं बांस पर बांधी हुई रस्सी के उपर एक हाथ में त्रिशूल और दूसरे हाथ में तलवार लेकर नाच रहा था। इतने जोरशोर से नाच रहा था कि देखनेवाले को ऐसे ही लगे- ए गिरा.... अब गिरा.... तब गिरा.... लेकिन मैंने कला पर इतनी पकड़ जमा दी थी कि गिरने का बन ही नहीं सकता। यद्यपि थोड़ी-सी सावधानी मेरे सौ साल अभी पूरे कर दे वैसा था.... लेकिन सावधानी सतत संभालकर रखनी वही साधना है न ? रस्सी पर मेरा अद्भूत नृत्य देखकर लोग मुझ पर फिदा हो गये। ''वाह ! वाह ! अद्भूत ! अद्भूत !'' की आवाज और तालिओं गड़गड़ाहट से लोग अपना हर्ष व्यक्त कर रहे थे। कोई ऐसा प्रेक्षक नहीं था कि जो ताली मारता हो। कोई ऐसा सिर नहीं था जो आश्चर्य से डोलता न हो। कोई ऐसी आंख नहीं थी जो स्तब्ध होकर देखती न हो ! क्या बालक और क्या वृद्ध ? क्या युवती या क्या वृद्धा ? सभी को हृदय के हचकोरे चड़े थे।

मेरा दिलधड़क खेल पूरा करके मैं राजा के पास आया, बड़े ईनाम की आशा से नमस्कार करके राजा के पास खड़ा रहा.... लेकिन रे.... राजा के ठंडे जवाब ने तो मुझे जिंदा ही मार डाला। ''मेरा ध्यान तेरे नृत्य में था ही नहीं। फिर मैं कैसे तेरी कला की प्रशंसा कर सकता हूं ? तू फिर से करके दिखा।'' राजा का यह बेपरवा जवाब सुनकर मुझे तो इतना गुस्सा आया कि दो-चार सुना दूं। ''यदि तुम्हारा ध्यान नाच में नहीं था तो कहां था ? यहां देखने आये हो या सोने ? यदि ऐसा ही था तो पहले से ही कहना था न ? लोगों की इतनी ज्यादा तालियाँ पड़ने पर भी आपका ध्यान नहीं ? तुम राजा हो या हजाम ? कल मर्मज्ञ हो या बला मर्मज्ञ ?'' लेकिन ऐसा मैं कुछ सुनाना नहीं चाहता था, आये हुए मौके को गंवाना नहीं चाहता था। कुछ भी करके राजा को खुश करके नर्तकी को हस्तगत करने में ही मुझे रस था। इसके लिये नाराजगी का जहर मुझे पीना ही पड़ा।

नाराजगी की अल्प भी रेखा मुंह पर दिखाये बिना, प्रसन्नता का स्मित दिखाकर मैं पूरे उत्साह से फिर बांस पर चढ़ा। धबांग.... धबांग.... धबांग.... ढोल बजने लगे और मैं फिर नाचने लगा, जीव सटोसट का खेल करने लगा। फिर शाबाश.... शाबाश.... की आवाज लोगों में गूंजने लगी।

किन्तु ओह ! राजा के पास मैं गया तब फिर वहीं ठंडा जवाब ! मैं तो स्तब्ध ही हो गया। इस राजा को क्या कहना ? मैं देख रहा था कि सभी लोग इनाम देने के लिये तैयार थे, परन्तु राजा प्रारंभ न करें वहां तक कौन दे सकता हैं ?

(आगे और भी है...!)

असली पारस

एक राजा के विषय में लोग बात करते थे। हमारा राजा ''पारस'' जैसा है। हमारे राजा की बराबरी करें वैसा इस दुनिया में कोई राजा नहीं है।

एक परदेश से आये हुए मुसाफिर ने यह बात सुनी। वह बुद्धिमान था। उसने अपने हाथों में लोहे के मोटे कड़े पहन लिये और राजा को मिलने गया और राजा के शरीर को अपने कड़े लगा-लगाकर कड़े देखने लगा। राजा ने पूछा- क्या करते हो ? उसने कहा- राजन ! मैंने सुना है आप पारस हो और पारस के स्पर्श से लोहा सोना बनता है। मैं पारस को लोहा लगाकर देख रहा हूं कि आप असली पारस है या नहीं ! राजा खुश हो गया और उसे असली सोने के कड़े देकर बिदा किया।

विराट विश्व विज्ञान

*इन्द्रचन्द्र दुधेड़िया जलगांव

विषय प्रवेशः-

मानव जाति जिस पृथ्वी पर रहती है वह विराट विश्व का एक छोटा सा हिस्सा है । विराट विश्व विज्ञान (Cosmology)में इसकी निर्मित रचना, बनावट आदि के संबंध में जानकारी मिलती है। इस विज्ञान का परिचय करते हुए हम यह जानेंगे और समझेंगे कि- जैन दर्शन मनुष्य के आध्यात्मिक विकास का विज्ञान होते हुए भी वैज्ञानिक दृष्टिवाला तत्वदर्शन है । अतः हम जानेंगे कि भगवान श्रीमहावीर परम वैज्ञानिक है। विराट विश्व संबंधी उनका विधान उनकी वैज्ञानिकता का उत्तम उदाहरण है।

अस्तित्व निर्मितः-

जैन दार्शनिक दृष्टि : भगवान श्रीमहावीर का सूत्र स्वयंसिद्ध सिद्धांत (Axiom) है, अस्तित्व है। विराट विश्व अर्थात् अस्तित्व अपने आप में है । यह स्वप्रतिष्ठित है, स्वयंभू है। किसी के द्वारा निर्मित नहीं है। वह अनादि-अनंत है। इसका कोई प्रारंभ नहीं है, न ही अंत है। यह शाश्वत, नित्य एवं अनश्वर है । यह जैन तीर्थकरों की दार्शनिक/ आध्यात्मिक दृष्टि है।

वैज्ञानिक दृष्टिः-

आधुनिक विज्ञान के अनुसार विराट विश्व की निर्मित 13.8 अरब वर्षों पूर्व हुई है। प्रश्न उठता है कि उससे पहले क्या था ? फिर उस पहले से पहले क्या था ? यह प्रश्नों की पंक्ति अंतहीन है। इसका कोई उत्तर विज्ञान के पास नहीं है। परन्तु सर्वज्ञ जैन तीर्थकरों ने गहन मंथन कर के इस समस्या का समाधान हजारों वर्षो पूर्व एक उच्च गणितीय विधान द्वारा किया- विश्व अनादि काल से है और अनंत काल तक रहेगा।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार विश्व की निर्मिति में ईश्वर की कोई भूमिका नहीं है। अल्बर्ट आइन्स्टिन ने कहा है- ''नैसर्गिक नियमों द्वारा विश्व की गतिविधियां इस प्रकार चलती है कि ईश्वर को करने के लिये कुछ शेष नहीं रह जाता।''

अस्तित्व के मूल द्रव्यः-

जैन दार्शनिक दृष्टिः भगवान श्रीमहावीर का इस संबंधी विधान भी स्वयंसिद्ध सिद्धांत (Axiom) है- ''अस्तित्व छह द्रव्यों से बना है, न एक कम, न एक अधिक।'' ये द्रव्य है- जीवास्तिकाय, पुग्दलास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय एवं काल।

मानव के कारण ही विश्व को जानने की इच्छा होती है। अतः वह प्रथम द्रव्य के रुप है। इसे जैन दर्शन में जीवास्तिकाय कहा गया है। अपने को पहचानने के पश्चात मानव ने अपने उपयोग की वस्तुओं को समझने का प्रयास किया। ये वस्तुएं दूसरे द्रव्य के रुप है। इसे जैन दर्शन में पुग्दलास्तिकाय कहा गया है । विश्व की सारी गतिविधियां इन्हीं दो द्रव्यों से है। तदनंतर मानव के मन में प्रश्न उभरा कि ये सब प्राणी एवं वस्तुएं स्थान कहां पाते है । जैन दर्शन द्वारा उत्तर मिला- ''आकाशास्तिकाय'' में। मानव ने यह अनुभव किया कि वह रुकता भी और घूमता भी है। प्रश्न उठा- यह रुकना एवं घूमना कैसे संभव होता है। उत्तर मिला- घूमने में धर्मास्तिकाय एवं रुकने में अधर्मास्तिकाय द्रव्य सहयोगी होते हैं। एक ओर वास्तविकता मानव के अनुभव में आयी। उसने देखा मानव के शिशु, किशोर, युवा, वृद्ध आदि भिन्न-भिन्न रुप होते है नया वल्कल/वस्त्र पुराना हो जाता है निश्चित समय पर प्रकाश एवं अंधेरा होता है। इन सबका कारण क्या है ? जैन दर्शन का उत्तर मिला-''काल''।

विराट विश्व की गतिविधियों के लिये ये छह द्रव्य आवश्यक है। इनमें से एक भी कम हो तो विश्व की गतिविधियां संभव नहीं और एक से अधिक हो तो विश्व में अनियमितता होगी जिससे अव्यवस्था का साम्राज्य रहेगा।

वैज्ञानिक दृष्टि:-

आधुनिक विज्ञान ने भी छह द्रव्यों को प्रस्तुत किया है। विज्ञान का पहला तत्व जीव है। इसका स्वरुप भौतिक है। इस आधार से जीव विज्ञान, मनोविज्ञान, आरोग्य विज्ञान चिकित्सा विज्ञान, शल्यक्रिया विज्ञान आदि विभिन्न शाखाओं का विकास हुआ है। आध्यात्मिक दर्शन के मूल द्रव्य आत्मा को आधुनिक विज्ञान में स्थान नहीं था परन्तु अब धीरे-धीरे स्थिति में परिवर्तन हो रहा है।

विज्ञान का दूसरा द्रव्य ''पदार्थ'' है। अणु से लेकर आकाशगंगाओं तक सभी वस्तुओं का इसमें समावेश है। इसी व्याख्या बहुत ही सीमित है। इसके विपरीत जैन दर्शन का पुग्दल बहुत गहन अर्थ लिए हुए है। वह भार के साथ ऊर्जा का भी संकेत देता है। आइन्स्टिन का भार-ऊर्जा समीकरण इस

खाई को पाटने में उपयुक्त है। विशेष बात यह है कि जैन दर्शन के ''भारहीन कण'' को विज्ञान ने अब स्वीकार किया है।

विज्ञान का तीसरा द्रव्य आकाश है। इसकी स्पष्ट व्याख्या नहीं की गई है। जैन दर्शन का आकाश स्वप्रतिष्ठित है, स्वयंभू है और सभी अन्य पांच द्रव्यों को स्थान उपलब्ध कराना उसका कार्य है। जैन दर्शन का आकाश अनादि और अनंत है, विज्ञान का आकाश 13.8 अरब वर्षों पूर्व निर्मित हुआ माना गया है। चौथा और पांचवां द्रव्य क्रमशः ईधर (काल्पनिक द्रव्य) एवं गुरुत्व है। सौ वर्ष पूर्व आइस्टिन द्वारा ईधर को नकारा गया था। पश्चात वैज्ञानिकों द्वारा उसके गुण जानने का प्रयास किया गया तो मालूम हुआ कि ईश्वर के गुण परस्पर विरोधी है। यह दर्शाता है कि विज्ञान को गति में सहयोगी द्रव्य की खोज है। यह जैन दर्शन के मूल द्रव्य धर्मास्तिकाय की ओर बढ़ते कदम सूचक है।

आधुनिक विज्ञान का गुरुत्व ''रुकना'' स्थिति का कारक बल माना गया है परन्तु वास्तव में उसे जैन दर्शन के अधर्मास्तिकाय की भांति केवल सहयोगी होना चाहिये। न्यूटन के गुरुत्व को आइन्स्टिन द्वारा नकारा गया था।

निष्कर्ष:- जैन दर्शन एवं आधुनिक विज्ञान के द्रव्यों का यह तुलनात्मक अध्ययन बताता है कि जैन दर्शन श्रेष्ठ वैज्ञानिक दर्शन है।

पांडित्य विरुद्ध आध्यात्मिकता

अध्यात्म पर कोई प्रवचन करे, या लेख-निबंध लिखे, सिर्फ इतने से ही उसको आध्यात्मिक नहीं मान लेना। अध्यात्म पर प्रवचन करना अलग बात है और अध्यात्म को जीना तद्दन अलग बात है।

प्रवचन, लेखन आदि का मूल पांडित्य है। पंडित पुरुष ये सब आसानी से कर सकते हैं। परन्तु अध्यात्म के बिना सभी शास्त्र, सभी लेख और प्रवचन भाररुप है।

अध्यात्म के बिना उसका कोई फल नहीं। अध्यात्महीन पंडित का जीवन शुष्क होता है, अंदर से वह दुःखी होता है। उपा.म. तो यहां तक कहते हैं कि धनवान व्यक्तिओं को पुत्रादि परिवार, बंगला आदि संसार के कारण है, उसी तरह अध्यात्महीन पंडितों के शास्त्र संसार का कारण है। सुनते ही हम चमक उठे ऐसी बात है। सच न ? अगर गहराई से विचार करें तो मालूम पड़ेगा कि उपा.म. वास्तव में सच्च ही कह रहे हैं। स्वयं एक पंडित होने पर भी शुष्क पांडित्य के वे प्रखर विरोधी थे। पैसेवाला व्यक्ति तिजोरी में धन इकट्ठा कर करके खुश हो रहा है। शुष्क पंडित भी अपनी खोपड़ी में ''ज्ञान'' इकट्ठा कर करके खुश हो रहा है। दोनों आभिमानिक सुख में डूबे हुए हैं। पैसेवालों का धन अभिमान पैदा कराता है उसी तरह शुष्क पंडितों का ज्ञान भी अभिमान ही पैदा कराता है।

पंडित प्रवचनादि प्रवृत्ति करते हैं तो भी दूसरों को प्रभावित करने के लिये, अपनी अहंता को पुष्ट करने के लिए, जबकि आध्यात्मिक पुरुष की प्रवचनादि प्रवृत्ति सिर्फ करुणा के कारण ही होती है। कभी ऐसा भी होता है कि आध्यात्मिक पुरुष को प्रवचन करना नहीं आता हो, उसकी भाषा भी ग्रामीण हो, व्याकरण की भी शुद्धि न हो ऐसा भी हो सकता है। उधर उस पंडित की वाणी सुसंस्कृत हो, पाडित्यपूर्ण हो, लेकिन उससे क्या होगा ? एक हष्ट-पुष्ट व्यक्ति आरोग्य के विषय को जानता है परन्तु बोल नहीं सकता। दूसरा रोगी व्यक्ति आरोग्य के विषय को अच्छी तरह बोल सकता है, लेकिन अपथ्य आदि आराम से खाता है, तो दोनों में भाग्यशाली कौन ?

ऐसे बना संत...!

एक दादु नाम का संत हो गया है। उसके जीवन में कैसे परिवर्तन आया वह उसके शब्दों में- मैं जब दुकानदार था उस समय भी मेरे एक गुरु महाराज थे। मैं उनका बहुत सम्मान करता था। एक दिन मैं हिसाब-किताब लिखने में व्यस्त था। बाहर पानी बरस रहा था। दुकान में चारों ओर सामान भरा पड़ा था। गद्दी पर एक व्यक्ति के बैठने जितना ही स्थान था। मेरे गुरु महाराज उस समय किसी काम से आये, पर मैं तल्लीन था लिखने में जिससे मैं उनके आने की आहट भी न पा सका। वे अंदर जगह न देखकर बाहर वर्षा में भीगते रहे। थोड़ी देर में वर्षा ने जोर पकड़ा तब आवाज से चौंककर दुकान के बाहर नजर गयी तो गुरुदेव को भीगते खड़े देखकर शीघ्र खड़ा हुआ और उनसे उनकी ओर ध्यान न देने के लिये क्षमा मांगी।

गुरुदेव ने हंसते हुए कहा- बेटे, मैं तो थोड़ी देर से ही इंतजार करता था पर ईश्वर कितने वर्षो से तेरा इंतजार कर रहा है कि दादू कब मेरी ओर ध्यान दें और मुझे अंदर बुलाये। मेरे हृदय में ये वचन उतर गये और मैं संत बन गया। आपके हृदय में यह वचन कब उतरेंगे ?

पहली नजर में गुरुवर्या को जीवन अर्पित कर साध्वी दमिताश्री नाम पाया

✻डॉ.सुभाष जैन

पंजाब के अमृतनगर के समीप पट्टीनगर सागर समुदाय की प्रथम पंजाबी साध्वी का अर्पण करने के गौरवपूर्ण इतिहास से परिपूर्ण है जिस पट्टी नगर ने दमयंती को सागर समुदाय की श्रमणी बनने के लिये भाव जाग्रत किये वही पूज्य सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या दमिताश्रीजी म.सा. के नाम से पंजाब से सागर श्रमणी के नींव की प्रथम ईट है। आपश्री के प्रेरक आदर्श पर चलकर आज उनका भरापूरा लगभग 20 शिष्य-प्रशिष्या का गुरुकुल मालवा की श्रमणी के रुप में अद्भूत शासन प्रभावना का रहा है। निश्चित ही आप मालवा में सागर समुदाय की शान है। सांसारिक जीवन में कहीं कोई विषमता नहीं, कहीं कोई संघर्ष नहीं, कहीं कोई किसी प्रकार का संकट नहीं था बल्कि आपका लौकिक जीवन धर्म भावना से भरा हुआ रहा है। पिता श्री लालचंद्रजी और माता श्री शकुन्तला बहन के चार पुत्रों और चार पुत्रीयों से सम्पन्न परिवार धर्म आराधना से गहराई से जुड़ा हुआ रहा है। पट्टी नगर में स्थित दादाश्री पार्श्वनाथ प्रभु का जिन मंदिर इस बात का साक्षी है कि दमयंती को बचपन से ही धर्म-संस्कार से युक्त परिवार का संरक्षण प्राप्त हुआ और उसी से धर्म भावना से गहरी आस्था और विश्वास का संबल जीवन को संवारने में सहायक बना।

युवावस्था में जब लड़कियां 17-18 वर्ष की अवस्था में होती है तब परिवार में उनकी शादी-विवाह की बातें होने लगती है परन्तु दमयंती के भाव तो कुछ और ही थे। बचपन की एक गहरी सहेली का साथ उन्हें धर्म के प्रति समर्पित किये हुए थे साथ ही दोनों सहेलियों में आपस में साधु-साध्वीजी के बारे में चर्चा भी चलती रहती थी, दोनों के मन में यह भाव अनायस ही जाग्रत हो गया था कि- हम दोनों में दीक्षा ही लेंगे। धीरे-धीरे घर परिवार में दमयंती की दीक्षा लेने की भावना से सब परिचित होने लगे थे। आपके चाचा श्री जगदीशजी जो स्वयं अच्छे श्रावक के रुप में जाने जाते थे, उन्होंने दमयंती की भावना को समझा और उसे प्रोत्साहित भी किया। दमयंती के श्रमणी बनने के भावों को सुरक्षा देनेवाला एक मजबूत कवच श्री जगदीशजी चाचा के रुप में उन्हें मिल गया था। दीक्षा भावना को चाचा से परिपक्वता मिलने लगी थी लेकिन उसका कोई आकार-प्रकार अभी नहीं बना था पट्टी नगर मै साधु-साध्वी भगवंतों का अधिक आगमन-निर्गमन भी नहीं होता था, जीवन की गाड़ी आगे चल रही थी। मेरा मानना है कि जीवन-मृत्यु के बीच जिस प्रकार सांसों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है उसी प्रकार नारी की भूमिका भी धर्म संस्कार, संस्कृति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण होती है। जैन संस्कृति की उन्नति में भी नारी का महत्वपूर्ण योगदान है, सुबह के प्रतिक्रमण में बोली जाने वाली भरहेसर की सज्झाई में आने वाले जैन जगत की महान नारियों के नाम हमारे लिये प्रेरणास्पद है। इसलिये तो वे नित्य स्मरण में रखनेवाले है। 56 दिक्कुमारीयां 16 विद्यादेवीयों के साथ अनेक अन्य देवियां है जिनका योगदान सम्पूर्ण जगत के लिये आदरणीय है। अहिंसा की नींव पर निर्मित वैराग्य के राजमहल को बनाने में, सुरक्षित रखने में श्रमणी भगवंतों का, श्राविकाओं का योगदान सदैव यादगार बना रहेगा जिनके संस्कारों ने उन्हें वैराग्य के पथ पर आगे बढ़ा दिया उन सभी को हम हृदय से नमन करते हैं।

समय, काल परिस्थितियों के अनुरुप घटनाओं का सर्जन होता है, यही काम काल भी कर रहा था। एक अजीब संयोग बन गया था, कोई सोच भी नहीं सकता था कि- काल के गर्भ क्या छिपा हुआ है। सागर समुदाय को श्रमणी भगवंतों का अद्भूत विरासत प्रदान करनेवाली वरिष्ठ साध्वीवर्या पूज्या श्री इन्दुश्रीजी महाराज का अपने गुरुकुल की शिष्या-प्रशिष्या का वर्षीतप का पारणा करने के लिये हस्तिनापुर आगमन हुआ था। शासन की गरिमामय के अनुसार भव्य तपोत्सव के साथ पारणा सम्पन्न हुआ उसके बाद आपश्री का सम्पूर्ण गुरुकुल के साथ दिल्ली आगमन हुआ।

अच्छे के साथ बुरी खबर का भी विस्तार होते देर नहीं लगती है पूज्याश्री इन्दुश्रीजी महाराज के दिल्ली आगमन की एक अच्छी खबर पट्टीनगर में भी पहुंचाई गई थी वैसे दमयंती का परिवार शासन के समाचारों से अवगत रहता था, चाचा श्रीजगदीशजी भी सतर्क रहते थे निश्चित हुआ कि- साध्वी भगवंतों के दर्शन वंदन के लिये दिल्ली चला जाये, परिवार के सदस्यों चाचा आदि के साथ दमयंती भी दिल्ली जाने को तैयारी हो गई, दिल्ली पहुंचने पर पूज्याश्री इन्दुश्रीजी को दर्शन वंदन किया। चाचाजी बहुत प्रभावित हुए, उन्होंने दमयंती को बोला कि- इन्हीं साध्वीजी के पास दीक्षा लेना चाहिये, मुझे इनका जीवन चरित्र, आचरण उच्चकोटी का लग रहा है, आपस में इस तरह की बात चल रही थी।

<u>और गुरु के दर्शन हो गयेः-</u>

उपाश्रय में बैठकर साध्वीजी से बात हो रही थी कि- उपाश्रय में पात्रा लिये गोचरी लेकर पूज्य वरिष्ठसाध्वीवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी का आगमन हुआ, दमयंती की नजर उनसे मिली वंदन किया, गुरुवर्या ने गर्दन नीचे कर वंदन की सहमति प्रदान की,बस पहली नजर में ही दमयंती पूज्य हेमप्रभा श्रीजी के प्रति अहोभाव से भर गई और उन्हें गुरु के रुप में स्वीकार कर लिये। चाचा श्री जगदीश को इस बात से अवगत कराते हुए बोल दिया कि- **दीक्षा लूंगी तो इन्हीं के पास यही मेरी गुरुवर्या बनेगी बस निर्णय हो गया था। समर्पण भाव प्रकट हो गया था फिर तो आगे बातचीत हो गई।**

इसके बाद पूज्या श्री इन्दुश्रीजी का विहार मालवा की ओर हो गया बाद में सभी साध्वी भगवंत देवास पधारे यहां से दमयंती को पट्टी समाचार भेजकर आने को कहा, चाचा श्रीजगदीशजी दमयंती को साथ लेकर देवास आये, चार-छह दिन रुक कर श्री जगदीशजी लौट गये। पन्द्रह दिन हुए कि दमयंती का मन बैचेन हो गया, पट्टी लौट जाने की बात सभी को बतला दी कि -मैं जाउंगी, मुझे यहां अच्छा नहीं लग रहा है, कुछ दिन रुकने की बात पर सहमति बन गई। एक महिने में तो दमयंती को मन भाव सब बदल गया कि- अब वापस नहीं जाना अब तो दीक्षा ही लेनी है। पट्टी समाचार दिये चाचा देवास आये बात हुई तो चाचा के साथ दमयंती भी पट्टी लौट गई, घर परिवार में दीक्षा की चर्चा होने लगी।

दमयंती की दीक्षा के लिये परिवार में कोई विरोधाभास नहीं था सिर्फ बड़े भाई चाहते थे कि पहले मेरी शादी हो जाये उसके बाद तुम दीक्षा लेना पर ऐसी परिस्थिति नहीं बनी और बड़े भाई की शादी के पहले ही दीक्षा हो गई इस कारण नाराजी से बड़े भाई दीक्षा महोत्सव में सम्मिलित नहीं हुए थे।

पत्र व्यवहार आदि से दीक्षा का कार्यक्रम निश्चित हो गया, दीक्षा मगसर सुदी-6 के दिन सिरपुर महाराष्ट्र खानदेश में पूज्यपाद मालवोद्धारक आचार्य भगवंत श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी की निश्रा में दीक्षा महोत्सव सम्पन्न हुआ था। इस बात को लगभग 60-61 वर्ष हो गये है। दीक्षा के बाद का नाम हम सब जानते है, अलौकिक व्यक्तितत्व की धनी विलक्षण महिमायुक्त धार्मिक आध्यात्मिक उनयन में महत्ता योगदान देनेवाली साध्वीवर्या दमिता श्रीजी म.सा.। आपका संयम जीवन भी वंदनीय, अर्चनीय एवं पूज्यनीय होने के साथ प्रेरणास्पद भी है। आपके गुरुकुल से 20 शिष्य-प्रशिष्या का परिवार है जो परमात्मा के शासन की जोरशोर से प्रभावना कर रहे है। पूज्यपाद मालवोद्धारक आचार्य भगवंत श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा और वर्तमान गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा आपके संयम जीवन को बड़े गर्व और गौरव के साथ देखते और जब भी शासन सेवा के कार्य में साथ रहने का संयोग बनता तो वे कहते है कि- **पंजाब से हमारी एक मात्र साध्वीजी है दमिताश्री।** उच्च चारित्र धर्म की पालना करनेवाली साध्वीवर्याश्री के चरणों में श्रद्धावनत् नमन के साथ उनके दीर्घ संयम जीवन की बहुत-बहुत अनुमोदना।

सरलता और समता

अध्यात्म में आगे बढ़ने के लिये क्या करना चाहिये ? बहुत लोग ऐसे प्रश्न पूछते हैं। ऐसे लोगों को पूछना चाहिये- अध्यात्म में आगे बढ़ने की बात जाने दो। सर्व प्रथम अध्यात्म में आपका प्रवेश हो गया ? प्रवेश ही न हुआ हो तो आगे बढ़ने की बात ही कहां रही ? अध्यात्म का प्रारंभ कहां से होता है ?

सरलता से। सरलता प्राप्त करने के लिए दंभ को देशनिकाला देना होगा। दंभ मतलब दिखावा करने की वृत्ति ! खुद में न हो- ऐसे गुण दिखाने की इच्छा ! ''मैं आध्यात्मिक हूं। लोग मुझे आध्यात्मिक पुरुष के रुप में जानते हैं। तो मुझे अमुक तरह से ही जीना चाहिये।'' ऐसी वृत्ति भी दंभ की और ले जा सकती है। अगर सचमुच अध्यात्मवेत्ता बनना है तो दूसरों को दिखाने से क्या प्रयोजन है ? अध्यात्म-सुख स्व में पैदा होता है, स्व संवेद्य है। दूसरे हमको ''आध्यात्मिक'' कहे इतने से हम कोई आध्यात्मिक नहीं बन जाते। अध्यात्म सर्व प्रथम सरल बनने के लिये कहता है। अध्यात्म की गली में टेढ़े-मेढ़े का नहीं, सरल का ही प्रवेश हो सकता है। इसलिए ही अध्यात्मसार में पू.उपाध्यायजी म. ने अध्यात्म को **''दम्भपर्वतदम्भोलिः''** कहा है। मतलब कि अध्यात्म दंभ के पर्वत को तोड़ने में वज्र समान है। अध्यात्म में प्रवेश तो हो गया, लेकिन वह पचा या नहीं ? इसका सबूत क्या ? अध्यात्म परिपक बनने पर जीवन कैसा बनेगा ? समतामय ! साधक की समता अंदर विकसित हुए अध्यात्म की परिचायिका है। इसलिए ही अध्यात्म को **''सोहार्दाम्बुधि चन्द्रमाः''** कहा है। अध्यात्म समता-सागर को उल्लसित करने में चन्द्र समान है। सरलता और समता- ये दोनों साधक के साथी है। या तो यों कहो कि- अध्यात्म-गगन में उड्डयन करते साधक पक्षी की ये दोनों पंख हैं।

पुण्य नामधन्य पूज्य साध्वीवर्या श्री दमिताश्रीजी म.सा.

जीवन झलक

नाम - दमयंती
जन्म दिवस - मागसर सुदी-6 विक्रम संवत 1998-1999
पिता - श्री लालचंदजी
भाई श्री - चार भाई
बहनें - चार बहन
संसारी नाम - दमयंती
व्यवहारिक अभ्यास- मेट्रिक तक
संसारी नाम - पट्टी गांव अमृतसर (पंजाब)
चतुर्थ व्रत स्वीकार- मागसर सुदी-6 - वर्ष याद नही
दीक्षा तिथि - मगसर सुदी-6, विक्रम संवत 2018
दीक्षा के समय वय -19 वर्ष
दीक्षा स्थल - सिरपुर खानदेश, (महा.)
बड़ी दीक्षा - उज्जैन (म.प्र.)
दीक्षा प्रदान गुरुदेव- मालवोध्दारक आचसर्येव श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा
गुरुदेव श्री - वरिष्ट साध्वीवर्या श्री हेमप्रभाश्री महाराज
प्रथम शिष्य - निर्मलयशा, निर्मलगुणा,मुक्तिदर्शा, मुक्तिप्रिया,ऋतुप्रिया, नयवर्षा
कुल शिष्य, प्रशिष्य आज्ञावर्ती परिवार- 20
गृहस्थ पर्याय - 19 वर्ष
कुल संयम पर्याय - 60 वर्ष
कुल आयुष्य - 79 वर्ष
प्रथम चार्तुमास - उज्जैन (म.प्र.)
वर्तमान चार्तुमास - उज्जैन (म.प्र.) 2021
कुल चार्तुमास - 61
विशेष धार्मिक कार्य-7 उपाश्रय एवं 3 मंदिर जी का निर्माण
भाषा ज्ञान - हिन्दी, गुजराती, संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी
विहार यात्रा - गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश,महाराष्ट्र, बंगाल, बिहार, पंजाब, कर्नाटक, तमिलनाडु
तपाराधना - 16, 8, 3,आदि अनेक तपस्याबीस स्थानक ओली नवपद- 31 वर्धमान तप

आओ एक नयी दुनिया बसाएं

✻ ललित गर्ग, दिल्ली

आज का मनुष्य भूलभूलैया में फंसा है। यदि देख जाए तो संसार का विस्तार यानी सुविधावादी और भौतिकवादी जीवन शैली एक प्रकार की भूलभूलैया ही है। भोग के रास्ते चारों ओर खुले हुए है। धन, सत्ता, यश, भोग- इन सबका जाल बिछा है और यह जान इतना मजबूत है कि एक बार आदमी उसमें फंसा कि निकल नहीं पाता। जिस प्रकार दलदल में फंसा मनुष्य उसमें से निकलने के लिये जितना प्रयत्न करता है, उतना ही और फंसता जाता है, यही स्थिति वर्तमान युग में मनुष्य के साथ है ।भोग-विलास, सांसारिक मायाजाल आदि की रचना मनुष्य स्वयं करता है और स्वयं ही उसमें फंसता जाता है। उसकी अपनी बनाई हथकड़ी-बेड़ी उसी के हाथ पैरों में पड़ जाता है। जब विवेक नष्ट हो जाता है तो ऐसा ही होता है। रॉबर्ट ब्राउनिंग- ''जो स्थिति आपके दिमाग की है, वही आपकी खोज की है- आप जिस चीज की इच्छा करेंगे, वह पा लेंगे।

दिल्ली के बुराड़ी में एक ही परिवार के ग्यारह लोगों की मौत ने सबको दहला दिया है, जहां सार्थक जीवन जीने की ओर सोच की मौलिक दिशाएं उद्घाटित नहीं होती वहां इंसान में जड़ता और नैराश्य छा जाता है। वह दुनिया की अच्छी-बुरी धाराणाओं के आधार पर करता है।

दिल्ली के बुराड़ी में एक ही परिवार के ग्यारह लोगों की मौत ने सबको दहला दिया है, जहां सार्थक जीवन जीने की ओर सोच की मौलिक दिशाएं उद्घाटित नहीं होती वहां इंसान में जड़ता और नैराश्य छा जाता है। वह दुनिया की अच्छी-बुरी धारणाओं के आधार पर अपने जीवन की दिशाएं तय करता है, अपने दिल की आवाज-भीतर की ध्वनि और स्वतंत्र सोच का इस्तेमाल करता। ऐसे व्यक्ति असंतुष्ट कामनाओं एवं दमित आकांक्षाओं के कारण मानसिक रोग से ग्रस्त हो जाते हैं। उनका आत्मविश्वास एवं मनोबल कमजोर पड़ जाता है।

आज हमारे देश का ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया का आदमी दिग्भ्रमित हो गया है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि कुंए में भांग पड़ गई है, पर ऐसा नहीं है। सभी देशों में विवेकवान लोग भी है, लेकिन उनकी संख्या सीमित है। ज्यादातर लोग तो अपनी संकीर्ण स्वार्थ को देखते हैं और उसी की पूर्ति में जीवन व्यतीत कर देते हैं। वे सभ्य होने का दावा करते हैं, लेकिन उनके भीतर बैठा पशु आज भी जीवित और जागृत है। वही मनुष्य को ऐसे कर्म करने को प्रेरित करता है, जो मनोवांचित नहीं है।

यहां मुझे गणि राजेन्द्र विजय के एक प्रवचन का स्मरण हो आया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि- हम लोग जो बाहर खोजते है, वह हमारे अंतर में विद्यमान है, लेकिन हम उसे देख नहीं पाते। उन्होंने बड़े पते की बात कही है। दुनियादारी का नशा शराब या मादक द्रव्यों के नशे की भांति होता है। वह नशा तब छूट सकता है, जबकि हम पर उससे भी कोई तेज नशा चढ़े। वह तेज नशा ''अध्यात्म'' का है। अध्यात्म ही वह आधार है जो मनुष्य को स्वयं से स्वयं का साक्षात्कार करवाता है। मनुष्य के भीतर जो अमृत-घाट विद्यमान है, उस पर पड़े आवरण को हटाता है, क्योंकि वहीं तो वास्तविक आनन्द का स्रोत है।

इस आनन्द के स्रोत से रु-ब-रु होने के लिये जरुरी है व्यवहार और संबंधों का परिष्कार। व्यवहार और संबंधों के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण अपेक्षित है। जैन दर्शन का बहुत प्रसिद्ध शब्द है सम्यक् दर्शन, सम्यक् दृष्टिकोण। जब सम्यक् दृष्टिकोण होता है तो सब कुछ ठीक लगता है, जिसके फलस्वरुप जीवन दुःख से मुक्त होकर सुख से ओतप्रोत होता है। जहां दृष्टिकोण भ्रामक हो गया, अच्छी चीज भी बुरी लगने लग जाती है। उस समय वह अच्छाई को देख नहीं सकता। सम्यक् दृष्टि व्यक्ति बुराई में भी अच्छाई देखता है, दुःख में भी सुख का अनुभव करता है। इसलिय हमें सम्यक् दृष्टिकोण पर ध्यान देना है।

हमारा व्यवहार अच्छा हो, व्यवहार मधुर हो, व्यवहार कटु न हो, व्यवहार सुखद हो, दुःखद न हो आदि-आदि प्रश्नों पर विचार करें तो उसकी पृष्ठभूमि में सबसे पहले। सम्यक् दृष्टिकोण और मिथ्या दृष्टिकोण पर विचार करना चाहिये। सम्यक् दृष्टिकोण यानी नकारात्मक सोच है तो फिर सब अच्छा नहीं होता।

डिजरायली ने एक बार कहा था- ''जीवन बहुत छोटा है और हमें संतोषी नहीं होना चाहिये।'' हमें आनन्द के स्रोत की खोज करते रहना चाहिये। आनन्द के व्यवहार की चर्चा करते समय ईर्ष्या, कलह, निंदा, चुगली, अपवाद आदि-आदि जो समस्याएं है, जो धार्मिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि मानवीय दृष्टि से भी पाप है मानसिक रोग पैदा करने वाली है और संबंधों को बिगाड़ने वाली है इनके बारे में कुछ सोचना है। इन पर सही चिंतन तब होगा जब सबसे पहले हमारा दृष्टिकोण सम्यक् होगा। दृष्टिकोण सम्यक् होगा और इन स्थितियों का विश्लेषण करेंगे तो ईर्ष्या में नहीं आयेंगे। अन्यथा ईर्ष्या स्वाभाविक है। जब यह धारणा है कि सबको समान काम देना चाहिये, सबके साथ समान व्यवहार होना चाहिये, तब ईर्ष्या होना स्वाभाविक है। मेरे साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया, उसके साथ व्यवहार किया। मन में अप्रियता पैदा हो गई, एक विद्वेष पैदा हो गया। किन्तु जब यह स्पष्टता है कि समानता एक अलग बात है, व्यवहार बिल्कुल अलग बात है तब यह समस्या नहीं होती।

संकुचित दृष्टिकोण अपने अहं की प्रबलता के कारण बनता है। इतना अहं प्रबल है कि अपना ही स्थान है, उस जगह दूसरे का कोई स्थान नहीं है। दृष्टिकोण सीमित हो जाता है, संकड़ा हो जाता है। उदार दृष्टि वाले व्यक्ति में सौहार्द भावना होती है। व्यवहार का बड़ा सूत्र है, सौहार्द भावना। अगर हम व्यवहार कौशल की खोज करें, उनके सूत्र खोजें और सौहार्द भावना के मर्म को समझ लें तो हमारा व्यवहार काफी अच्छा हो सकता है। सौहार्द भावना बहुत पर्याप्त है व्यवहार परिष्कार के लिये। जबकि ऐसा नहीं होता, क्योंकि हर आदमी अपनी सोच को सही मानता है। कहीं कोई अपने आग्रह को ढीला नहीं छोड़ता। औरों की बात को आदर नहीं देता। यही वजह है कि औरों के सुझाव, सीख, आज्ञा, प्रेरणा, उपदेश सभी अच्छे होते हुए भी हमारे लिये उनका कोई मूल्य नहीं। न तो अपने अस्तित्व की सीमा को छोटा कर सकते हैं और न औरों के अहसानमंद होकर जी सकते हैं। यही बड़प्पन की मनोवृत्ति अहं को झुकाती नहीं। जबकि सौहार्द भावना हमें झुकाना सिखाती है। इसी से नये आइडिया जा सकते हैं। जैसा कि ब्रोसनन ने एक बार कहा था- ''किसी को भी कोई आइडिया आ सकता है और बेहतरीन आइडियाज आपके आसपास ही होते हैं।

सौहार्द भावना का तात्पर्य है-दूसरे की विशेषता देखकर प्रसन्नता जाहिर करना, दूसरे की विशेषता को प्रोत्साहन देना और दूसरे की विशेषता को पवन बनकर जनता तक पहुंचाना। जैसे हवा फूलों की सुगंध को दूर तक पहुंचाती है वैसे दूर तक पहुंचाना, यह एक उदार दृष्टिकोण का कार्य है और यही मानवता की ज्योतिर्मय ऊर्जा है। मानवता का दीप बूझ जाता है तो अंधकार का राज्य हो जाता है। तब मनुष्य को भले-बूरे कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, सार-असार, पवित्राता-अपवित्राता का ज्ञात नहीं रहता। आज दुनिया त्रस्त है, परेशान है क्योंकि वह इसी स्थिति से गुजर रही है।

सच यह है कि संसार में सुख भी है और दुःख भी। दोनों की अनुभूति एक-दूसरे के अस्तित्व के कारण ही होती है। दिन का महत्व इसलिये है कि रात आती है और रात का महत्व इसलिये है कि रात के बाद दिन आता है। लेकिन सच्चाई यह है कि सुख सब चाहते हैं, दुःख कोई नहीं चाहता। यही कारण है कि व्यक्ति दुःख निवारण का मार्ग खोजता है, ताकि वह सुख-चैन से रह सके। लेकिन उसकी खोज की दिशाएं गलत है, वह स्वयं को बदलना नहीं चाहता। उसकी चाह सदैव दूसरों को ही बदलते हुए देखने की रहती है। जबकि स्वयं में आए बदलाव या भीतर से आया बदलाव हमें समस्याओं से स्थायी समाधान दे सकता है। अपने जीवन में खुशियों और संपूर्णता के अवतरण के लिये जीवन के प्रति एक नये नजरिये को अपनाना होगा और वह है दूसरों को बदलने के बजाय स्वयं को बदले। जैसा कि टेनीसन ने कहा था- **''मेरे मित्रों ! आओ, एक नई दुनिया बसाने के लिये कभी देर नहीं होती।'' इसलिये चलिए, कुछ बड़ा सोचें और एक ऐसी दुनिया बसाएं, जिसके बारे में हमसे पहले किसी ने सपना भी न देखा हो।**

जिनकल्पः - *जीवन में जिनकल्पिक अवस्था के स्वीकार के लिए अपनी आत्मा को सर्वप्रथम सत्व भावना और तप भावना से भावित करना चाहिये।*

सूत्र भावना *में सूत्रों को इस प्रकार आत्मसात करें कि कितने सूत्र के स्वाध्याय में कितना समय लगा ? उसका ख्याल आ जाय।*

तप भावना *में इस प्रकार तप की शक्ति प्रकट करने की होती है कि तप के समय में मन आहार का विकल्प भी पैदा न हो और तप का अभिग्रह जब तक पूर्ण न हो तब तक समाधिपूर्वक तप को आगे बढ़ाने का सामर्थ्य हो।*

सागर की आन मालवा की शान पूज्य श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा.

जीवन झलक

नाम - सुशीला
जन्म दिवस - याद नही
माताश्री - श्रीमती चंपा बहन
पिता - श्री समरथमलजी
बहनें - कमलाबहन , पुष्पाबहन , कुसुमबहन
संसारी नाम - सुशीलाबहन
व्यवहारिक अभ्यास- 5 वीं
संसारी निवास - राजगढ़
चतुर्थ व्रत स्वीकार- दीक्षा 9 वर्ष की उम्र में
दीक्षा - 13 वर्ष
दीक्षा तिथि - चैत्र वदी-11
दीक्षा के समय आयु-13 वर्ष
दीक्षा स्थल - राजगढ़
बड़ी दीक्षा - शीरपुर (महा.)
दीक्षा प्रदान गुरुदेव- प.पू.गच्छाधिपति माणिक्यसागर सूरीश्वरजी महाराजा
गुरुदेव श्री - प.पू.इन्दुश्रीजी म.सा.
प्रथम शिष्य - पू.चारुधर्मा श्रीजी म.
शिष्या के नाम-विपुलप्रज्ञाश्रीजी, मतिप्रज्ञश्रीजी, अक्षयप्रज्ञाश्रीजी, सौम्यव्रताश्रीजी
कुल शिष्य, प्रशिष्य आज्ञावर्ती परिवार- 20
गृहस्थ पर्याय - 13 वर्ष
कुल संयम पर्याय - 63 वर्ष
कुल आयुष्य - 76 वर्ष
प्रथम चार्तुमास - देवास (म.प्र.)
कुल चार्तुमास - 63
प्रसिद्धि विशेष -सरल स्वभावी
विशेष धार्मिक कार्य- जिर्णोद्धारादि
सुप्रसिद्ध गुण विशेष- पठन पाठन
भाषा ज्ञान - हिन्दी, गुजराती, संस्कृत, प्राकृत
विहार यात्रा - गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश,महाराष्ट्र, बंगाल, बिहार।
जीवन का लक्ष्य - आत्म साधना
तपाराधना - 108 वर्धमान तप ओली, 18 उपवास, 8 उपवास, नवपद ओली और भी छोटे-बड़े अनेक तप

गरिमामय व्यक्तित्व की धनी
पूज्य साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा.

इस दुनिया में जब कोई इंसान पैदा होता है तो हम उसकी पहचान के लिये नामकरण कर देते है। जिन्दगी भर फिर वह उस नाम जाना जाता है लेकिन देश दुनिया में कुछ ऐसे बिरले लोग भी हुए है जो अपनी पुरानी पहचान का चोला फेंककर खुद की पहचान बनाकर संसार में विख्यात हुए, यह करना सबके बस की बात नहीं है, मैं आप से एक ऐसे ही व्यक्तित्व की चर्चा कर रहा हूं जिन्होंने अपने पूर्व नाम के अनुरुप सुशील व्यक्तित्व से जैनत्व को नई पहचान देकर वर्तमान नाम के साथ चन्द्र सी शीतलता और पूनम की चांदनी सी आभा से अपना जीवन संवारने के साथ सागर समुदाय के श्रमणीवृंदों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है, **हां। मैं पूज्य साध्वीवर्या जो आज सागर श्रमणी संघ में वरिष्ठतम है पूज्यश्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा.** की बात कर रहा हुं। तप के और ज्ञान के आलोक से तमकता चेहरा प्रशस्त सौमन्यता के साथ दर्पण सा चमकदार चेहरा। नई गुलाब सी पंखड़ियां जैसा रंग आध्यात्म के सम्मोहन को प्रकट करती अपनत्व प्रदान करनेवाली, धर्म का संदेश देती दीर्घ दृष्टि। अन्तःस्तल से अध्यात्म और धर्म की ऊर्जा प्रदान करनेवाली कोमल भावना से ग्रंथित व्यक्तित्व। आपकी दीर्घ साधना, अध्ययन,आत्मज्ञान और आत्मा का ध्यान रत्नत्रय की आभा के साथ निरतिचार निर्दोष, निःशंक उच्च चारित्र की पालना। सम्मोहन में बंध लेनेवाली जिनवाणी की उद्घोषिका। पूज्य साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. के जीवन दर्शन में सभी कुछ अनुपम उत्कृष्ट लाध्य और श्रद्धास्पद है। मैं आपश्री को बार-बार नमन करता हूं।

अनेक आत्मन् का जीवन चरित्र बदल देनेवाली धर्म नगरी, पुण्य का उत्पादन करनेवाली पवित्र भूमि, हमेशा नये-नये धर्म इतिहास लिखनेवाली पुण्य भूमि राजगढ़की धरा में जन्म लेकर अपने जीवन में जन्म से ही धर्म का बीज बोने वाली सुशीला बहन का जीवन पूज्य शशिप्रभाश्रीजी के रुप में विकसित करने में माँ का गहन योगदान रहा है। नित्य प्रति सुशीला जैन पाठशाला जाये यह माँ को अच्छा लगता था। मातुश्री चम्पाबहन का यह दृढ़ निश्चय था कि- सुशीला अगर पाठशाला नहीं जायेगी तो उस दिन घी का त्याग। पाठशाला में पढ़ानेवाले शिक्षक भी कोई साधारण व्यक्तित्व वाले नहीं थे। उच्च चरित्र, संयम पालना के पर्यायवाची बने ऐसे पूज्यपाद गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य भगवंत श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराजा एवं आचार्य श्री देवेन्द्र सूरीश्वरजी महाराजा उस समय में राजगढ़ की पाठशाला में बच्चों को धर्म शिक्षा देने का काम करते थे। उस समय पाठशाला आनेवाले अनेक बच्चे बाद में संयम ग्रहणकर जिनशासन के उद्धारक बनने के साथ जिनवाणी के प्रभावी प्रभावक बने। सुशीला बहन ने संसारी जीवन के 13 वर्षो में ही कर्मग्रंथ का अध्ययन पाठशाला में ही कर लिया था यही नहीं उस समय मुंबई के एज्यूकेशन बोर्ड जैन शिक्षा की परीक्षा आयोजित करता था देशभर के बच्चे उसमें भाग लेते थे। बोर्ड द्वारा आयोजित सभी परीक्षा में पूज्यश्री ने सफलता प्राप्त कर धर्म का गहन ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

जीव विचार, दो कर्मग्रंथ, नवतत्व वंदितु, सकल तीर्थ पंच प्रतिक्रमण आदि तो आपने 13 वर्ष की संसारी वय में ही याद कर लिये थे। सुशीला बहन ***(वर्तमान सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा.)*** के मन में इन्सान से श्रमणी और श्रमणी से पूज्य बनने के बीच, आपके जीवन का पुण्योदय है कि- शासन के अनेक चमकते सितारे बने गुरु भगवंतों, साध्वी भगवंतों का आपको सानिध्य मिला। आपको गुरुभगवंतों, साध्वी भगवंतों की जीवन शैली आचार, विचार,चारित्र,तप और सुन्दर संयम जीवन को निकट से देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, शायद यही सब बातें आपके जीवन को संयम की ओर आगे बढ़ाने में सहायक रही है।

सांसारिक मोह, माया के मध्य जीवन के छोटे पड़ाव में ही आपश्री को पूज्यपाद मालवोद्धारक आचार्य भगवंत श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा का अमृत सानिध्य राजगढ़ में ही उपधान तप के साथ मिल गया था, यही नहीं अध्यात्मक सरोवर के मानस हंस, संत शिरोमणी मालवा के जन-जन के संत मालव भूषण गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर

सूरीश्वरजी महाराजा का संसार त्याग, संयमोत्सव देखकर दीक्षा लेने का भाव मन में ओर जम गया था। बचपन से धर्म के प्रति, ईश्वर के प्रति जो अगाथ श्रद्धा थी और मातुश्री के द्वारा धर्म शिक्षा के लिये पाठशाला जाने का मार्ग दिखाना इन सब बातों ने मन ही मन संयम के त्रीव भाव जाग्रत कर दिये थे, संयम लेने का किसी ने भी नहीं बोला था पर अल्पवय में यह समझ में आ गया था कि- साधु का अर्थ है श्रेष्ठ। बस जीवन का परम उद्देश्य यानी सांसारिक मोह-माया से छुटने के लिये एक मात्र उपाय है संयम ग्रहण करना है। इसी बीच दूसरा उपधान तप इन्दौर में पूज्य नीतिसूरीजी म.सा. के गुरु भगवंत श्री मंगल विजयजी म.सा.के सानिध्य में किया।

पूज्य साध्वीवर्या के जीवन चरित्र की उज्जवल आभा का परिचय मुझे अनेक वर्षों से प्राप्त होता रहा है। आपके उच्च कोटी के चारित्र धर्म की आराधना एवं जिनशासन के विपुल ज्ञान के भंडार के साथ तेजोमय ज्ञानालोक की आभा युक्त आपके सम्यक सोच, संयम, त्याग, तपस्या की हथौड़ी छैनी से तराशे भव्य आभामंडल को देखकर नतमस्तक ही हुआ जा सकता है।

परिवार के छोटे विरोध के बीच जीवन के तेरह सालों में कई उतार-चढ़ाव देखे पर मन अब पारिवारिक रुकावटों के मध्य परमात्म भक्ति और संयम मार्ग के प्रति समर्पण और श्रद्धा भावना को कोई नहीं डिगा पाया। अंतःत पूज्यपाद गच्छाधिपति श्री माणिक्यसागरसूरीजी महाराजा के राजगढ़ में आगमन पर दीक्षा मुर्हूत चैत्र वदी-11 को निश्चित हो गया, बात यह भी चली कि दीक्षा किसके पास लेना तो पूज्यश्री ने कह दिया कि- ***मुझे तो दीक्षा लेनी है, गुरु कोई भी हो किसी के भी पास दीक्षा ले लूंगी।*** सागर समुदाय की मालवा में वरिष्ठ साध्वीश्री पूज्य इन्दुश्रीजी म.सा. को गुरु के रुप में स्वीकार कर दीक्षा हो गई। प्रथम चार्तुमास देवास होने के पूर्व बड़ी दीक्षा सिरपुर (महा.) में पूज्यपाद मालवोद्धारक आचार्य भगवंत श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. के वरद् हस्ते हुई। दीक्षा के 7 वर्ष बाद पूज्य साध्वीवर्या श्री चारुधर्मा श्रीजी म.सा. प्रथम शिष्य बनी और गुरुपद मिला। आपकी दीक्षा में भी विरोध हुआ, परिवारवाले बोलते थे कि- दीक्षा ली तो घर से चार लाश निकलेगी पर बाद में सब ठीक हुआ और फिर घरवाले बोलने लगे -अच्छा किया दीक्षा ले ली। पूज्य साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी का जीवन अनेक उत्कृष्ट शासन प्रभावक कार्यो से सागर समुदाय में जाज्वल्यमान है। जीरण, उज्जैन सुभाषनगर चौमुखी जिनालय निर्माण की प्रेरणादाता है, राजोद उपाश्रय भी आप ही की देन है। 100 से अधिक साधु-साध्वी के साथ शिखरजी तीर्थ में प्रतिष्ठा में सम्मिलित रहे।

विशिष्ट स्मरण यह है कि- एक बार पालीताना से विहार कर सोनगढ़ की विहार चल रहा था, उस समय चारों ओर घना जंगल था, कच्चा मार्ग था, विहार में रात्री हो गई, चारों ओर गहन अंधकार छा गया, कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, सिंह की खतरनाक डरावनी आवाज, हम सब भयभीत हो गये, लगता था कि- कभी भी सिंह आकर हमें खा जायेगा, धार-धार कांप रहे थे, उवसंग्गहरम्.का जाप चल रहा था, यहां तक कि हमने अंतिम आराधना भी कर ली। नवकार का जाप करते हुए भय से बैठ गये सोचा अब तो अंतिम समय आ गया है। जैसे-तैसे रात्री बीती और सुबह का प्रकाश फैलने लगा तो हमने देखा सामने ही कुछ दूरी पर गांव था, आश्चर्य हुआ रात में कुछ दिखाई नहीं दिया था सबके मन शांत हुए और गांव में पहुंचे। सागर समुदाय में मालवा की शान पूज्य साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. का जीवन अद्भूत त्याग, तपस्या और जिन शासन की खुमारी से भरा हुआ है, आपका शिष्य-प्रशिष्या का परिवार भी जिन शासन के प्रति पूर्णरुप से समर्पित जिन शासन अर्पित है। पूज्यश्री ने धर्मिष्ठों को पाप ताप हरने का गुर सिखाकर धर्म पथ पर आगे बढ़ाया है, यही कारण है कि आपश्री का संपूर्ण सागर समुदाय के श्रमण-श्रमणी संघ में गौरवपूर्ण स्थान है। सब आपश्री को आदर और सम्मान की दृष्टि से देखते है। आप दीर्घ आयुष्य प्राप्त करें, शासन का मान बढ़ाये, इसी भावना से सादर वंदन।

ध्यान के लिए आठ अंग

ध्यान करने के अभिलाषी को इन आठ अंगों को बराबर जानना चाहिये।

*1- **ध्याता**- इन्द्रियों एवं मन का निग्रह करने वाली आत्मा। 2- **ध्यान**- जिसका ध्यान करना है उसमें तल्लीनता। 3- **फ्ल**- संवर एवं निर्जरा रुप। 4- **ध्येय**- इष्ट देव आदि। 5- **यस्त**- ध्यान का स्वामी। 6- **यत्र**- ध्यान का क्षेत्र। 7- **यदा**- ध्यान का समय। 8- **यथा**- ध्यान की विधि।*

- तत्वानुशासन-37

जादू चमत्कारों के प्रदर्शन की आवश्यकता क्यों ?

भगवान एक है। उसकी प्रतिकृतियां भर अनेकों प्रकार की अनेकानेक क्षेत्रों में गतिशील हो सकती है। पर ऐसा नहीं हो सकता कि एक ही भगवान एक ही समय में विभिन्न व्यक्तियों के रुप में अवतार धारण करें। भगवान सर्वव्यापक है। जो सर्वव्यापक होगा वह अवतार धारण नहीं कर सकता। करें तो सृष्टि में जो अन्य गतिविधियाँ चल रही है, उनका सूत्र संचालन कौन करेगा ? इसलिए तत्वज्ञानियों ने भगवान को निराकार ही माना है। साकार प्रतिमाएं तो ध्यान-धारणा के लिए कल्पना के सहारे गढ़ी जाती है। यही कारण है कि अपने-अपने वर्गों और क्षेत्रों के अनुसार गढ़ी गई भगवान की अनेकानेक प्रतिमाएं देखने को मिलती है। यह मात्र ध्यान धारणा के लिए है। ध्यान का उपक्रम ही ऐसा है कि उसे किसी रुप का आश्रय लेने की आवश्यकता पड़ती है। भले ही वह सूर्य प्रकाश के रुप में हो अथवा किसी देवी देवता के रुप में। इनमें श्रद्धा का समावेश करके इस स्तर को शक्तिशाली बनाया जाता है कि जीवन्तों की तरह अपना प्रभाव प्रदर्शित कर सके।

भगवान निराकार होने से वे कार्य नहीं कर पाते जिसमें ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों की आवश्यकता होती है। ऐसे कार्य वे अपने पार्षदों से कराते है। ''पार्षद'' का अर्थ है निकट-वर्ती। जो ईश्वर की दिव्य विभूतियों को जितनी अधिक मात्रा में अपने भीतर धारण कर पाते है वे उसी मात्रा में भगवान के निकटवर्ती या कृपा पात्र माने जाते है। उन्हें संसार का संतुलन सही बनाये रखने वाले कार्य करने का निर्देशन दिया जाता है और वे उसे पूरा कर भी दिखाते हैं। इस पराक्रम में देवी शक्ति उनका साथ देती है। प्रतीत ऐसा होता है कि यह व्यक्ति विशेष की क्षमता का चमत्कार है। सांसारिक प्रयोजनों में तो व्यक्ति की प्रतिभा ही काम करती है, पर उत्कृष्टतावादी, आदर्शवादी प्रयोजनों में सामान्य व्यक्ति अपनी लोलुप्रवृत्ति के कारण न तो रस ले पाते हैं और न उसमें मन ही लगता है। फिर जोखिम उठाने की बात तो बने ही कैसे ? जो असंख्यों के लिए अनुकरणीय, अभिनन्दनीय कार्य करते हैं, उन्हें उतना कुछ सांसारिक जीवन या परिकर नहीं करने देता, उनमें विघ्न ही उपस्थित करता है। ऋषिकल्प आत्मा ही महापुरुषों की भूमिका निभाती है और वे ही इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णिम पद चिन्ह छोड़ जाती है।

किन्तु बहुधा ऐसा देखा गया है कि धूर्त स्तर के लोग अपने को भगवान घोषित करके भावुक भक्तजनों को ठगते और उनकी हजामत उल्टे उस्तरे से बनाते हैं। सामान्यों की तुलना में अपने को असामान्य बताने के लिए उन्हें सरल उपाय बाजीगरों की दृष्टिगोचर होता है। वे लोगों को कौतुक-कौतुहल दिखाते है ताकि अदूरदर्शी यह समझ सकें कि उनकी विक्रिता दिखाने की क्षमता ही कोई सिद्धि है और वह सिद्धि उन्हें भगवान के रुप में मिली है। इसलिये वे भी भगवान ही हैं।

ऐसे वेशधारी भगवानों में से इसी शताब्दी में सैकड़ों की संख्या में प्रकट हुए और मर गये। जीवित वर्ग में भगवानों की कोई कमी नहीं है। भारत में ही करीब 200 व्यक्ति अपने को भगवान कहते है या उनके अवतार बनते हैं। प्रमाण स्वरुप उनसे और तो कोई बड़ा काम नहीं बन पड़ता। जादूगरों के हथकण्डे वे अपनाते हैं। बालों में से बालू निकालते हैं। किसी को आकाश में हाथ मारकर लौंग, इलायची, मिठाई, मिश्री आदि खिलाते हैं। यदि देखा जाए तो कोई घटिया दर्जे का बाजीगर ही ऐसे हस्त कौशल दिखा सकता है। फिर भी इतनी ईमानदारी तो उसमें रहती है कि ''मैं हाथ की सफाई दिखा करके आपका मनोरंजन कर रहा हूं।'' किन्तु यह भगवान बननेवाले अपने कौतूहलों की सिद्धि एवं भगवान प्रतीति ही बताते जाते हैं। आश्चर्य यह है कि इस भरी दुनिया में ऐसे मुर्खों की भी कमी नहीं जो ऐसे नगण्य बहकावों में ही आ जाते हैं और अपना बहुत कुछ गंवा बैठते हैं।

यदि कोई मनुष्य ईश्वर है तो उसे बाढ़, दुर्भिक्ष, भूकम्प जैसे प्रकृति प्रकोपों को रोकना चाहिये। देशों और वर्गो के मध्य जो भयंकर कलह चल रहे हैं, उनका निराकरण करना चाहिये। वातावरण का संशोधन सम्भव न हो तो इतना ही करना ही चाहिये कि देश में जो भयंकर अशांति मची हुई है, अपराधों की बाढ़ आई हुई है, व्यक्ति और समाज को अपराधों की भरमार से इतना त्रास सहना पड़ रहा है। उसे दूर करें। भगवान का वचन है कि-''मैं धर्म की स्थापना और धर्म का विनाश करने के लिए अवतार धारण करता हूं।'' प्रस्तुत 200 अवतारों को ऐसा कुछ करना चाहिये ताकि उनकी उद्देश्यपूर्ति मानी जा सके। यदि ऐसा नहीं है तो अबकी बार जो भी भगवान हाथ पड़े, उसी से यह कहलवाना चाहिये कि

''मैं जादू कौतुक कौतूहल दिखाकर सिर फिरे लोगों को बहकाने आया हूं।''

हिन्दुओं की देखा-देखी यह बीमारी भारत के ईसाइयों में भी फैली है। ईसाई बहुत क्षेत्रों में प्रायः 10 व्यक्ति अपने आपको ईसा का अवतार बताते हैं और शेष 9 को झुठलाते हैं। इस प्रकार उनकी जूतम पैजार चलती रहती है, पर हिन्दू अवतार इस मामले में डरपोक है। वे अपनी चमड़ी भर बचाते है। दूसरों का विरोध करके अपनी खाल खिचवाने के झंझट में नहीं पड़ते। जो मेंढ़क जहां बैठा है, उसी के आसपास वाले मच्छरों को गटकता रहता है।

जादूगरों और अवतारों के चित्र-विचित्र जादूगरी के माया चार को देखते हुए श्री लंका के डाक्टर कोबूर ने एक लाख रुपये की रकम इसलिये जमा करके रखी थी ताकि कोई चमत्कार दिखानेवाला तथाकथित भगवान वैज्ञानिक समिति को जाँच-पड़ताल की सुविधा देते हुए यह सिद्ध करें कि प्रकृति के सामान्य नियमों से ऊपर उठकर क्या वह कोई करामातें दिखा सकता है ? यदि वह ऐसा कर दिखा दें, तो इस एक लाख रुपये की राशि को उठा लें।

इसी धंधे में माहिर और अपनी धाक जमाए हुए करामाती लोगों को- ''भगवानों'' को उपरोक्त डॉक्टरों ने प्रत्येक को पत्र लिखे पर उनमें से एक भी तैयार न हुआ। जवानी यह कहलवाया कि हमें रुपयों की जरुरत नहीं। इस पर भी डॉक्टर कोदूर यहीं घोषणाएँ छपाते रहे कि- ''यदि उनको उस धान की आवश्यकता न हो तो वे उस धन को किन्हीं जरुरतमंदों को बाँट दें और अपनी प्रतिष्ठा को बचा लें। अन्यथा मेरे जैसे लोग ठगबाजी का इल्जाम ही लगाते रहेंगे और विचारशील लोगों के मन पर अध्यात्म संबंधी विकृत स्वरुप ही छाया रहेगा।''

उस रुपये को बैंक में जमा हुए प्रायः 25 वर्ष हो गये। पर चुनौती स्वीकार करने के लिए कोई अवतारी या सिद्ध पुरुष आगे न आया।

बहकाने वाले तो भूत-पलीतों के नाम पर भी ठगते खाते हैं। विचित्र प्रकार का वेश-परिधान पहनकर गाँजे की चिलम फूंकते हुए अन्यों को सट्टा का नम्बर बताने या जुंआ, चोरी में फायदा कराने का दम मारते रहते हैं, पर जब-जब भी उन्हें परीक्षा की कसौटी पर चढ़कर परखा है, तब-तब बगलें ही झांकते रहे हैं।

अध्यात्म जितना उच्च स्तरीय है, उसे उतना ही ऊँचा रहने देना चाहिये। जादू कौतूक की दलदल में घसीट कर उसे उपहासास्पद नहीं बनाना चाहिये। भगवान बनने का दावा करनेवाले यदि बुद्ध, गाँधी जैसा महान जीवन जी सकें और लोक-मंगल के लिये अपने को खपा सकें तो भगवान कहलाने का तो नहीं पर महामानव और ऋषि-कल्प कहलाने का श्रेय तो उन्हें मिल ही सकता है। इसी में जनसाधारण की तथा अध्यात्म तत्वज्ञान की भलाई है।

उपदेश

एक महात्मा थे। किसी घर में भिक्षा मांगने गये। घर की देवी ने भिक्षा दी और हाथ जोड़कर बोली- ''महात्मा जी, कोई उपदेश दीजिये''

महात्मा ने कहा- ''आज नहीं, कल उपदेश दूंगा।''

देवी ने कहा- ''तो कल भी यहीं से भिक्षा लीजिये।''

दूसरे दिन जब महात्मा भिक्षा लेने के लिये चलने लगे तो अपने कमण्डल में कुछ गोबर भर लिया, कुछ कूड़ा, कुछ कंकर। कमण्डल को लेकर देवी के घर पहुंचे। देवी ने उस दिन बहुत अच्छी खीर बनाई थी उनके लिए। उसमें बादाम और पिस्ते डाले थे। महात्मा ने आवाज दी- ''ओऽनि तत् सत्।''

देवी खीर का कटोरा लेकर बाहर आई। महात्मा ने अपना कमण्डल आगे कर दिया। देवी उसमें खीर डालने लगी तो देखा कि उसमें गोबर और कूड़ा भरा पड़ा है। रुककर बोली- ''महाराज, यह कमण्डल तो गंदा है।''

महात्मा ने कहा- ''हां गंदा तो है। इसमें गोबर है, कूड़ा है, परन्तु अब करना क्या है ? खीर भी इसी में डाल दो।''

देवी ने कहा- ''नहीं महाराज ! इसमें डालने से तो खराब हो जायेगी। मुझे दीजिए यह कमण्डल, मैं इसे शुद्ध कर लाती हूं। महाराज बोले- ''अच्छा मां, तब डालेगी खीर, जब कूड़ा-कंकर साफ हो जाये ?''

देवी बोली- ''हां''

महात्मा बोले- यही मेरा उपदेश है। मन में जब तक चिंताओं का कूड़ा करकट और बुरे संस्कारों का गोबर भरा है, तब तक उपदेश के अमृत का लाभ नहीं होगा। उपदेश का अमृत प्राप्त करना है तो इससे पूर्व मन को शुद्ध करना चाहिये, चिंताओं को दूर कर देना चाहिए, बुरे संस्कारों को समाप्त कर देना चाहिये।

नवपद ओली जैन समाज के त्यौहार की उपयोगी जानकारियां

जैन समुदाय में प्रत्येक वर्ष दो बार नवपद ओली का महोत्सव मनाया जाता है जो नौ दिनों तक रहता है। पहला नवपद ओली चैत्र माह (मार्च/अप्रेल) के शुक्ल पक्ष के दौरान आता है और दूसरा नवपद ओली अश्विन महिने (सितंबर/अक्टूबर) के शुक्ल पक्ष में आता है। यह दोनों महीनों में शुक्ल सप्तमी और पूर्णिमा के बीच होता है। नवपद ओली नवरात्रि के त्यौहार के आसपास शुरु होती है।

अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र और सम्यक तप जैसे नौ सर्वोच्च पदों को नमन करने के लिए जैन समाज के लोग नौ दिनों तक आयंबिल तप का पालन करते है। आयंबिल एक प्रकार का उपवास है जिसमें भक्त केवल एक बार उबला हुआ अनाज खा सकते हैं। यह भोजन बिना नमक या चीनी या तेल-मसालों के तथा सरल होना चाहिये।

लगभग ग्यारह लाख वर्ष पूर्व 20 वें तीर्थकर श्रीमुनि सुव्रत स्वामी के समय राजा श्रीपाल कुष्ठरोग से पीड़ित था। उसका विवाह मयन सुन्दरी से हुआ था जो राजा को अन्य 700 कुष्ठ रोगियों के साथ कुष्ठरोग से निदान के लिये मुनिचन्द्र नाम के एक संत के पास ले गई। मुनिचन्द्र ने उन्हें सिद्धचक्र महापूजा (9 दिनों की अवधि के लिये विशेष रुप के उपवास ''ओली'' के साथ) करने के निर्देश दिया। नवपद को सिद्धचक्र भी कहा जाता है। सिद्ध चक्र एक यंत्र है जिसमें 9 सर्वोच्च पदों की स्थिति लक्षित है, जिन्हें दो समुहों में वर्गीकृत किया जाता है-

1- पंच परमेष्ठी (अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय साधु)

2- धर्म तत्व (सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र, सम्यक तप)

पहले पांच पदों को पंच परमेष्ठी के रुप में जाना जाता है और शेष चार पदों को धर्म तत्व के रुप में जाना जाता है। अंतिम चार पद या धर्म तत्व महान गुण है, जो अनुसरण करने पर मुक्ति के मार्ग पर अग्रसित करते हैं।

नवपद को सिद्धचक्र भी कहा जाता है। यह एक यंत्र है जिसमें सिद्ध को शीर्ष पर रखा गया है। अरिहंत केंद्र में और आचार्य अरिहंत के दायीं और स्थित है। उपाध्याय को नीचे की ओर अरिहंत के बाई और साधु को रखा गया है। सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र और सम्यक तप चारों कोने में ऊपरी दांए कोने से शुरु होकर फिर दक्षिणावर्त (घड़ी के अनुसार) चलते हैं।

उत्सव और अनुष्ठान:-

नवपद ओली चैत्र व अश्विन सुदी सप्तमी से प्रारंभ होकर चैत्र व अश्विन सुदी पूर्णिमा तक मनाई जाती है। नवपद ओली तप त्यौहारों को शाश्वती या स्थायी माना जाता है जिसका मतलब है कि नवपद ओली त्यौहार सभी समय में विद्यमान है अर्थात अतीत वर्तमान और भविष्य। इन दिनों के दौरान नवपद की प्रतिदिन पूजा की जाती है। नौ दिन के प्रत्येक दिन यह त्यौहार सिद्ध चक्र के नौ पदों के लिये समर्पित है। इन नौ दिनों के दौरान, भक्त आयंबिल तप का पालन करते हैं। वे दिनों में एक बार खाना खाते हैं। भोजन सरल तथा बिना मसाले, दूध, दही, घी, तेल, हरी/कच्ची सब्जियां जड़ फलों और चीनी के केवल उबला हुआ अनाज ही होता है।

देव तत्व:-

पहला दिन : अरिहंत पद :-

जिसका अर्थ है वह, जिसने घृणा, क्रोध, अहंकार और मोह जैसे आंतरिक शत्रुओं को जीत लिया हो। यह सिद्धचक्र के मध्य में स्थित है। अरिहंत प्रकृति की सर्वोच्च शक्ति है। वह एक भौतिक शरीर के साथ ब्रह्मांड में सबसे शुद्ध आत्मा होता है। अरि का अर्थ है ''शत्रु'' और हन्त का अर्थ है ''नाश'' करने वाला। यहां शत्रु आंतरिक है और ये हैं- राग (मोह) और द्वेष (घृणा)। इसलिए अरिहंत सांसारिक राग और द्वेष से मुक्त है और वीतराग के रुप में जाना जाता है। वह संपूर्ण संतुलन में एक भौतिक शरीर के साथ संसार में रहता है। वह संपूर्ण ज्ञान वाले सार्वभौमिक पर्यवेक्षक भी है जो ''केवल ज्ञान'' है। वह वास्तविक आध्यात्म का प्रचार करता है। वह चतुर्विध संघ भी स्थापित करता है। साधु (पुरुष संन्यासी-भिक्षु), साध्वी (महिला संन्यासी-नन) श्रावक (गृहस्थ अनुयायी पुरुष) और श्राविका (गृहस्थ अनुयायी महिलायें) इस संघ के घटक है जिन्हें तीर्थ भी कहा जाता है। अरिहंत तीर्थ को स्थापित करता है, इसलिये उसे तीर्थकर भी कहा जाता है।

जैन अनुयायी नवपद ओली के प्रथम दिन शुक्ला सप्तमी को ''अरिहंत पद'' की पूजा करते हैं। वे केवल उबले हुए चावल खाकर आयंबिल तप करते हैं। अरिहंत का रंग सफेद है इसलिये इस दिन आयंबिल के लिये चुना गया है अनाज

सफेद है, अर्थात चावल। वे दिन में अरिहंत की पूजा और ध्यान करते हैं।

दूसरा दिन : सिद्ध पदः- इसका अर्थ है ''मुक्त आत्मा''।

यह नवपद का दूसरा पद है और सिद्धचक्र यंत्र के शीर्ष पर स्थित होता है। यह देव तत्व में से एक के रुप में भी माना जाता है। सिद्ध प्रकृति की सर्वोच्च शक्ति है। वह बिना भौतिक शरीर के ब्रह्मांड में सबसे शुद्ध आत्मा है। मोक्ष प्राप्त करने के बाद व्यक्ति सिद्ध हो जाता है। सिद्ध भी एक वीतराग और सार्वभौमिक पर्यवेक्षक है लेकिन धर्मोपदेश नहीं करता क्योंकि उनके पास कोई भौतिक शरीर नहीं है। वह संपूर्ण संतुलन, अनन्त शांति और आनंद में रहता है। वह पूर्ण गतिहीन आराम में रहता है।

सिद्ध सब कर्मो से मुक्त है और सांसारिक आत्मा के रुप में रहने का कोई कारण नहीं है, इसलिये कोई पुनर्जन्म नहीं है। वह हमेशा ब्रह्मांड के ऊपर सिद्ध शिला पर रहता है उसके पास आठ सर्वोच्च गुण है और प्रतिकात्मक रंग लाल द्वारा दर्शाया गया है।

जैन अनुयायी नवपद ओली के दूसरे दिन शुक्ल अष्टमी को सिद्ध पद की पूजा करते हैं। वे केवल उबला हुआ गेहूं खाकर आयंबिल तप करते है। सिद्ध का रंग लाल है इसलिये आयंबिल के लिये चुना गया अनाज लाल है अर्थात गेहूं। वे दिन के दौरान सिद्धपद की पूजा और ध्यान करते हैं।

तीसरा दिन : आचार्य पद-

आध्यात्मिक गुरु। आचार्य नवपद में तीसरा पद है और यह सिद्धचक्र यंत्र में अरिहंत के दाहिनी तरफ स्थित होता है। यह गुरु तत्व में पहला है। आचार्य अरिहंत के उत्तराधिकारी है और अरिहंत द्वारा स्थापित चार संघ के नेता है। अरिहंत की अनुपस्थिति में वह संघ से संबंधित सभी मामलों में सर्वोच्च और परम निर्णय लेने का अधिकारी है। वह जैन आगम शास्त्रों की व्याख्या का परम अधिकारी भी है। वह पांच अध्यात्मिक संचालनों, ज्ञानाचार, दर्शनाचार चरित्राचार, तपाचार और वीर्याचार के लिये भिक्षुओं और ननों को पर्यवेक्षित तथा प्रेरित करता है। पहले चार आचार सिद्धचक्र के अंतिम चार पदों से संबंधित है। पांचवां वीर्याचार उत्साह और इन चारों का पालन करने की शक्ति है। आचार्य में छत्तीस गुण है और सुनहरा पीला रंग इनका प्रतीक है।

जैन अनुयायी नवपद ओली के तीसरे दिन शुक्ल नवमी को आचार्य पाद की पूजा करते हैं। वे उबले हुए चने खाकर आयंबिल करते है। आचार्य का रंग सुनहरा पीला है, इसलिए आयंबिल के लिये चुना गया अनाज पीला है अर्थात चने। इस दिन आचार्य पद की पूजा व ध्यान करते हैं।

चौथा दिन : उपाध्याय पदः-

आध्यात्मिक शिक्षक। उपाध्याय नवपद में चौथा पद है और सिद्धचक्र यंत्र में अरिहंत के निचले हिस्से में स्थिति है।

यह गुरु तत्व में दूसरा है। वह सभी जैन आगम, ग्यारह अंग और चौदह पूर्व को जानने वाला होना चाहिये। वे उनके पच्चीस गुण है। वह संघ में अकादमिक गतिविधियों के लिये जिम्मेदार है। वह भिक्षुओं और ननों को उपदेश देता है और सिखाता है। वह आचार्य के एक मंत्री के समान है। कुछ पवित्र जैन ग्रंथों में उन्हें आचार्य के राज्य में राजकुमार के रुप में चित्रित किया गया है।

इस दिन जैन अनुयायी केवल उबला हुआ मूंग खाने से आयंबिल करते हैं। उपाध्याय का रंग हरा है, इसलिये आयंबिल के लिये चुना गया अनाज हरा है अर्थात् मुंग। वे दिन के समय उपाध्याय की पूजा और ध्यान करते हैं।

पांचवां दिन : साधु पद-भिक्षु।

साधु नवपद में पांचवां पद है और सिद्धचक्र यंत्र में अरिहंत के बाई और स्थित है। वह गुरु तत्व में तीसरे स्थान पर है। उन्होंने घर छोड़ दिया है। उन्होंने स्वयं को अरिहंत द्वारा प्रचारित और आचार्य द्वारा अनुशासित पवित्र मार्ग के लिए समर्पित किया है। उन्होंने स्वयं को उस पवित्र मार्ग के लिये समर्पित कर दिया है जो मोक्ष की ओर जाता है और चार पवित्र गुणों का पालन करता है।

वह 5 अवगुणों से बचे रहने के लिये प्रतिज्ञाबद्ध होता है- 1- हिंसा 2- झूठ 3- चोरी करना। 4- यौन क्रियाएं और 5- सांसारिक संपत्ति। वह सभी परिस्थितियों में संतुलन में रहने का अभ्यास करता है और जानता है कि शांति तपस्या का सार है। वह नंगे पैर चलता है और किसी भी प्रकार के वाहनों का उपयोग नहीं करता है। वह खुद या दूसरों के लिये खाना नहीं बनाता है और गृहस्थों द्वारा प्रदान किया गया भोजन ही ग्रहण करता है। वह किसी भी रुप में धन या कोई सांसारिक संपत्ति नहीं रखता है। उसके पास सत्ताईस गुण है और काला रंग इनका प्रतीक है।

जैन अनुयायी शुक्ल एकादशी के दिन साधु पद की पूजा करते हैं। वे केवल उबला हुआ उड़द खाकर ही आयंबिल

करते है। साधु पद का प्रतीक रंग काला है, इसलिये आयंबिल के लिये चुना गया अनाज काला है- उड़द। वे दिन में साधु पद पूजा और ध्यान भी करते हैं।

धर्म तत्व : छठा दिन- सम्यक दर्शन -सही विश्वास:-

संस्कृत में सम्यक का मतलब है ''सही'' और दर्शन का मतलब ''दृश्य''। यह अरिहंत के उपदेश में विश्वास को भी दर्शाता है। सम्यक दर्शन सभी धर्मों की जड़ है। केवल सही दृष्टिकोण के साथ धर्म का पालन किया जा सकता है। यह मुक्ति प्राप्त करने के लिये जैन धर्म में तीन रत्नों में से पहला है। सम्यक दर्शन का प्रतीक रंग सफेद है। शुक्ल द्वादशी पर आयंबिल उबले हुए चावल खाकर मनाया जाता है।

सातवां दिन : सम्यक ज्ञान-सही ज्ञान:-

सम्यक ज्ञान सही ज्ञान को संदर्भित करता है। शास्त्रों के अनुसार सभी ज्ञान से किया जाना चाहिये। मुक्ति पाने के लिये यह दूसरा रत्न है। इसमें पांच उप विभाग और इक्यावन गुण है और इसका प्रतीकात्मक रंग सफेद है। शुक्ल त्रयोदशी को आयंबिल केवल उबले हुए चावल खाने से मनाया जाता है।

आठवां दिन : सम्यक चरित्र-सही आचरण:-

संस्कृत में चरित्र का मतलब ''आचरण'' है। इस प्रकार सम्यक चरित्र से तात्पर्य ''सही आचरण'' है। मोक्ष प्राप्त करने के लिये यह तीन रत्नों में से तीसरा है। इसमें सत्तर गुण है और प्रतीक रंग सफेद है। शुक्ल चतुर्दशी पर आयंबिल केवल चावल खाकर मनाया जाता है।

न वां दिन : सम्यक तप-सही तपस्या:-

सम्यक तप का मतलब सही परिप्रेक्ष्य में तपस्या है। इस संदर्भ में तपस्या का अर्थ है सांसारिक इच्छाओं से दूर रहना। सम्यक तप का उद्देश्य संतुलन में रहना है। संतुलन को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है। आंतरिक और बाहरी। व्रत, तपस्या आदि कुछ बाहरी संतुलन के प्रकार है विनम्रता, ध्यान आदि आंतरिक संतुलन के प्रकार है। सम्यक तप का प्रतीक रंग सफेद है। नवपद ओली के अंतिम दिन पूर्णिमा को आयंबिल केवल उबले हुए चावल खाने से मनाया जाता है।

जो लोग आयंबिल तप करने में असमर्थ है, वे निम्नलिखित कार्य कर सकते है:-

✻ इन 9 दिनों में जड़ खाने से बचे।

✻ जितना संभव हो सके, चौविहार (किसी भी तपस्या में सूर्य निकलने तक कुछ भी न खाना, होता न पीना, जिसे चौविहार कहते है) का पालन करें। कम से कम सप्ताह के अंत में अवश्य करें।

✻ जितने अधिक से अधिक दिन संभव हो, लोगस्स और नवकारवाली करें।

मौसम का बदलाव और नवपद का विज्ञान:-

पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है और दिन और रातों की अवधि लगातार वर्ष भर बदलती रहती है परन्तु मार्च-अप्रेल और सितंबर-अक्टूबर के दौरान दिन और रात की अवधि लगभग बराबर होती है। ये नवपद ओली के दिन है। चूंकि दिन और रात की अवधि लगभग समान होती है, इन दिनों में प्रकृति संतुलन में रहती है। इन दिनों में न तो अधिक गर्मी होती है और न ही अधिक ठंडक। ये मध्यम ऋतु है, जो ब्रह्मांड की सर्वोच्च शक्तियों की पूजा करने के लिये बिल्कुल उपयुक्त हैं।

आयंबिल तप करने के लाभ :-

चैत्र में नवपद ओली गर्मियों की शुरुआत और सर्दियों के अंत में आती है। इसी प्रकार आश्विनी में नवपद ओली सर्दियों की शुरुआत और गर्मियों के अंत में आती है। दोनों मौसम हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिये महत्वपूर्ण है। भक्ति और नवपद प्रार्थना हमें मानसिक रुप से स्वस्थ रखती है जबकि आयंबिल (उपवास) और अन्य तपस्या हमें रोगों से लड़ने के लिये उत्साहित करती है और हमें शारीरिक रुप से स्वस्थ रखती है।

नवपद ओली पूजा के दिन व तिथियां:-

दिन	तिथि	पद
1-	चैत्र/आश्विन शुक्ल सप्तमी	अरिहंत
2-	चैत्र/आश्विन शुक्ल अष्टमी	सिद्ध
3-	चैत्र/आश्विन शुक्ल नवमी	आचार्य
4-	चैत्र/आश्विन शुक्ल दशमी	उपाध्याय
5-	चैत्र/आश्विन शुक्ल एकादशी	साधु
6-	चैत्र/आश्विन शुक्ल पूर्णिमा	सम्यक दर्शन
7-	चैत्र/आश्विन शुक्ल त्रयोदशी	सम्यक ज्ञान
8-	चैत्र/आश्विन शुक्ल चतुर्दशी	सम्यक चरित्र
9-	चैत्र/आश्विन शुक्ल पूर्णिमा	सम्यक तप

✻ विद्या वह जो संसार का स्वरुप समझा दे, कर्त्तव्य में उदार बना दें, मैत्री प्रमोद और करुणा भाव से मनुष्य भव को सफल बना दें।

वर्ग पहेली क्रमांक-317

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2		3	■	4	5		6
■		■	7		■		■	
8		■		■	9		10	■
	■	11		12		■	13	14
15	16		■		■	17		
18		■	19		20		■	
■	21	22		■		■	23	
24	■		■	25		■		■
26				■	27			

बाएं से दाएं:-

1- भगवान अरनाथ के पिता का नाम (4)
4- मनुआभान टेकरी भोपाल का जैन मंदिर यहां है (4)
7- ऐसी-- बोलिए मन का आपा खोए।
औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होय॥ (2)
8- तुमसे लागी लगन ले लो अपनी श--पारस प्यारा, मेटो मेटो जो संकट हमारा (2)
9- गुजरात के माणेज ग्राम में स्थापित भगवान मुनिसुव्रत स्वामी का प्रसिद्ध तीर्थ--क्ष्मी (3)
11-देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई--- कितना बदल गया इंसान (4)
13- जब-- काम नहीं करती, तब दुआ काम आती है (2)
15-चावल से बनाया जाने वाला एक व्यंजन (3)
17-नेम नहीं पहना पाए थे राजुल को--- ला (3)
18- वरघोड़ा में लगाया जाने वाला एक नारा- वंदे वी-- (2)
19-धरणा शाह पोरवाल द्वारा निर्मित भ.ऋषभदेव का नलिनीगुल्म विमान समान तीर्थ--- र (4)
21-अष्टमंगल में से एक मंगल सिं--- (3)
23-हिमाचल से निकल कर पंजाब होते हुए बहने वाली एक नदी-- (2)
25-बीसवें तीर्थंकर श्री-- सुव्रत स्वामी जिनका लांछन कछुआ है (2)
26- सोलहवें तीर्थंकर श्री शांतिनाथ भगवान एक भव (4)
27-महाकवि जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध रचना (4)

वर्ग पहेली क्रमांक-316 का परिणाम

र	वि	■	क	दं	ब	गि	री	■
स	च	■	ल्या	■	ता	ल	न	पु
■	क्षा	प	ण	क	■	ह	■	रि
क्षा	ण	■	म	ण्डा	र	■	से	म
त्रि	■	न	न्दि	■	द्वा	र	■	ता
य	क्षा	■	र	वि	ज	■	रा	ल
कुं	■	भो	■	श्री	ब्रा	म्ही	जी	■
ड	व	ग	■	■	म्ह	■	म	रु
■	क्षा	मा	क्षा	म	ण	■	ति	ल

ऊपर से नीचे:-

2- अष्टमंगल के आठ मंगल चिन्ह में से एक (3)
3- जामनगर के निकट भ.नेमिनाथ का तीर्थ---र (4)
5- अलीराजपुर के निकट भ.पद्मप्रभु का तीर्थ (3)
6- मुहरी पार्श्वनाथ प्रभु का तीर्थ स्थल है- --ई (2)
8- भगवान धर्मनाथ का जन्म स्थल- -- (4)
9- संवत्सरी प्रतिक्रमण करते हुए-- वचन और काया से क्षमायाचना करते है (2)
10- आबू रोड़के निकट भ.आदिनाथ का तीर्थ दे--(3)
11-भगवान महावीर का एक-- नयसार का था (2)
12- तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वप्रभु की जन्म स्थली--सी (3)
14-अश्वसेन के राजदुलारे की माता का नाम-- (4)
16-घाणेराव के निकट वीर प्रभु का अनोखा तीर्थ- मुछा-- वीर (1,2)
17-आष्टा के निकट श्री मणिभद्र वीर बाबा का तीर्थ- शि-- र (2)
19-श्री मानतुंगाचार्य ने अमर काव्य भक्तामर की रचना इस शहर में की थी- धा--गरी (2)
20- बीसवें विहरमान श्री अजीतवीर्य की माता का नाम (4)
22-बारह चक्रवर्ती में से एक-- (3)
23- जैन साहित्य मै--ण को पौमाचरिता कहा गया है (3)
24- अजमेर का मूल नाम, भगवान संभवनाथ का तीर्थ, आचार्य जिनदत्त सूरि का देवलोक स्थल आज--रु (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-317

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर की ''अंतिम संख्या'' से दूसरे प्रश्नों का उत्तर प्रारंभ होगा।

1- पंच परमेष्ठिक गुण....
2- जिनालय संबंधी कितनी आशातना टालना है ?
3- ''वंदित्तु सूत्र'' में ''खामेमि सव्व जीवे'' कौन से नंबर की गाथा है ?
4- श्री ऋषभदेव के कितने पुत्रों ने एक साथ दीक्षा ली ?
5- श्री सिद्ध भगवान कितने कर्मो का क्षय करते है ?
6- एक चंद्र के परिवार में कितने ग्रह होते है ?
7- श्री स्थुलभद्रजी का नाम कितनी चौवीसी अमर रहेगा ?
8- अष्टापदजी तीर्थ में प्रतिमाजी किस क्रम में विराजमान है ?
9- साधु भगवंतों के गुणों की संख्या ?
10- लोगस्स सूत्र में कितनी गाथाएं है ?

✻ बुराईयों को निकालने के लिए दृढ़ मनोबल, विशेष रुचि तथा प्रबल पुरुषार्थ की अत्यन्त आवश्यकता है।

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)
खाता:-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)
खाता क्रं. 030001000331
IFSC Code ICIC0000300

वर्गपहेली क्रमांक-316 के परिणाम

विजेता:-

1- श्रीमती सरोज तलेरा, इन्दौर (म.प्र.) - प्रथम
2- स्नेहलता जैन, मंदसौर (म.प्र.) -द्वितीय
3- श्रीमती प्रभा जैन, देवास (म.प्र.) -तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे:-

सुधा लोढ़ा, उज्जैन, श्रीमती विद्या संघावी, बदनावर, सुरभि सराफ कोठारी, बदनावर

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-316 के परिणाम

सही उत्तर-

1-रोहिणीया चोर, 2- अर्जुनमाली, 3- दशरथ, 4- झांझरिया मुनि, 5- गौतम स्वामी, 6- वल्कलचिरी 7- सनतकुमार, 8- स्थुलीभद्रस्वामी 9-चार भानजे 10- चंद्रावत राजा।

नोट- किसी के भी उत्तर सही नहीं रहे। अंतिम उत्तर सभी का गलत रहा।

✻ अपनी आत्मा को उज्जवल करके मनुष्य मोक्ष तक जा सकता है।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ. भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-10-2021 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमश:51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

45 आगम परिचय एवं तीन लोक की भावयात्रा आचार्यश्री मृदुरत्नसागरसूरीजी ने करवाई

✻ मुनिश्री अर्हमरत्नसागरजी ने 30 दिवसीय मौन आराधना में जुड़े।

उदयपुर- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीजी म.सा. के तीसरे सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री मोक्षरत्नसागरजी मुनिश्री अर्हम्रत्न सागरजी सा.मुनिश्री पवित्ररत्नसागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 18 से 22 सितंबर तक विविध धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। 19 सितंबर को 18 अभिषेक भी हुए। पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन दिनांक 18 से 22 सितंबर तक किया गया। 9 दिवसीय आगम वाचना में 45 आगम शास्त्रों की गुप्त बातों को बतलाया गया साथ ही तीन लोक की यात्रा का त्रिदिवसीय आयोजन कर जिनालयों की भरण यात्रा करवाई गई। शाश्वत नवपद ओली आराधना भी होगी। आपश्री की महामांगलिक का आयोजन महामांगलिक 7 अक्टुबंर को हुआ। इसके साथ ही दीपावली के पूर्व 16 दिवसीय सूरी मंत्राराधना में पूज्यश्री विराजित होंगे तथा दीपावली पर एकम को महामांगलिक देंगे। मुनिश्री अर्हमरत्न सागरजी म.सा. 17 सितंबर से 16 अक्टूबर तक 30 दिवसीय मौन आराधना कर रहे है। जीरावला पार्श्वनाथ प्रभु तथा देवी श्री पद्मावती की विशिष्ट साधना इस दौरान करेंगे।

साध्वीश्री शशिप्रभाश्रीजी एवं दमिताश्रीजी की निश्रा में नवकार आराधना हुई सामुहिक धर्माराधना भी होगी

उज्जैन- श्री ऋषभदेव छगनी राम पेढ़ी पर सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. एवं साध्वीवर्या श्री दमिताश्रीजी म.सा.आदि ठाणा निश्रा मे चातुमार्सिक आराधना में चल रही है। आपश्री की की निश्रा में 17 से 25 सितंबर तक नवकार महामंत्र की आराधना का आयोजन किया गया। पूज्य साध्ववर्या के साथ पूज्य आचार्य भगवंत श्री मुक्तिसागरसूरी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में जिनागम सेवी, प.पू. गच्छा धिपति आचार्य देवश्री दौलतसागर सूरीश्वरजी म.सा. के जीवन के सौ बसंत पूर्ण होने एवं 101 वें वर्ष प्रवेश पर त्रिदिवसीय महोत्सव दिनांक 3,4,5 अक्टूबर 2021को होगा शाश्वती नवपद ओलीजी आसोज सुद 7 से 15, दिनांक 12 से 20 अक्टूबर 2021 से होगी होगी दीपावली पर्वाराधना चरम तीर्थाधिपति प्रभु श्रीमहावीर के निर्वाण कल्याणक की आराधना कार्तिक वद 14-30 दिनांक 3-4 नवंबर के बेले एवं कार्तिक सुद 1 दिनांक 5-11-2021 को प्रातः नूतन वर्ष की महामांगलिक होगी

✻ मनुष्य यदि अपनी बुद्धि का उपयोग जीवन को भली प्रकार जीने में करें तो आत्मकल्याण निश्चित है।

श्रमणी वंदनावली का आयोजन

पूना- निरुपम शिशु परिवार की साध्वीजी की तप अनुमोदनार्थ 100 श्रीसंघों में श्रमणी वंदनावली का आयोजन किया गया। पूज्यपाद सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा की अभ्यर्थना हुए इस आयोजन की प्रेरणा साध्वी श्री प्रशमरसा श्रीजी म.सा. की रही। कार्यक्रम दिनांक 24 सितंबर को सम्पन्न हुआ।

नव-अपूर्व अमर भक्त परिवार : पालीताना में उपधान तप

पालीताना- पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्नसागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार श्री नव-अपूर्व- अमर कृपापात्र बंधु त्रिपठी मुनिप्रवर श्री आगम-प्रशम-वज्ररत्नसागरजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद श्री नव - अपूर्व अमर भक्त परिवार के द्वारा शत्रुंजय महातीर्थ में विराधना से विरती की ओर ले जाने वाली श्रावक से श्रमण बनानेवाली महा मंगलकारी उपधान तपाराधना का आयोजन होने जा रहा है। तप का प्रथम मुर्हूत ज्ञानपंचमी दिनांक 9 नवंबर को है। दूसरा मुर्हूत 11 नवंबर को तथा मालारोपण 27 नवंबर को होगी।

-संपर्क सूत्र 99939483331

✻ धन, धरती तो विरासत में मिल सकती है पर सद्‌गुणों को प्राप्त करने के लिये तो पुरुषार्थ करना पड़ता है।

गुरु कृपापात्र जैनाचार्यश्रीविश्वरत्नसागरसूरीजी की निश्रा में हस्तिनापुर का छःरिपालित संघ एवं उपधान तपाराधना होगी

✻ 28 नवंबर से 5 दिसंबर हरिद्वार से हस्तनापुर का छःरिपालित संघ निकलेगा।
✻ हस्तिनापुर में श्रावक से श्रमण बनने की आपाराधना उपधान तप होगा।
✻ दिसंबर से उपधान होने की संभावना। ✻ दर्शनार्थी का निरंतर आगमन।
✻ महामांगलिक हुई। उत्तराखण्ड के सी.एम. आये। ✻ महापर्व की आराधना अच्छी हुई।
✻ दिल्ली के श्री संघों में जाने का कार्यक्रम बन रहा है। ✻ उपधान बाद मालवा आगमन होगा।

✻ आचार्स भगवंत श्रीदेवचंदसागरसूरीजी म. सा. उपाध्याय श्री वैराग्यरत्न सागरजी म.सा. आदि साधु भगवंत ठाणा -15 साथ में है ✻ सूरी मंत्राराधना की तैयारी। श्री वीरप्रभु के निर्वाण कल्याणक की आराधना। ✻ नूतन वर्ष की महामांगलिक। ✻ आगामी आयोजन तैयारी की रुपरेखा बनी। शाश्वत आसोज ओली एवं सूरी मंत्राराधना होगी।

हरिद्वार-मालवा से लगभग 1200 किलोमीटर दूर जबर्दस्त जैन शासन की प्रभावना करते हुए युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. ने अपने युवा शिष्यों को बड़ी प्रेरणा दी और गुरुदेव मालव भूषण आचार्यभगवंत श्री नवरत्नसागर सूरी जी महाराजा की भावना के अनुकूल सबको साथ लेते हुए आपने श्रमण धर्म का जोरदार पालन कर रहे है। पूज्य आचार्य भगवंत श्री देवचंदसागरसूरीजी म.सा. एवं उपाध्याय श्री वैराग्यरत्न सागरजी म. सा. के साथ गुरुनवरत्न कृपापात्र, युवा हृदय सम्राट, महा मांगलिक प्रदाता परम पूज्य आचार्य देव श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी महाराजा, प.पू.मुनिश्रीकीर्तिरत्नसागरजी म.सा., प.पू. मुनिश्रीतीर्थरत्नसागरजी म. सा., प.पू. मुनि श्री उदयरत्नसागर जी म.सा., प.पू.मुनिश्री उत्तमरत्नसाग रजी म.सा., प.पू.मुनि श्री उज्ज्वलरत्नसागरजी म. सा., प.पू.मुनि श्रीगंभीररत्नसागरजी म. सा., प.पू.मुनि प.पू. मुनि श्री रम्यरत्न सागरजी म.सा.,प.पू.मुनि श्री लब्धि रत्नसागर जी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में **छःरिपालित यात्रा संघ 25 नवंबर को हरिद्वार से प्रस्थान कर 5 दिसंबर को हस्तिनापुर पहुंचकर माल होगी। इसी बीच उपधान तप के बारे में भी योजना बन रही है। लाभार्थी से निरंतर चर्चा चल रही है। हस्तिनापुर में उपधान अभी तक नहीं हुआ है यह पहला मौका होगा जब हस्तिनापुर में उपधान होगा। दिल्ली के श्री संघों में भी विहार का कार्यक्रम बन रहा है इसके बाद संभवतः मालवा की ओर विहार होगा।** मुंबई के साथ मालवा के श्री संघों में भी आगामी चार्तुमास के लिये अभी से चर्चा आरंभ हो गई है। उपधान के दौरान आगामी कार्यक्रम के बारे में विस्तार से रुपरेखा बनेगी।

जिस प्रकार चन्दन अपने काटने वाले कुल्हाड़े को भी सुगंधित कर देता है, उसी प्रकार अपने विरोधी को भी समभाव-रुपी सुगन्ध अर्पित करता है, वही महापुरुष की सामायिक है।

वर्धमान तपोनिधि जैनाचार्य श्री चंद्ररत्नसागरसूरीजी ने सूरीमंत्राराधना की तीन पीठिका एक साथ पूर्ण की

नागेश्वर- विश्व विख्यात महातीर्थ श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ दादा के दरबार मे पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज 255 ओली आराधक श्री आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी, मुनिश्री चैत्य रत्नसागरजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्न सागरजी, मुनि श्री गोयमसागरजी म. सा. के साथ साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी, श्री कल्पज्योति श्रीजी, श्री शासनज्योति श्रीजी,श्री कल्पदद्रुमा श्रीजी, श्री चन्द्ररत्नाश्रीजी, श्री हितेषा श्रीजीश्री श्रीसुनंदिता श्रीजी, श्री अर्चिता श्रीजी म.सा.आदि ठाणा-36, श्रमण-श्रमणीवृंद की पावन निश्रा में पूज्य आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागरजी म.सा. ने सूरी मंत्राराधना की दूसरी-तीसरी चौथी पीठिका की संलग्न आराधना 47 दिन में छट के पारणा छट पारणा आयंबिल से कर एकांत में मौन आराधना के साथ पूर्ण की। पूज्यश्री की इस आराधना निमित्त दिनांक 15 से 17 सितंबर तक त्रि-दिवसीय कार्यक्रम रखा गया। दिनांक 15 सितंबर को श्री सूरिमंत्र महापूजन हुई। दिनांक 17 सितंबर को रथयात्रा के साथ तपस्वियों की शोभायात्रा निकाली गई। 16 सितंबर को पूज्यश्री के 16 बेले का पारणा तथा श्री ऋषिमंडल महापूजन का आयोजन किया गया। दिनांक 20 अक्टूबर को पूज्य आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागरसूरीजी सूरी मंत्र की 5 वीं पीठिका की आराधना में मौन विराजमान होंगे। संघ में साध्वीश्री अक्षतयशाश्रीजी ने सिद्धि तप तथा श्री रमेश कोठारी ने 36 उपवास की आराधना की।

गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी 16 दिवसीय श्री वर्धमान विद्या आराधना करेंगे

नईदिल्ली - आचार्य भगवंत श्री मृदु रत्नसागर सूरीजी महाराज के सुशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश श्री सुमतिनाथ परमात्मा के परिसर नई दिल्ली के श्रीमंडार जैन श्वेतांबर संघ में होने के बाद चार्तुमासिक आराधना अच्छी चल रही है। साध्वीवर्या अमित गुणा श्रीजी म. सा. की प्रशिष्या साध्वी श्री स्नेहझरा श्रीजी का चार्तुमास भी हो रहा है। 7 अक्टुबंर को महामांगलिक का आयोजन हुआ। चातुमार्सिक आराधना के अंतर्गत श्री पार्श्व अट्ठम तप, नवकार महामंत्र आराधना, ज्ञान पंचमी के साथ 19 अक्टूबर से 16 दिवसीय श्री वर्धमान विद्या आराधना गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म. सा. करेंगे। मालवा तथा अन्य स्थानों से धार्मिष्ठ पूज्यश्री के दर्शन वंदन करने आ रहे है।

✻ ऊंचाई पर पहुंचने के बाद भी नीचे वालों को भूलना नहीं चाहिये क्योंकि उतरने के बाद वे ही लोग मिलने वाले हैं।

निपाणी में चातुमार्सिक आराधना

पूज्य दादा गुरुदेव पू.लब्धि सूरीजी म. के समुदायवर्तीय पू. आचार्य श्री महासेनसूरीजी एवं साध्वीश्री ऋजुप्रज्ञा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में - अषाढ़सुदी-3 को शुभ मुर्हूत में विविध गंहूली से स्वागत, जयनादो के साथ मंगल प्रवेश पर जिनालय श्री चंद्रप्रभस्वामी के दर्शन करके प्रवचन पीठ पर पू.आचार्यश्री पधारे, स्वागत गीत- भाषण, बच्चों द्वारा स्वागत नृत्य, मंगल प्रवचन, अंत में गुरुपूजन-कामली व्होराने का वासक्षेप अर्पण आदि के चढ़ावे सराहनीय हुए, अंत में 100/- रुपये संघ पूजन भाविकों की ओर से हुआ, मांगलिक आयंबिल हुए।✻ दैनिक प्रवचन धर्मरत्न प्रकरण पर चालु है, श्री संघ में नवकार मंगल अनुष्ठान तथा समुह अट्ठम, आयंबिल सांकली अट्ठम-आयंबिल चालु है, ✻ चौमासी चौवदश आराधना हर रविवार को मंगल अनुष्ठान, समूह स्नात्र पूजा चालु है।✻ आसोज सुदी-11 को पूज्य भद्रंकर सूरीजी म. दीक्षातिथि पर गुणानुवाद तथा श्रावण सुदी-5 को पूज्य दादा गुरुदेव पू.लब्धिसूरीजी म. की पुण्यतिथि पर प्रभुभक्ति उत्सव अनुमोदनीय हुआ। ✻ पर्व सम्राट पर्युषण पर्व की आराधना अच्छी हुई।

जालोर में प्रतिष्ठा 10 दिसंबर को

जालोर- श्री वासुपूज्य स्वामीजी के जिनालय का जीर्णोद्धार होने के बाद पूज्य आचार्य भगवंत श्री जयानंद विजय सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में जिनालय की भव्य प्रतिष्ठा 10 दिसंबर को होगी।

पूज्यपाद सागर गच्छाधिपतिश्री ने 100 वर्ष पूर्ण कर 101 वर्ष में मंगल प्रवेश किया : सागर संघ गौरावित हुआ : हर्ष.... हर्ष.... हर्ष.... हर्ष....

✻ पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री की स्थिरता अभी कात्रज तीर्थ पूना में ही बनी रहेगी। कात्रज तीर्थ में **उपधान तप की आराधना** प्रथम प्रवेश मुर्हूत 15 अक्टूबर को दूसरा मुर्हूत 17 अक्टूबर का एवं माल 5 दिसंबर को होगी। पूज्यपाद आचार्य श्री नंदिवर्धनसागर सूरीजी, पूज्यपाद आचार्य श्री हर्षसागर सूरीजी आदि ठाणा के साथ साध्वी श्री नमिवर्षा श्रीजी आदि ठाणा की प्रेरणा से आराधना होगी। लाभार्थी श्रीमती पार्वतीबाई लालचंद्र पाणेश सोलंकी परिवार है।

✻ पालीताना महातीर्थ में 111 जिन मंदिरों में स्नात्र महोत्सव का आयोजन दिनांक 19 सितंबर को। पूज्यपाद आचार्य श्री अशोकसागर सूरीजी, पूज्यपाद आचार्य श्री चन्द्रशेखर सागरसूरीजी महाराज के साथ साध्वीवर्या श्री हेमेन्द्रश्रीजी एवं साध्वीवर्या श्री चारुदर्शा श्रीजी का मंगल मार्गदर्शन।

✻ आचार्य पद पीठ के जाप का भव्य आयोजन 23 सितंबर को होगा। मालवज्योति, पू.साध्वीश्री इन्दुश्रीजी म.सा. का परिवार। प्रेरणा साध्वी श्री पुष्पाश्रीजी म.सा.। मार्गदर्शन साध्वी श्री शशिप्रभा श्रीजी, हेमेन्द्रश्रीजी, गुणज्ञाश्रीजी, दमिताश्रीजी आदि ठाणा का। 100 उपाश्रय में होगा आयोजन।

✻ पूज्य साध्वीवर्या मातृ हृदया श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की मंगल प्रेरणा से 100 श्री संघों में श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजन का आयोजन 5 अक्टूबर को।

✻ पूज्य आचार्य श्री नयचंदसागर सूरीजी की प्रेरणा से घर-घर जिनागम का शंखनाद अधिक जानकारी- 99301-14009 से संपर्क।

✻ प्रभु भक्ति का महाशंखनाद 12 सितंबर से आरंभ हुआ। उपाध्यायश्री वैराग्यरत्नसागरजी का मार्गदर्शन प्रेरणा 100 जिनालयों में हो रहा है। प्रतिदिन सायंकाल 6.30 बजे से आरंभ।

पूना- सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवालेपूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा पूज्य आचार्य भगवंत अजात शत्रु श्री नंदी वर्धन सागरसूरीजी, पूज्य आचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी एवं आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. आदि-12 ठाणा एवं पूज्य साध्वी श्री नमिवर्षा श्रीजी की चार्तुमासिक आराधना चल रही है पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा के जन्म शताब्दी वर्ष के अंतर्गत सागर समुदाय के श्रमण भगवंतों के द्व ारा 100 दिवसीय आयंबिल आराधना की पूर्णाहुति भाद्र वदी-14 दिनांक 29 अक्टुबंर को होगी पूज्य आचार्य भगवंत अजात शत्रु श्री नंदी वर्धन सागरसूरीजी, पूज्य आचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी एवं आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. की प्रेरणा से 100 दिवसीय भद्रतप की पूर्णाहुति 5 अक्टूबर को अंतिम उपवास के साथ होगी। पूज्यपादश्री की अभ्यर्थना में संपूर्ण सागर श्रमण-श्रावक समुदाय विभिन्न तप जप क्रिया के आयोजन निरंतर कर रहे है। आपश्री 100 वर्ष पूर्ण होने तथा संयम जीवन की 82 वर्ष की कठोर चरित्र की आराधना के बेजोड़ श्रमण है शताब्दी शंखनाद परिवार के बैनर पर सब कार्यक्रम हो रहे है। पूज्यपादश्री के सम्मान की कड़ी में श्रमण श्रावक-श्राविकाओं ने बढ़चढ़कर इसमें भाग ले रहे है।

चार आचार्य भगवंतों की अमृत निश्रा में गुरुराम पावन भूमि पर उपधान तपाराधना

सूरत-गुरुराम पावन भूमि पर पाल-सूरत में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री अभयदेव सूरीजी महाराज, आचार्यदेव श्री जगतचंद्र सूरी जी महाराज, आचार्यदेव श्री मोक्षरत्न सूरीजी महाराज एवं नूतन आचार्य भगवंत श्री कल्पयशसूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में उपस्थित डेहलावाला समुदाय के साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की धर्म क्रिया उपधान तप का शुभारंभ प्रथम मुर्हूत 19 अक्टूबर को होने जा रहा है, द्वितीय मुर्हूत 21 अक्टूबर का है, माल परिधान 8 दिसबंर को होगा। यह धर्म क्रिया शुभ मंगल फाउण्डेशन की ओर से होने जा रही है।

श्री सभी जैन तीर्थ ❋ ज्योति जे.मेहता

अहा...! सफर कितना मजेदार था ! एक तो मजेदार ठंडी सुबह ! दूसरी बिना भीड़भाड़ की अकेली लंबी सुहानी सड़क, सड़क से गुजरता हुआ मेरी ही तरह अकेला रास्ता ! और सबसे ज्यादा अपने आपको एक राजकुमारी सी फील करती हुई रिक्शा में अकेली बैठी मैं...!

इसी खुली रिक्शा में आज मैं जी भरकर नजारों का आनंद ले सकती थी, हवा को महसूस कर सकती थी, अपनी जुल्फों को उड़ा सकती थी, गाना गा सकती थी और अपनी धुन में मग्न जहां चाहे ड्राइवर को कह सकती थी ले चलो ! और ड्राइवर भी ऐसे थे जो हर जगह की कहानी बताते हुए ले चले जा रहे थे ! कोई उतावली नहीं, कोई समय की पाबंदी नहीं, कहीं सामान को ढोना नहीं, कहीं किसी को रुकते हुए, पूछते हुए चलना नहीं, कहीं पसीने से लबालब होकर थकता नहीं। अपितु कहीं भी रुक जाओ, जहां जी चाहे चलो, जहां जी चाहे खड़े रहो और नजारों का लुत्फ उठाओ ! मैं तो जैसे आज महेसूस कर रही थी.... ''आज मैं उप्पर आसमा नीचे...!'' इतना लंबा सफर कभी यूं अकेले रिक्शा में मैंने तय नहीं किया था। पता था आज जेब कटेगी...! पर राजकुमारी जो महसूस कर रही थी ! तो यह तो होना ही था। सफर का आनंद उठाते हुए मैं पहुंची अपने दूसरे गंतव्य समी तीर्थ !

मूलनायक : भगवान श्री महावीर स्वामी। समी एक छोटा सा गांव है। जहां संगमरमर का विशाल जिनालय स्थित है। यह तीर्थ 300 साल पुराना है। यहां रहने और आयंबिल खाता की सुविधा है। **अंतर :** यह तीर्थ राधनपुर और शंखेश्वर से 24 और वीरगाम से 80 कि.मी. की दूरी पर है।

पता : श्री सभी जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ पउच वहिवट ट्रस्ट, पोस्ट- समी, तालुका-समी, जिला पाटण (उत्तर गुजरात)पिन-384245 संपर्क- 02733244405

भगवान की पूजा करके गभारे से बाहर निकली कि एक श्राविका ने अपने गांव में नया चेहरा मोहरा देखकर तुरन्त पूछ लिया- ''आप कहां से पधारे हैं ?'' जब उन्हें मालूम चला कि कच्छ के किसी गांव से मैं अकेले रिक्शा कर के अकेली आई हूं, तो आश्चर्य से देखने लगी और प्रश्न भी पूछे। फिर एक जैन श्राविका के आचारानुसार मुझे अपने घर पर आमंत्रित किया और नवकारसी वहीं करने के लिये कहा। मेरे मन करने पर भी कहती रही- ''घर पर सारी सुविधाएं है। आप नवकारसी करके फिर से पूजा के कपड़े पहन आगे निकल जाइए।'' मैं पूजा के वस्त्रों (पूजा के वस्त्र माने धोये हुए वे वस्त्र जिसमें खाना पानी शौच आदि क्रिया नहीं कर सकते। उन वस्त्रों को सिर्फ पूजा में ही इस्तेमाल किया जाता है) में थी और आगे और भी तीर्थ दर्शन-पूजा करना था। उनका धन्यवाद करते हुए कहा कि- मुझे निकलना होगा। बाद में वह समझ गई और मैं आगे की ओर बढ़ी।उनके साधर्मिक भक्तिभाव को देख ऐसा लगा कि अब लोगों के मानस किसी एक व्यक्ति के प्रति जो अकेले तीर्थ दर्शन के लिये निकल पड़ते है उनके लिये बदलने लगे हैं। यह एक अच्छी शुरुआत है। खुशी के आंसुओं के साथ मैंने उनकी विदा ली।

समी में सारे वर्ण-जाति के लोग रहते है। गूगल सर्च करने से पता चला कि यह ऐतिहासिक महत्व का शहर था। आसपास इसके बारे में पूछा पर कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला। आज तो खुद का वाहन था फिर कोई दिक्कत ही नहीं थी। हम गांव का चक्कर लगाने निकले। एक सुन्दर झील के पास आ पहुंचे। इस झील का भी इतिहास था। इसे पीर तालाब भी कहते थे। यहां कुछ तस्वीरें खिंची। एक समय समी ईट की दीवारों से लगभग डेढ़ मील की परिधि में चौबीस फीट ऊंची और बारह फीट चौड़ी दीवार से घिरा हुआ था। जो अब आंशिक रुप से खंडहर से घिरा हुआ है। पूर्व में एक मजबूत पत्थर और ईट का दरबार है और पश्चिम मे नूरंश पीर की इमारत है जिसमें पीर तलाव झील है।

यहां लोहाना समुदाय के देवता (कुल देवता) ''श्री क्षेत्रपाल दादा'' का सुंदर मंदिर है। जहां दूर-दूर से लोग दर्शन करने आते हैं। वहां दर्शन करके हम झीलों को देखते हुए गांव से बाहर निकल गए।

पिपलोद श्रीसंघ में नूतन उपाश्रय ''सारु-स्मृति'' आराधना भवन का संघार्पण हुआ

पिपलोद- प.पू.पद्मयरासागरजी म.सा., प.पू.गणिश्री आनंदचंद्रसागरजी म.सा., प.पू.ऋषभचंद्रसागरजी म.सा. प.पू.संभवचन्द्रसागरजी म.सा., प.पू. पावनचंद्रसागरजी म.सा.आदि की निश्रा में श्रावण वदी-2 के दिन एक शानदार चल समारोह के साथ नूतन उपाश्रय का उद्घाटन हुआ। आगमोद्धारक समुदाय के साध्वीजी भगवंत भी बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। संपूर्ण उपाश्रय का लाभ साकरेचंद झवेरी, परिवार सूरतवालों ने लिया है। प.पू. संभवचन्द्रसागरजी ने इस अवसर पर कहाकि झवेरी परिवार का सागर समुदाय में गहरा रिश्ता रहा है । प.आगमोद्धारकजी समुदाय की कृपा उन पर ऐसी बरसी है कि सुकृतों की झाड़ी लग गई है । उपाश्रय पुण्य का पावर हाऊस होता है। संवर का सौंदर्य झलकता है।

श्री गुरु बहुमान एवं पुजारी सम्मान हुआ

मुंबई- पूज्य आचार्य भगवंत श्री चन्द्राननसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री दर्शन सागर सूरीश्वरजी महाराजा के 28 वें स्वर्गारोहण जयंति पर दिनांक 24 सितंबर को पूज्यश्री के स्मरणीय गुरु गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया । महामांगलिक भी फरमाई । आदेश्वर भवन सी.पी टैंक में आयोजन हुआ। श्री ठाकुर द्वारा संघ ने आयोजन किया। इसी प्रकार पूज्यश्री की निश्रा में मुंबई के कुछ क्षेत्रों के जिन मंदिर में कार्यरत पुजारियों का बहुमान कपोल वाड़ी, गीतानगर, भायंदर वेस्ट में किया गया।

पूज्य जैनाचार्य सागरचंद्रसागरसूरीजी बोरीवली में उपधान तप करवायेंगे

मुंबई- श्री वासुपूज्यस्वायी जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ, आगमोद्धारक आराधना भवन ठाकुर विलेज कांदिवली वेस्ट में विराजमान पूज्य आचार्य भगवंत श्री सागरचंद सागरसूरीजी म.सा. के साथ साध्वीवर्या कल्पप्रज्ञाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में बोरिवली नेशनल पार्क, त्रिमूर्ति जिनालय में श्रावक से श्रमण बनने की आराधना उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। उपधान का प्रथम मुहूत 15 अक्टूबर तथा दूसरा मुहूत 17 अक्टूबर को होगा । मालारोपण 21 दिसंबर को होगी। 18 सितंबर को श्री नरेन्द्रजी मोदी के जन्म दिन पर भी आपकी निश्रा में कार्यक्रम हुवा।

बंधु बेलड़ी आचार्य भगवंतों की निश्रा : अयोध्यापुरम् तीर्थ में उपधान तपाराधना

अयोध्यापुरम्- सागर समुदाय की दर्शन की महत्ता को दर्शाता जैन जगत में ख्यातिनाम श्री अयोध्यापुरम् महातीर्थ में संस्थापक बंधुबेलड़ी आचार्य भगवंत पूज्यपाद जिनचंद्रसागरसूरीश्वरजी एवं पूज्यपाद श्री हेमचंद्र सागरसूरीजी महाराजा पंन्यास पवर श्री विरागचंद्र सागरजी म.सा. गणिवर्य श्री पद्मचन्द्रसागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की धर्म किया

पिपल्यामंडी में बालिका शिविर का आयोजन

पिपल्यामंडी-यहां चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित पूज्य साध्वीवर्या श्री अर्हमव्रताश्रीजी आदि ठाणा-3 की निश्रा में विविध धार्मिक आयोजन के साथ बालिकाओं में संस्कार विकसित करने के लिये 5 शिविर का आयोजन किया गया। तीन शिविर सितंबर माह में तथा दो शिविर अक्टूबर माह में रखे गये थे । सभी कार्यक्रम कुमठ आराधना भवन में हुए।

उपधान तप का शुभारंभ प्रथम मुर्हूत 15 अक्टूबर को होने जा रहा है, द्वितीय मुर्हूत 17 अक्टूबर का है

चिकमंगलुर में तपोत्सव

चिकमंगलुर- श्री नमिनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ के अंतर्गत पूज्य साध्वीवर्या श्री मौनज्योतिश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में चल रही चातुमार्सिक आराधना के अंतर्गत अनेक तपस्या हुई। तप पूर्ण माहौल बन गया। सिद्धि तप के साथ अनेक छोटी बड़ी तपस्या के अनुमोदनार्थ 15 से 17 सितंबर तक तपोत्सव का आयोजन किया गया। सभी तपस्वियों का बहुमान के साथ सामुहिक पारणा आयोजित हुआ।

श्रीमणी लक्ष्मीतीर्थ में उपधान तप

बड़ोदरा- बड़ोदरा-भावनगर हाईवे पर स्थित जैन तीर्थ मणी लक्ष्मी में पूज्य गणिवर्य श्री श्रुतचंदविजयजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में अठारिया एवं उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। प्रथम मुर्हूत प्रवेश 15 अक्टूबर को है, उपधान तप की माल 2 दिसंबर 2021 को होगी।

मुनिपुंगश्री पद्मकीर्तिसागरजी की 93 वीं ओलीजी की पूर्णाहुति हुई

देपालपुर- भोपावर तीर्थ प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. के साथ साध्वीवर्या श्री पूर्णयशा श्रीजी आदि ठाणा निश्रा मे चातुमार्सिक आराधना देपालपुर में चल रही है। देपालपुर के युवा चार्तुमास की कमान संभाल रहे है। वैयावच्य सेवी मुनिप्रवर श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. को 93 वीं ओली की आराधना विगत दिनों पूर्ण हुई ओली का पारणा तपोत्सव के साथ में यहां मनाया गया पूज्य मुनिश्री की वर्धमान तप ओली की आराधना के अंतर्गत 93 वीं। 100 ओली की ओर पूज्यश्री ने ओली आराधना तप की जोर एक कदम और आगे बढ़ाया है। पूज्यश्री की भावपूर्वक अनुमोदना। नवकार महामंत्र आराधना शाश्वत आसोज ओली, होगी विशिष्ट प्रवचनमाला चल रही है श्री भगवती सूत्र पर पूज्यश्री के प्रवचन चल रहे है आपश्री की निश्रा में महापर्व की आराधना जोरदार रही ।

श्री कल्याण मंदिर का प्रतिष्ठा मुर्हूत 28 अक्टूबर को दिया जायेगा

✻ छःरि पालित यात्रा संघ की तैयारी चल रही है
✻नवकार यज्ञ का आयोजन

उज्जैन -पूज्यपाद अभ्युदयसागर जी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर जी म.सा.,पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागर जी म.सा., मुनिश्री पावनमुक्ति सागर जी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में अभ्युदयपुरम् उज्जैन में भोजनशाला एवं धर्मशाला के साथ सेवक आवास मंदिर का उद्घाटन होने के साथ श्री कल्याण मंदिर की प्रतिष्ठा का मुर्हूत 28 अक्टूबर को पूज्य आचार्य भगवंत श्री मुक्तिसागरसूरीजी म.सा. के द्वारा वृहत्त धर्मसभा में दिया जायेगा। श्री कल्याण मंदिर निर्माण का कार्य बड़नगररोड़ पर तीव्र गति से चल रहा है। इस प्रसंग पर उज्जैन नगर के बाहर अनेक अतिथियों का आगमन होगा। नवकार ज्ञान शिविर 3-10-2021 2021 नवकार जाप शिविर- 5-10-2021 को उज्जैन में होगाआपकी निश्रा में 38 दिवसीय श्री नागेश्वर से श्री नाकोड़ा महातीर्थ छःरि पालित यात्रा संघ आयोजित किया जा रहा है। यह संघ 10 दिसंबर 2021को नागेश्वर तीर्थ से आरंभ होकर 2 जनवरी 2022 को राणकपुर पहुंचेगा 15 जनवरी 2022 नाकोड़ा तीर्थ पहुंचकर माल 16 जनवरी को होगी।

पालीताना में उपधान तप

पालीताना- पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी की अमृत निश्रा में सुणता भवन में उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। उपधान प्रवेश प्रथम मुर्हूत 19 सितंबर को तथा दूसरा मुर्हूत 21 सितंबर को है। माल परिधान 7 अक्टूबर को होगा।

आगर में अष्टान्हिका महोत्सव का भव्य आयोजन

आगर- श्री अजितनाथ प्रभु की छत्रछाया में हो रहे चार्तुमास के अंतर्गत पूज्य साध्वीश्री शुद्धिप्रसन्नाश्रीजी म.सा.,साध्वी श्री प्रवृद्धिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री समृद्धिश्रीजी म.सा.की निश्रा में चार्तुमास में हुई विविध धर्माराधना तप, जप के अनुमोदनार्थ भव्य अष्टान्हिका महोत्सव का आयोजन दिनांक 14 से 22 सितंबर तक किया गया। महोत्सव के अंतर्गत श्री सिद्धचक्र भक्तामर, नाकोड़ा भैरव महापूजन हवन का आयोजन हुआ साथ ही श्री शांतिस्नात्र महापूजन भी पढ़ाई गई। 18 अभिषेक का आयोजन 18 सितंबर को किया गया। तपागच्छाधिष्ठायकदेव श्री यक्षेन्द्र माणिभद्रवीर का हवन भी हुआ। पूज्यपाद गच्छाधिपति श्री दौलत सागरसूरीजी महाराजा के 101 वें जन्मदिन 5 अक्टूबर पर श्री सरस्वती महापूजन हुई। वर्धमान तप ओली का पाया दिनांक 1 अक्टूबर को डलवाया गया। आसोज ओली में बड़ी संख्या में तपस्वी जुड़े।

अनुयोगाचार्यश्री की निश्रा में पर्वाराधना

इन्दौर- श्री वीरमणी चंद्रप्रभ स्वामी जैन मंदिर परिसर ओएसिस टाउनशीप इन्दौर में चार्तुमास आराधना के लिये विराजित पूज्य अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. की अमृत निश्रा में महापर्व पर्युषण का आयोजन अच्छा रहा। दिनांक 3 से 10 सितंबर तक होनेवाले आयोजन के अंतर्गत प्रथम तीन दिवस श्रावकों के लिये कर्त्तव्य संदेश पर आधारित प्रवचन एवं अंतिम 5 दिन ग्रंथाधिराज श्री कल्पसूत्र का वाचन हुआ। 10 सितंबर को बारसा सूत्र वाचन एवं 11 सितंबर को जिन मंदिर का द्वारोद्घाटन हुआ।

चार्तुमास आराधना : याद में रखने योग्य महत्वपूर्ण तिथि

✻ आसोज सुदी-5	10 अक्टूबर 2021	रविवार	श्री यक्षेन्द्र मणिभद्र दादा का स्मृति दिन
✻ आसोज सुदी-7	12 अक्टूबर 2021	मंगलवार	आसोज नवपद ओली आरम्भ
✻ कार्तिक वदी-13	2 नवम्बर 2021	मंगलवार	धनतेरस
✻ कार्तिक वदी-14	3 नवम्बर 2021	बुधवार	काली चवदस
✻ कार्तिक वदी-30	4 नवम्बर 2021	गुरुवार	दीपावली, लक्ष्मी-शारदा महापूजन श्री वीर प्रभु निर्वाण दिवस
✻ कार्तिक सुदी- 1	5 नवम्बर 2021	शुक्रवार	नूतन वर्षारंभ, वीर निर्वाण संवत् 2548 श्री गौतमस्वामीजी केवलज्ञान
✻ कार्तिक सुदी-5	9 नवम्बर 2021	मंगलवार	ज्ञान पंचमी
✻ कार्तिक सुदी-14	18 नवम्बर 2021	गुरुवार	चौमासी चवदस, चार्तुमास संपूर्ण
✻ कार्तिक सुदी-14	19 नवम्बर 2021	शुक्रवार	श्री सिद्धाचल यात्रा आरंभ, कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य का जन्म दिन

अभिनव शत्रुंजयधाम की अंजन- प्रतिष्ठा जनवरी 2022 में होगी

रानी- श्री जैनाचार्य श्री नेमी सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवश्री सुशीलसूरीजी म.सा. के सुशिष्य आचार्यदेव श्री जिनोत्तमसूरीजी म.सा. के दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर रानी के सुशील विहारधाम अभिनव शत्रुंजय धाम का नव निर्माण किया गया है। तीर्थ का अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव 15 से 24 जनवरी 2022 तक आयोजित होगा। प्रतिष्ठा 22 जनवरी को सम्पन्न होगी। प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये 153 चढ़ावों का लाभ लेने के लिये 1 लाख 8 हजार का नकरा तैय किया गया जिसका ड्रॉ निकालकर विजेता लाभ दिया जायेगा। ड्रॉ 26 फरवरी 2021 को श्री अष्टापद तीर्थ सुशील विहार रानी में निकाले जायेंगे।

पंचाचार पंचान्हिका महोत्सव के आयोजन में संपूर्ण सागर समुदाय श्रमण-श्रमणी भगवंतों ने भाग लिया

पालीताना- सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा के 100 वर्ष पूर्ण होने के मंगलकारी शुभ अवसर पर पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी महाराज बंधु बेलड़ी आचार्य भगवंत श्री हेमचंद्र सागर सूरीश्वरजी एवं आचार्य भगवंत श्री जिनचंद्रसागर सूरीश्वरजी महाराज की प्रेरणा से संपूर्ण सागर समुदाय के लगभग 900 साधु-साध्वीजी भगवंतों की निश्रा में पंचाचार पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया। दिनांक 18 से 22 सिंतबर तक हुए आयोजन में 150 से अधिक श्री संघों ने भाग लिया।

इन्दौर में तप अनुमोदना महोत्सव मना

इन्दौर- श्री अजितनाथ महिला संघ ताल मंदिर इन्दौर पीपलीबाजार में पूज्य साध्वीश्री अर्चपूर्णाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में तप अनुमोदनार्थ पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया। दिनांक 21 से 25 सितंबर तक हुए महोत्सव में चौबीसीगान, धार्मिक प्रश्नोत्तरी, पंचकल्याणक पूजन आदि आयोजन हुए।

भीलवाड़ा में तपोत्सव का आयोजन हुआ

भीलवाड़ा- पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनेन्द्रसूरीजी म.सा. के सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री निपुणरत्नसूरीजी म. सा., मुनिश्री राजरत्नविजयजी म. सा., मुनिश्री विबुधरत्नविजयजी म.सा. ,मुनिश्री दाक्षिण्यरत्नविजयजी म.सा. एवं साध्वीवर्या श्री कीर्तिरेखा श्रीजी आदि ठाणा-16 की निश्रा में यहां श्री संघ में 25 सिद्धि तप के साथ 33- 30-16-15-9-8 उपवास की भव्य आराधना शातापूर्वक सम्पन्न हुई इस निमित्त 12 सितंबर को तपस्वियों का भव्य वरघोड़ा आयोजित किया गया इसके बाद सभी का बहुमान,स्वामी वात्सल्य हुआ।

संवत्सरी पर्व के दिन जन्मोत्सव मनाया

बड़ोद- पूज्य साध्वीवर्या श्री मुक्तिप्रिया श्रीजी म.सा. का जन्म दिन इस बार संवत्सरी महापर्व के दिन आया श्री संघ में जानकारी मिलने के बाद धर्मिष्ठों ने दान-पुण्य कर अपनी भक्ति का परिचय दिया। शंखेश्वर पूनम मंडल ने बड़ोद में सामुहिक वर्षीतप करवाने की घोषणा की। एक श्राविका बहन ने एक लाख रुपये पाठशाला के लिये दान दिये। गौशाला में गायों को भोजन दिया गया। जीवदया, पाठशाला और सधर्मिक भक्ति का लाभ भक्तों ने लिया। आपकी प्रेरणा से बड़ौद में तप का ढंका भी बजा। 3 मासक्षमण, 3 सोलभत्ता, 10 सिद्धि तप, 45 गणधर तप, 4 ने 11 उपवास किये, 16 तपस्वी, 9 उपवास के थे, 24 तपस्वी ने अट्ठाई की चंदनबाला के अट्ठम में 36 श्राविका जुड़ी। इसी प्रकार छत्तीस आयंबिल तप में 27 आराधक जुड़े।

कल्पतरु मरुधर श्री संघ में 297 वीं ओली का पारणा

मुंबई- कल्पतरु मरुधर जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ बोरिवली वेस्ट में पूज्य साध्वीवर्या वर्धमान तपोनिधि श्री कल्पबोधश्रीजी म.सा. की 100+100+97=297 वीं ओलीजी के पारणा प्रसंग पर त्रिदिवसीय तप महोत्सव का आयोजन किया गया। दिनांक 15 से 17 सितंबर तक हुए आयोजन में पूज्य आचार्य भगवंत श्री सागरचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा रही। पूज्य आचार्य श्री राजरत्न सूरीश्वरजी म.सा., आचार्य श्री विज्ञान प्रभ सूरीश्वरजी म.सा.,आचार्य श्री मलयकीर्ति सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का भी आगमन निश्रा रही। तपोत्सव के अंतर्गत पूजन, महापूजन के साथ तप महिमा एवं गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ। मोहन पेलेस के निवासियों ने लाभ लिया।

जैनाचार्य श्री अशोकसागर सूरीजी की निश्रा में त्रिदिवसीय वाचना शिविर हुआ

पालीताना- सिंह गर्जना के स्वामी सागर समुदाय के वरिष्ठआचार्य भगवंत श्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा पूज्य आचार्य श्री सौम्यचंद्र सागर सूरीजी, पूज्य आचार्य श्री विवेक चंद्रसागर सूरीजी म.सा.,आदि ठाणा की निश्रा मे सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा के 100 वर्ष पूर्ण होने के मंगलकारी शुभ अवसर परं त्रिदिवसीय वाचना शिविर का आयोजन 18 से 20 सितंबर तक किया गया। स्वाध्याय हॉल पालीताना में हुए शिविर में सैकड़ों की संख्या में साधु-साध्वीजी की उपस्थिति रही। महापर्व की भव्य आराधना में देशभर के श्रावक-श्राविका जुड़े। पूज्यश्री की निश्रा में महापर्व की आराधना के लिये गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि अनेक प्रांतों से आराधकों का आगमन हुआ।

अकोला में पंचान्हिका महोत्सव मना

अकोला- श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर में विराजित पूज्य आचार्य भगवंत श्री गुणचंद्रसागर सूरीजी म.सा. मुनिश्री जिनेशचंदसागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री दर्शन सागरसूरीजी महाराजा की 28 वीं पुण्यतिथि निमित्त पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया। दिनांक 23 से 27 सितंबर तक आयोजित महोत्सव में श्री पार्श्व पंच कल्याणक पूजन, गुणानुवाद सभा, श्री विजयवृहत्त महापूजन, श्री शांति जिन महापूजन सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई।

श्री पार्श्वमणि तीर्थ में अट्ठम आराधना

आदोनी- आदोनी से लगभग 18 कि.मी. दूर श्री पार्श्वनाथ प्रभु के सुप्रसिद्ध तीर्थ में पोष दशमी प्रभु श्री पार्श्वनाथ दादा के जन्म कल्याणक पर अट्ठम तपाराधना का आयोजन किया जा रहा है। उत्तर पारणा 27 दिसंबर को होगा। अट्ठम 28 से 30 दिसंबर को होंगे। तप का पारणा 31 दिसंबर को होगा।

दक्षिण नाकोड़ा तीर्थ में मेला लगा

अरसीकेरे- दक्षिण में नाकोड़ा तीर्थ से मशहूर अरसीकेरे में दिनांक 20 सितंबर को पूनम पर भव्य मेला लगा। अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के आगे दर्शन और प्रेरणा से भैरव महापूजन का आयोजन 108 फलों से पूजन, 108 दीपक की आरती आदि की गई।

सूरत की पावनभूमि अनेक आयोजन : पुष्प से सुगंधित हो उठी

सूरत- धर्मनगरी सूरत में इन दिनों धर्माराधना की बाढ़-सी आई हुई है। प.पू. आगमोद्धारक श्री समुदाय के श्रमण भगवंत 5-5 स्थानों पर चार्तुमास कर रहे है गोपीपूरा स्थित प.पू. प्रवर्तक मुनि प्रवर श्री कुलरत्नसागरजी म.सा. की शुभ निश्रा में आगमोद्धारकश्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा की गुणानुवाद सभा का आयोजन रंगारंग रहा, मुनिश्री मनकचंद्रसागरजी म.सा. ने भी प्रवचन के जरिए समा बांधा। बच्चों की शासन-शोभा-यात्रा भी निकाली गई। पू.पर्याय स्थविर श्री पद्मयश सागरजी एवं गणिश्रीआनंदचंद सागर जी म.सा. की निश्रा में वेसू में धूम मची है। तपस्या का अंबार लगा हुआ है। पूज्य गणिवर्य श्री आनंदचंद्रसागरजी म.सा.आदि की निश्रा में पंच रविवारीय प्रवचनमाला सहित नित्य प्रवचनों में श्रोताओं की भीड़ उमड़ रही है। रात्रि प्रवचन में पू. मनकचंद्रसागरजी म.सा. मनमोह रहे है। सिद्धाचल की पूर्णाहुति भी सानंद हुई। भावयात्रा भी सिद्धाचल तीर्थ की रंगारंग रही। संयमनिष्ठमुनिश्री ऋषभ चंद्रसागरजी की निश्रा में वराछा रोड़ मातावाड़ी संघ में 68 अक्षरीय श्री नवकार महामंत्र का अनुष्ठान भावुकों के हृदय को स्पर्श कर गया। इसके अतिरिक्त पू.सुप्रसन्ना श्रीजी (केशरसूरि समुदाय) की 98 वीं ओली का पारणा, श्रावकरत्न श्री जयंतिभाई श्री गुणानुवाद सभा हुई। धर्मग्रंथ श्रुतसंविभाग एवं दशाश्रुतस्कंध का विमोचन, मासक्षमण पारणा समारोह, युवामुनिओं का मिलन, स्टॉक एक्सचेंज में जैन प्रवचन रीवर हाईट्स, मकनजी पार्क, लवकुश एपार्टमेंट में पूजन, प्रवचन के आयोजन सफलतापूर्ण रहे है।

गुन्देचा गार्डन जैन श्री संघ में सागर श्रमण भगवंतों ने दर्शन ज्ञान चारित्र तप की भव्य प्रभावना की

मुंबई- गुन्देचा गार्डन जैन संघ लालबाग मुंबई में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान त्यागी मुनिपुंग श्री देवप्रभसागरजी म.सा., पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा. के साथ मुनिश्री विनीतसागरजी, मुनिश्री विनम्र सागरजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में धर्म की बहार आई हुई है। 45 आगम वाचन का रस लेने के लिये प्रतिदिन 450 धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही वहीं परमात्म भक्ति अनुष्ठान के साथ जैन नाटकों की ऐतिहासिक प्रस्तुति ने प्राचीनकाल को प्रत्यक्ष अनुभव किया। शक्रस्तव महाभिषेक में धर्मिष्ठों ने बढ़चढ़कर भाग लिया वहीं तपाराधना में 4 मासक्षमण 11 उपवास में 3 आराधक, 9 उपवास में 7 आराधक तथा अट्ठाई में 115 आराधक रहे। 2-3 उपवास में 45 आराधक रहे। 45 आगम आयंबिल में 56 आयंबिल हुए। 64 प्रहरी पौषध में 14 धर्मिष्ठ तथा संवत्सरी पर 175 आराधकों ने पौषध किया।

महाशतावधान का महाआयोजन

चैन्नई- किलपार्क जैन श्री संघ में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित पूज्य आचार्य भगवंत वर्धमान तपोनिधि श्री नयचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा., मुनिश्री अजितचंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में यहां महाशतावधान पर पर्व प्रसंग का आयोजन 19 सितंबर को आमंत्रित अतिथियों की उपस्थिति में किया गया। पूर्व प्रयोग के बाद दिनांक 26 सितंबर को एस.सी.शाह भवन में मुनिश्री अजितचंद्रसागरजी म.सा. ने महाशताबधान की जोरदार प्रस्तुति की। अनेक विशिष्ट आमंत्रित अतिथियों के मध्य हुए कार्यक्रम में पूज्यश्री के द्वारा दिये गये प्रश्नोत्तर को सुनकर सब आश्चर्यचकित हो गये। मानसिक शक्ति का अद्भूत प्रयोग से कई कठिन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के साथ बड़ी-बड़ी परीक्षाओं को भी पास किया जा सकता है इसलिये मानसिक एकाग्रता का सुन्दर प्रयोग है महाशतावधान।

सूरत में भव्य उपधान तप महोत्सव

सूरत - श्री अयोध्यापुरम् महातीर्थ में संस्थापक बंधुबेलड़ी आचार्य भगवंत पूज्यपाद जिनचंद्रसागर सूरीश्वरजी एवं पूज्यपाद श्री हेमचंद्र सागर सूरीजी महाराजा की आज्ञा से पूज्य गणिश्रीआनंदचंद सागर जी म.सा. ऋषभचंद्रसागरजी म.सा. पू. संभव चंद्र सागरजी म.सा. पू. मनकचंद्र सागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की धर्म क्रिया उपधान तप का शुभारंभ प्रथम मुर्हूत 24 अक्टूबर को होने जा रहा है, द्वितीय मुर्हूत 26 अक्टूबर का है, उपधान श्री मगदल्ला जैन तीर्थ, सूरत में होगा।

हमारे तीज-त्यौहार

1-	आसोज सुदी-5	रविवार	10/10/2021	यक्षेन्द्रश्री मणिभद्रवीरजी का स्मृति दिन, पूजन हवन
2-	आसोज सुदी-7	मंगलवार	12/10/2021	शाश्वती नवपद आसोज ओली आरंभ
3-	कार्तिक वदी-4 (प्रथम)	रविवार	24/10/2021	रोहिणी

पुष्प नक्षत्र :–

आरम्भः- आसोज वदी-10, शुक्रवार, दिनांक 1/10/2021, समय-रात्री-01.33 बजे

समाप्तः- आसोज वदी-11, शनिवार, दिनांक 2/10/2021, समय-रात्री-02.58 बजे

पंचक :–

आरम्भः- आसोज सुदी-10, शुक्रवार, दिनांक 15/10/2021, समय-रात्री-09.18 बजे

समाप्तः- आसोज सुदी-15, बुधवार, दिनांक 20/10/2021, समय-रात्री-02.30 बजे

पुष्प नक्षत्र :–

आरम्भः- कार्तिक वदी-7, गुरुवार, दिनांक 28/10/2021, समय-सुबह-09.41 बजे

समाप्तः- कार्तिक वदी-8, शुक्रवार, दिनांक 29/10/2021, समय-सुबह-11.38 बजे

बड़ी सादड़ी में तप का ढंका बजा

बड़ी सादड़ी- मालव विभूषिक सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या पूज्य श्री हेमप्रभा श्रीजी म.सा. की शिष्या-प्रशिष्या साध्वीवर्या श्री भव्य पूर्णा श्रीजी, पूज्य श्रेयपूर्णा श्रीजी, पूज्य काव्यपूर्णा श्रीजी आदि ठाणा की पावन निश्रा में यहां चातुमार्सिक आराधना के अंतर्गत श्री संघ में हुई मासक्षयणा, सिद्धितप, 11,9,8 उपवास की आराधना निमित्त पंचान्हिका महोत्सव का भव्य आयोजन दिनांक 10 से 13 सितंबर तक आयोजित किया गया। चैत्य परिपाटी, श्री पार्श्व पंच कल्याणक, भक्तामर महापूजन के साथ परमात्मा की भव्य रथयात्रा, तपस्वियों का वरघोड़ा निकाला गया। 14 सितंबर को परमात्मा के 18 अभिषेक का आयोजन किया गया।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

दीपावली विशेषांक

नवम्बर 2021- आगमोद्धारक का "दीपावली विशेषांक" प्रकाशित होगा। आपकी रचनाएं भेजें।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

उत्तराखण्ड राज्य के मणि मुकुट समान
पावन पवित्र माँ गंगा के तट स्थल, अनंत श्रद्धा के केन्द्र स्वरुप
आदिनाथ प्रभु के चरण स्पर्शना से पवित्र बनी

देवभूमि हरिद्वार नगरी से

सैकड़ो वर्षो के बाद, श्री शांतिनाथ प्रभु की कल्याणक भूमि,
जिस भूमि पर 400 दिन बाद तीर्थंकर युगादिदेव श्री ऋषभदेव प्रभु को श्रेयांस कुमार द्वारा पारणा कराया गया

ऐसी अंतराय कर्म निवारक भूमि **हस्तिनापुर महातीर्थ का**

छःरि पालित यात्रा संघ

संघ प्रयाण : 25 नवम्बर 2021, गुरुवार

पुण्य साम्राज्य

मोपावर तीर्थोद्धारक, जीरावला तीर्थ मार्गदर्शक, चारित्र चुड़ामणी, मालव भूषण
प.पू. आचार्य देव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा

पावनकारी निश्रा

गुरुनवरत्न कृपाप्राप्त, युवाहृदय सम्राट, जिनशासन हितचिंतक, सूरिमंत्र आराधक
महामांगलिक प्रदाता, प्रखर प्रवचनकार, आश्रितगण हितचिंतक
प.पू. आचार्य देव श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा

आधार संघपति	सह-आधार संघपति	संघपति
₹ 5,55,555	₹ 3,33,333	₹ 1,08,000

कोई पूण्यशाली संघपति बनना चाहता हो तो सम्पर्क करें - 9425736000, 9752636000

वर्ष 26 | भादवा-आसोज | अक्टूबर-2021 | अंक 10 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

बुक पोस्ट

प्रति,
श्रीमान् ....

स्टाम्प टिकिट

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-
डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड़, इन्दौर से मुद्रित । फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897